प्रथम प्रश्न–पत्र
खण्ड (अ)
इकाई – 1 (प्राचीन भारत)

प्रयासKSG
An Institute for MPPSC Examination

प्राचीन भारत का इतिहास

- प्रागैतिहासिक काल
- सिन्धु घाटी सभ्यता
- वैदिक सभ्यता
- छठी शताब्दी ईसा पूर्व भारत
- प्राचीन भारत में धार्मिक आन्दोलन
- मौर्य साम्राज्य
- मौर्योत्तर काल
- गुप्त साम्राज्य
- गुप्तोत्तर काल
- संगम वंश

प्रयासKSG
An Institute for MPPSC Examination

प्रागैतिहासिक काल एवं सिन्धुघाटी सभ्यता

3 अंकों के प्रश्नोत्तर

1. नर्मदा मानव –

- भारत में सर्वप्रथम नर्मदा घाटी के किनारे बसे 'हथनोरा' गाँव से मानव उत्पत्ति की जानकारी मिली
- डाक्टर सोनकिया द्वारा 5 दिसंबर 1982 की नर्मदा मानव की 5 लाख साल पुराणी खोपड़ी की खोज की गयी
- सोनकिया द्वारा बताया गया कि आदि मानव भारत में जन्मा है न कि अफ्रीका में जिसका आंकलन इ.एस.आर. (इलेक्ट्रोनि स्पिन रेसोलेंस) पद्धति से किया गया

2. भीमबेटिका –

- भीमबेटिका की खोज 1957 – 58 में 'डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर' द्वारा की गयी
- यह एक पुरापाषाणिक आवासीय पुरास्थल है जो मध्यप्रदेश के रायसेन जिले में अवस्थित है
- यह आदि मानव द्वारा बनाये गए शैलचित्रों एवं शैलाश्रयों के लिए प्रसिद्ध है

3. आदमगढ़ –

- आदमगढ़ मध्यप्रदेश के होशंगाबाद जिले में अवस्थित आदमगढ़ पहाड़ी से पाषाण तथा मध्यपाषण काल के शैल चित्र प्राप्त हुए हैं
- शैलाश्रयों में पशु जैसे वृषभ, गज, अश्वा, सिंह, गाय आदि तथा मानव कृतियाँ नर्तक, वादक एवं टोंटीदार पत्रों का अंकन है
- चित्रों को खनिज रंगों जैसे हेमेटाईट, चूना, गेरू आदि से उकेरा गया है

An Institute for MPPSC Examination

4. डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर –

- डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर भारत के एक प्रमुख पुरातत्वविद थे
- उन्होंने रायसेन जिले में अवस्थित भीमबेटिका के प्राचीन शिलाचित्रों का अन्वेषण किया
- सन 1975 में भारत सरकार ने उन्हें पद्मश्री से सम्मानित किया

5. मध्यप्रदेश में ताम्र पाषण स्थल –

- कायथा – यह पहली ताम्रपाषाण बस्ती थी
- एरण – सागर जिले में स्थित ताम्र बस्ती जहाँ से तांबे की कुल्हाड़ियाँ एवं मृदभांड प्राप्त हुए हैं
- नवदाटोली –यह महेश्वर में नर्मदा तट पर स्थित है जहाँ झोपड़ीनुमा मिटटी के घरों के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जो चौकोर या आयताकार होते थे

6. आहार संस्कृति -

- राजस्थान के अहार नामक स्थान पर पायी गयी संस्कृति जिसे बनास संस्कृति के नाम से जाना जाता है क्योंकि यह बनास नदी के किनारे बसा हुआ था।
- यह सिन्धु घाटी सभ्यता के समीपवर्ती और समकालीन है
- ज्यादातर तांबे के औजार प्राप्त
- काल 3000 ई.पू. – 1500 ई.पू.

7. दयाराम साहनी-

- राय बहादुर दयाराम साहनी एक भारतीय पुरातत्ववेता थे जिन्होंने सन 1921-22 में हड़प्पा की खुदाई का नेतृत्व किया जो सिन्धु घटी सभ्यता का प्रमुख स्थल है
- साहनी ऐसे प्रथम भारतीय हैं जिन्हें सन 1931 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का महानिदेशक नियुक्त किया गया

8. अलेग्जेंडर कनिंघम-

- इनको भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग का जनक माना जाता है।
- अभिलेखों एवम सिक्कों की खोज के साथ साथ सतना में भरहुत स्तूप की खोज की

9. लोथल-

- यह स्थल एक प्रमुख बंदरगाह है, इसे 'सिन्धु घटी सभ्यता का मेनचेस्टर' कहा जाता है
- यह गुजरात के अहमदाबाद जिले क निकट 'भोगवा नदी' के किनारे स्थित है
- इसकी खोज एस आर राव ने 1955 ई. में की थी

10.मोहनजोदड़ो-

- सिन्धी भाषा में इसका अर्थ मृतकों का टीला है जो सिंध (पाकिस्तान) के लरकाना जिले में सिन्धु नदी के तट पर स्थित है
- सर्वप्रथम इसकी खोज 'राखलदास बनर्जी' ने 1922 ईस्वी में की थी
- यहाँ से बृहत् स्नानागार एवं कांसे की नर्तकी की मूर्ति पाई गयी है जो मोम विधि से बनी है

11.धौलावीरा-

- यह गुजरात के कच्छ जिले के भचाऊ नामक स्थान पर स्थित है,है जिसकी खोज 1967 ईस्वी में जे.पी. जोशी ने की थी |
- धौलावीरा से हड़प्पा सभ्यता का एक मात्र स्टेडियम मिला

12.हड़प्पा-

- इसके अवशेषों की खोज सर्वप्रथम 1921 ई. दयाराम साहनी द्वारा रावी नदी के तट पर मोंटगोमरी जिले (पाकिस्तान)में की गयी
- हड़प्पा से अन्नागार, स्त्री के गर्भ से निकला हुआ पौधा (उर्वरता की देवी), गेहूं और जौ के दाने एवं स्वस्तिक और चक्र के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं

13.कालीबंगा-

- इसकी खोज 1951 ईस्वी में अमलानंद घोष द्वारा राजस्थान के गंगा नगर जिले में घग्घर नदी के तट पर की गयी
- कालीबंगा – काले रंग की चूड़ियाँ
- यहाँ से जुते हुए खेत का साक्ष्य मिला है

14.बूस्त्रोफेडान-

- सिन्धु घाटी सभ्यता की एक भाव चित्रात्मक सिन्धु लिपि है जोदायीं ओर से बायीं और बांयीं से दायीं ओर लिखी जाती है
- इसके प्रत्येक अक्षर किसी ध्वनि भाव या वस्तु का सूचक है

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

- इस लिपि पर सबसे ज्यादा Uआकर के चिन्ह तथा मछली के चिन्ह का सर्वाधिक प्रयोग मिलता है

15.सिन्डन -

- सर्वप्रथम कपास उत्पादन का श्रेय हड़प्पावासिओं को दिया जाता है
- यूनानियों द्वारा इसे सिन्डन नाम दिया गया

16.आद्य इतिहास –

- जिस काल में पुरातात्विक साक्ष्य के साथ ही साहित्यिक साक्ष्य भी प्राप्त होते हैं किन्तु साहित्यिक साक्ष्य को पढ़ा न जा सका हो उसे आद्य ऐतिहासिक काल कहते हैं
- भारतीय इतिहास में 3000 ई.पू. से 600 ई.पू. तक का काल
- उदा. हड़प्पा सभ्यता

17.पेबुल संस्कृति –

- पत्थर के वे टुकड़े जिनके किनारे पानी के बहाव में रगड़ खा कर चिकने एवं सपाट हो जाते हैं 'पेबुल' कहलाते हैं
- सर्वप्रथम पाकिस्तान में पंजाब स्थित सोहन नदी घटी से प्राप्त हुए
- डी.एन. वाडिया से सर्वप्रथम इन उपकरणों की खोज की

18.मेहरगढ़ –

- पाकिस्तान के बलूचिस्तान प्रान्त से प्राप्त एक नवपाषाणकालीन स्थल
- कृषि के प्रारंभिक साक्ष्य यहाँ से प्राप्त
- पशुपालन के साक्ष्य भी प्राप्त हुए

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

19.बुर्जहोम –

- कश्मीर स्थित नवपाषाणकालीन महत्वपूर्ण स्थल
- गर्त निवास, पशुपालन, कृषि कार्य अस्थि उपकरण के साक्ष्य
- मालिक को कुत्ते के साथ दफनाये जाने के साक्ष्य

20.कायथा संस्कृति –

- वी एस वकंकर द्वारा कायथा संस्कृति की खोज
- यह हड़प्पा संस्कृत की कनिष्ठ समकालीन थी
- मध्य प्रदेश के उज्जैन जिले की प्रमुख पुरातात्विक स्थल

21.नवदाटोली –

- मध्य प्रदेश स्थित मालवा संस्कृति का प्रमुख स्थल
- एच डी संकलिया द्वारा उत्खनित ताम्रपाषाण कालीन प्रमुख स्थल
- यहाँ से विभिन्न प्रकार के फसलों के साक्ष्य प्राप्त हुए

22.सिन्धु घटी सभ्यता की प्रज़तियां –

- भूमध्य सागरीय
- प्रोटो ऑस्ट्रेलायोड
- मंगोलोयेड
- अल्पायिन

23.दिलमन –

- ये वर्तमान बहरीन का प्राचीन नाम है
- इसका उल्लेख मेसोपोटामिया के सारगौन अभिलेख से प्राप्त होता है
- दिलमन निवासी सिन्धु घाटी सभ्यता एवं सुमेरियन सभ्यता के व्यापार में मध्यस्थ की भूमिका निभाते थे

24.हड़प्पा सभ्यता में निर्यात की प्रमुख मदें –

- हांथी दांत
- मोती अनाज एवं कपास
- शीप की बनी वस्तुएं

25.पाशुपति शिव –

- मोहनजोदड़ो से प्राप्त एक मुहर में योगी की मुद्रा में चित्रित व्यक्ति
- चित्र में बायीं ओर बाघ और हाथी, दायीं ओर भैंसा और गेंडा की आकृति है
- जॉन मार्शल ने इसे पाशुपति शिव कहा

26.टेराकोटा फिगर्स –

- भारत में मूर्तिपूजा के प्रारंभिक साक्ष्य के रूप में मौजूद हड़प्पाकालीन मृणमूर्तियाँ
- निर्माण में चिकोटी विधि का प्रयोग
- खिलौने एवं पूज्य प्रतिमाओं के रूप में प्रयोग

27.लास्ट वैक्स तकनीक –

- हड़प्पा काल में तांबे, कांसे जैसी धात्विक मूर्तियाँ बनाने में प्रयुक्त विधि
- सर्वप्रथम मोम द्वारा प्रारंभिक आकृति ढांचा तैयार उसके उपर मिट्टी की परत चढ़ाई जाती थी, मिटटी के सुख जाने पर उससे मोम को बाहर निकल लिया जाता था और और इस रिक्त स्थान की धातु के मध्यम से भर कर मूर्तियों का निर्माण किया जाता था
- प्रमुख उदहारण –कांसे की नर्तकी की मूर्ति

28.चन्हुदड़ो–

- चन्हूदड़ो दक्षिण-पूर्व सिंध प्रान्त (पाकिस्तान) में स्थित है
- सर्वप्रथम इसकी खोज 'एन.गोपाल मजूमदार एवं अर्नेस्ट मैके' ने की थी
- चन्हूदड़ो से वक्राकार ईंटे, कंघा, लिपिस्टिक एवं मनके आदि प्राप्त हुए हैं

29.मांडा –

- चिनाब नदी के दाहिने तट पर स्थित मांडा हड़प्पाकालीन सभ्यता का सबसे उत्तरी स्थल है
- इसकी खोज 'जगपति जोशी एवं मधुबाला' द्वारा की गयी
- यह पीरपंजाल पर्वत श्रृंखला की तराई में स्थित है

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

30.सुत्कागेंडोर –

- सुत्कागेंडोर दक्षिण बलूचिस्तान में 'दाश्त' नदी के किनारे स्थित है
- यह हड़प्पा संस्कृति का सबसे पश्चिमी स्थल है
- इसकी खोज 1927 ई. में 'ऑरेल स्टाइन' ने की थी

31.दैमाबाद –

- दैमाबाद 'प्रवरा नदी' के तट पर महाराष्ट्र के 'अहमदनगर' जिले में स्थित है
- यह हड़प्पा काल का सुदूर दक्षिणी स्थल है
- दैमाबाद की खोज 'बी.पी. बोपर्दिकर' द्वारा की गयी

32.आलमगीरपुर –

- आलमगीरपुर सिंधुघाटी सभ्यता का सबसे पूर्वी स्थल है
- यह उत्तरप्रदेश के 'मेरठ' में 'हिण्डन नदी' के किनारे स्थित हैं
- इस स्थल को परसराम का खेड़ा भी कहा जाता है

33.मेलुहा -

- सुमेरियन/मेसोपोटामियाई सभ्यता के अभिलेखों में हड़प्पायी सभ्यता के लोगों के लिए प्रयुक्त शब्द
- उनके अनुसार 'मेलुहा' के जहाज उनकी राजधानी में ठहरते थे और व्यापारिक गतिविधियों को संचालित करते थे
- उनसे खरीद की प्रमुख मदें हांथी दांत, मोती और कपास थे

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

34. हड़प्पा सभ्यता की नगर निर्माण योजना पर चर्चा कीजिये?

उत्तर - सिन्धु घटी सभ्यता की प्रमुख विशेषता इसकी नगर निर्माण योजना है

- इसकी सबसे बड़ी विशेषता पर्यावरण के अनुकूल नगर नियोजन तथा जल निकास प्रणाली
- भवन प्रायः दो मंजिला होते थे और भवनों में पक्की ईंटों का प्रयोग किया जाता था
- स्तम्भ वर्गाकार होते थे और फर्श कच्चा होता था
- नगरों में भवन जाल की तरह विन्यस्त थे अर्थात सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थी तथा नगर अनेक आयताकार खण्डों में विभक्त हो जाता था ।सड़कें प्रायः कच्ची होती थीं
- उत्तम जल प्रबंधन एवं साफ़ सफाई पर विशेष बल दिया गया । सड़कों के किनारे 'ग्रिड' पद्धति पर नालियों की व्यवस्था थी और जगह-जगह ढक्कन युक्त मेन होल बने होते थे
- यहाँ लगभग सभी नगर दो भागों में विभक्त था, पश्चिमी टीला ऊंचा था जहाँ शासक वर्ग एवं महत्वपूर्ण सार्वजनिक एवं प्रशासनिक भवन स्थित थे एवं यहचारों ओर एक रक्षा प्राचीर से घिरा था ।निचले टीले (पूर्वी) में सामान्य वर्ग जैसे व्यापारी, श्रमिक इत्यादि निवास करते थे
- मोहनजोदड़ो से विशाल स्नानागार प्राप्त हुआ है ।इसकी सबसे बड़ी इमारत अन्नकोठार है
- ईंटो की बड़ी बड़ी इमारतों को देखकर शासकों के प्रतापी होने का प्रमाण मिलता है
- घरों के दरवाजे और खिड़कियाँ मुख्य सड़क की ओर न खुलकर पीछे की ओर खुलते थे

35. सिन्धु घाटी सभ्यता के आर्थिक क्रियाकलापों का उल्लेख करें ?

उत्तर. सिन्धु सभ्यता की अर्थव्यवस्था कृषि प्रधान थी, किन्तु व्यापार तथा पशुपालन भी प्रचलन में था

- सिन्धु सभ्यता में कृषि संगठित रूप से की जाती थी तथा उर्वरता का प्रमुख कारण सिन्धु नदी में आने वाली प्रतिवर्ष बाढ़ थी ।
- सिन्धु सभ्यता के लोग गेहूं, जौ, राई, मटर तथा ज्वार आदि अनाज पैदा करते थे
- सबसे पहले 'सिन्डन' (कपास)उत्पादन का श्रेय सिन्धु सभ्यता के लोगों को है
- पत्थर एवं कांसे के कृषि उपकरणों के प्रयोग किये जाते थे
- कृषि अधिशेष अन्नागारों में सुरक्षित किये जाते थे । मोहनजोदड़ो से बृहद अन्नागार प्राप्त हुआ है

पशुपालन –

- दूसरा प्रमुख व्यापार पशुपालन था, मुख्यतः दूध, मांस, तथा कृषि कार्यों हेतु इसका प्रयोग होता था
- यह लोग गाय, भैंस, कुत्ते, बिल्ली, भेड़, बैल,बकरी आदि से परिचित थे किन्तु घोड़े से अपरिचित थे

उद्योग धंधे तथा व्यापार –

- कपडा बनाने का व्यवसाय उन्नत था जिसका निर्यात विदेशों में भी होता था
- मानकीकृत माप तौल के प्रमाण मिले हैं
- व्यापार को मुख्यतः दो भागों में विभाजीत किया जा सकता है
  - आंतरिक व्यापार – राजस्थान, कर्णाटक एवं महाराष्ट्र के प्रमुख नगरों के मध्य
  - बाह्य व्यापार – मेसोपोटामिया, अफगानिस्तान एवं फारस की खाड़ी तक विस्तृत था
- बाह्य व्यापार के साक्ष्य मेसोपोटामिया स्थित 'सारगौन' अभिलेख से प्राप्त होते हैं

36. हड़प्पा सभ्यता के सामाजिक जीवन पर प्रकाश डालिए?

उत्तर. सामाजिक व्यवस्था –

- स्त्री मृणमूर्तियों की अत्यधिक संख्या के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हड़प्पायी समाज मातृसत्तात्मक था ।
- समतामूलक समाज – छुआछूत व जाति प्रथा के साक्ष्य प्राप्त नही हुए
- समाज में दो वर्ग दृष्टिगोचर होते हैं शासक वर्ग पश्चिमी भाग में जबकि सामान्य वर्ग पूर्वी निचले भाग में निवास करता था
- उपयोगितावादी समाज था – इसकी झलक उनके भवन निर्माण शैली में दिखाई पड़ती है
- सुशिक्षित समाज की छाप दिखाई पड़ती है – हड़प्पायी लिपि, बाट एवं मापतौल की इकाई का प्रयोग
- शाकाहारी तथा मांसाहारी दोनों प्रकार का भोजन प्रचलित था
- मनोरंजन में मछली पकड़ना, शिकार करना, पक्षी लड़ाना व पांसा खेलना आदि
- सिन्धु सभ्यता के लोग ऊनी तथा सूती दोनों प्रकार के वस्त्रों का उपयोग करते थे

- अंत्येष्टि में पूर्ण समाधि करण के साथ साथ आंशिक समाधिकरण व दाह संस्कार का भी चलन था
- यहाँ के लोग माप तौल प्रणाली, धातु निर्माण, तथा मौसम विज्ञान की जानकारी रखते थे

37. हड़प्पा सभ्यता के राजनैतिक जीवन की व्याख्या कीजिये ?

उत्तर.राजनीतिक व्यवस्था –

- एक समान नाप तौल प्रणाली,भवन निर्माण व्यवस्था, सड़क प्रणाली, एक सामान लिपि ये समस्त लक्षण एकरूपता को प्रदर्शित करते हैं, एकरूपता तभी संभव है जब कोई केंद्रीकृत शासन प्रणाली उपस्थित हो। शासक वर्ग को लेकर विद्वानों में मतभेद है
- उन्नत नगरीयकरण, वाणिज्य व्यापार को देखते हुए जहाँ कुछ विद्वानों का मत है कि शासन व्यवस्था संभवतः वणिक वर्ग के हाथों में रही होगी
- वहीं दूसरी ओर विद्वानों के एक वर्ग का मत है की शासन संभवतः पुरोहितों के हाथ में रहा होगा । उदा. -
  - सभागार
  - अन्नागार
  - स्नानागार
  - बलूचिस्तान के मंदिरनुमा टीले
- किसी भी निष्कर्ष तक पहुचने के लिए और अधिक खोज व अनुसंधान की आवश्यकता है
- हन्टर के अनुसार मोहनजोदड़ो का शासन राजतंत्रात्मक न होकर जनतंत्रात्मकथा

38. सिन्धु घाटी सभ्यता की धार्मिक मान्यताओं का वर्णन कीजिये ?

उत्तर.

- सिन्धु सभ्यता में मातृदेवी की उपासना सर्वाधिक प्रचलित थी
- सैन्धव सभ्यता में ईश्वर की पूजा मानव, वृक्ष, तथा पशु तीनो रूप में करते थे
- हड़प्पायी मूर्ति में स्त्री के गर्भ से पौधे को निकलते हुए दिखाया गया है यह इस बात का प्रमाण है की यहाँ के लोग धरती को उर्वरता की देवी समझते थे
- स्वास्तिक चिन्ह हड़प्पा सभ्यता की देन है संभवतः इसका उपयोग सूर्योपासना के लिए किया जाता था
- कालीबंगा तथा लोथल से अग्नि वेदिकाओं का प्रमाण मिलता है
- लिंग पूजा, नाग पूजा तथा अग्नि पूजा के प्रमाण भी प्राप्त होते हैं
- मोहनजोदड़ो से प्राप्त बृहद स्नानागार इस बात की ओर इंगित करता है कि उनमे स्नान का विशेष महत्व था एवं जल पूजा प्रचलित थी
- मंदिर के साक्ष्य प्राप्त नहीं होते हैं

  निष्कर्षतः हड़प्पा सभ्यता एक लौकिक सभ्यता थी ।

An Institute for MPPSC Examination

3अंकों के प्रश्नोत्तर

39.सप्त सैन्धव –

- ऋग्वेद में सप्तसैंधव प्रदेश का उल्लेख प्राप्त होता है जिसमे सात प्रमुख नदियाँ निम्न हैं
- सिन्धु, सरस्वती, वितस्ता, अस्किनी, परुषणी, बिपासा, शर्तुडि
- आर्यों का प्रारंभिक विस्तार इसी क्षेत्र में था जो वर्तमान के अफगानिस्तान से लेकर पंजाब क्षेत्र के अंतर्गत आता है।

40.श्रुति –

- श्रुति का अर्थ है – सुनकर लिखा हुआ साहित्य
- वैदिक साहित्य को श्रुति की संज्ञा दी जाति है
- वास्तव में, ऋषि-मुनियों द्वारा प्राप्त ज्ञान को कहने-सुनने की परंपरा द्वारा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाया गया

41.अपौरुषेय –

- अपौरुषेय का शाब्दिक अर्थ है – जिसकी रचना इंसानों द्वारा न की गयी हो
- वैदिक साहित्य को लेकर यह विश्वास है कि ईश्वर ने ऋषियों को आत्मज्ञान के माध्यम से उन्हें यह साहित्य सौंपा
- कालांतर में ऋषियों ने श्रुति परंपरा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक इसे स्थानांतरित किया

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

42.वेदत्रयी –

- वेदत्रयी का शाब्दिक अर्थ है – तीन वेदों का समूह
- प्रथम तीन वेदों यथा - ऋग्वेद, यजुर्वेद एवं सामवेद को वेदत्रयी में शामिल किया जाता है
- अथर्ववेद को इसमें शामिल नहीं किया जाता

43.ऋग्वेद का तीसरा मंडल –

- विश्वामित्र द्वारा रचित
- इसमें गायत्री मंत्र वर्णित है
- सवित्तृ (सूर्य) देवता को समर्पित है

44.आर्यावर्त –

- आर्यावर्त के अंतर्गत ब्रम्हवर्त, ब्रह्मर्षि देश, मध्यदेश, बिहार एवं बंगाल शामिल था
- इसके अंतर्गत सम्पूर्ण उत्तर भारत का क्षेत्र शामिल होता है
- आर्यों का यह विस्तार उत्तरवैदिक काल में संभव हुआ।

45.नदीतमा –

- ऋग्वैदिक काल में सप्तसैंधव प्रदेश की सात नदियों में से एक नदी
- ऋग्वैदिक आर्यों की सबसे पवित्र नदी सरस्वती थी जिसे नदीतमा की संज्ञा दी गयी
- कई वैदिक ऋचाओं की रचना सरस्वती नदी के किनारे हुई है

46.ऋग्वेद में उल्लेखित विदुषी स्त्रियाँ –

- अपाला
- लोपामुद्रा
- घोषा
- सिकता

47.सामवेद –

- उत्तरवैदिक कालीन साहित्य के रूप में प्राप्त एक पद्य ग्रन्थ है
- साम का अर्थ है –गायन
- सामवेद भारतीय संगीत का प्राचीनतम ग्रन्थ है

48.यजुर्वेद –

- उत्तरवैदिक कालीन साहित्य के रूप में प्राप्त यजुर्वेद गद्य एवं पद्य दोनों में रचित है
- इसमें यज्ञों से सम्बंधित कर्मकांडीय विधियों का उल्लेख
- कर्मकांडो को संपन्न करवाने वाले पुरोहित को 'अध्वर्यु' कहते थे

49.अथर्ववेद –

- उत्तरवैदिक कालीन साहित्य के रूप में प्राप्त यजुर्वेद गद्य एवं पद्य दोनों में रचित है
- अथर्वा ऋषि के नाम पर इसका नाम अथर्ववेद पड़ा
- अथर्ववेद में वशीकरण, तंत्र-मन्त्र, जादू-टोना एवं औषधियों का वर्णन है

50.परुषणी -

- सप्तसैंधव क्षेत्र की एक प्रमुख नदी
- वैदिक काल में वर्तमान रावी नदी का नाम 'परुषणी' था
- रावी नदी के किनारे दशराज युद्ध हुआ था

51.दशराज युद्ध -

- ऋग्वेद के सातवें मंडल में दशराज युद्ध का उल्लेख मिलता है
- भरत कबीले द्वारा विश्वामित्र के स्थान पर वशिष्ठ को अपना गुरु मान लेने के पश्चात विश्वामित्र द्वारा 5 आर्य एवं 5 अनार्य कबीलों को लेकर प्रायोजित युद्ध
- आर्यों के संघर्ष का ऋग्वैदिक प्रमाण

52.पुरुषसूक्त –

- ऋग्वेद के दसवें मंडल का एक भाग जिसमे सर्वप्रथम शूद्रों की चर्चा की गयी
- इसमें एक विराट पुरुष के मुख से ब्राह्मण, भुजा से राजा, जंघा से वैश्य, एवं पैर से शूद्र की उत्पत्ति सम्बन्धी विचार
- इस प्रकार वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रथम प्रमाण

53.पंचजन –

- ऋग्वेद के स्सत्वें मंडल में वर्णित दशराज युद्ध में भरत कबीले के विरुद्ध भाग लेने वाले 5 आर्य कबीले –
- पुरु, यदु, अनु, तुर्वस, द्रुह्यू

प्रयासIKSG An Institute for MPPSC Examination

- भरत कबीले से इस संघ के हार के प्रमाण प्रपत्र होते हैं

54.पुरंदर –

- वैदिक साहित्य में 'इंद्र' के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द
- पुरंदर का अर्थ होता है – किलों को तोड़ने वाला
- इंद्र को युद्ध और वर्षा का देवता माना जाता है

55.ब्राहमण ग्रन्थ -

- वैदिक साहित्य की अनुष्ठानिक एवं कर्मकाण्डीय व्याख्या ब्राह्मण ग्रंथों द्वारा की गयी
- ये वेदों के गद्य भाग हैं
- कुछ प्रमुख ब्राह्मण ग्रन्थ – ऐतरेय, कौतिषकी, शतपथ आदि

56.अरण्यक –

- अरण्यक का अर्थ है – वन में लिखा जाने वाला साहित्य
- इसके अंतर्गत वेदों की रहस्यमयी व्याख्या शामिल है
- इसमें यज्ञ और कर्मकांडो का विरोध किया गया है

57.उपनिषद –

- उप – समीप, निष् – बैठना
- वह विद्या जो गुरु के निकट बैठकर एकांत में सीखी जाती थी, उपनिषदों के अंतर्गत शामिल है
- ये वेदों के अंतिम भाग हैं इसलिये इन्हें वेदांत भी कहा जाता है
- उपनिषदों में दार्शनिकता पर बल दिया गया है

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

58.छान्दोग्य उपनिषद –

- यह सामवेद सम्बंधित उपनिषद है
- यह सबसे प्राचीम उपनिषद है
- इसमें तीन आश्रमों की व्यवस्था का वर्णन है

59.मुंडकोपनिषद –

- यह अथर्ववेद से सम्बंधित उपनिषद है
- इसमें सत्यमेव जयते का उल्लेख है
- इसमें यज्ञ एवं कर्मकांडों पर चोट करते हुए यज्ञ को टूटी-फूटी नौका के सामान कहा गया है

60.वेदांग –

- वेदों के बेहतर व्याख्या के लिए वेदांगों की रचना हुई
- इनकी संख्या 6 है
- शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद

61.शुल्वसूत्र –

- वेदांग में शामिल कल्प सूत्र के अंतर्गत शामिल श्रौत सूत्र का एक भाग शुल्वसूत्र है
- इस सूत्र में प्रारंभिक गणितीय मापन के एवं ज्यामितीय साक्ष्य प्राप्त होते हैं
- यज्ञ के दौरान निर्मित वेदियों के मापन का उल्लेख है

62.मुनित्रय –

- मुनित्रय के अंतर्गत महर्षि पाणिनि, पतंजलि एवं कात्यायन को शामिल किया गया है
- महर्षि पाणिनि – अष्टाध्यायी
- पतंजलि – महाभाष्य
- कात्यायन – वार्तिक

63.निरुक्त –

- छः वेदांगों में से एक वेदांग
- महर्षि पाणिनि ने वेदरूपी शरीर के कान के रूप में निरुक्त का उल्लेख किया है
- इनका अर्थ होता है – व्युत्पत्ति शास्त्र
- इसमें वैदिक शब्दों की व्युत्पत्ति बताई गयी है

64.आश्रम व्यवस्था –

- उत्तरवैदिक ग्रंथों में मानवीय जीवन को चार चरणों में वर्गीकृत किया गया है जिसका सर्वप्रथम उल्लेख जबालोपनिषद में प्राप्त होता है
- ब्रह्मचर्य आश्रम – 25 वर्ष तक
- गृहस्थ आश्रम – 25 से 50 वर्ष तक
- वानप्रस्थ आश्रम – 50 से 75 वर्ष तक
- संन्यास आश्रम – 75 के उपरान्त

65.द्विज –

- द्विज के अंतर्गत तीन वर्गों को शामिल किया जाता था – ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य
- इन्हें उपनयन का अधिकार प्राप्त था
- इसमें शूद्रों को शामिल नही किया जाता था

66.राजसूय यज्ञ –

- यह वैदिक काल का एक महत्वपूर्ण यज्ञ था
- यह राजा के राज्याभिषेक से सम्बंधित यज्ञ है
- इसमें वरुण और इंद्र का अभिषेक किया जाता था

67.अश्वमेध यज्ञ –

- यह ऋग्वैदिक काल का सर्वाधिक महत्वपूर्ण यज्ञ था
- इसे राजा अपने साम्राज्य विस्तार हेतु करता था
- वर्ष की समाप्ति पर सांडों और घोड़ों की बलि दिए जाने का उल्लेख प्राप्त होता है

68.बाजपेय यज्ञ –

- यह वैदिक काल का महत्वपूर्ण यज्ञ था
- यह यज्ञ राजा के सत्य प्रदर्शन का प्रतीक था
- इसमें रथ दौड़ का आयोजन किया जाता था

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

69.कार्षापण –

- सूत्रकाल में नियमित सिक्कों का प्रचलन शुरू हुआ
- भारत के चाँदी में निर्मित प्राचीनतम सिक्के 'आहत सिक्के' या 'पंचमार्क मुद्रा' कहे जाते थे
- इन्हें आहत इसलिए कहा जाता था क्योंकि धातु के टुकड़े पर किसी आकृति का ठप्पा मारकर बनाया जाता था

70.उपवेद –

- वेदों की बेहतर समझ के लिए उपवेदों की रचना की गयी
- चारों वेदों से सम्बंधित उपवेद निम्नानुसार हैं –
- ऋग्वेद – अर्थवेद
- सामवेद – गंधर्ववेद
- यजुर्वेद – धनुर्वेद
- अथर्वेद – आयुर्वेद

71.सूत्रकाल में श्रेणी –

- सूत्रकाल में व्यवसायियों ने अपने कई संगठन बना लिए थे जिन्हें 'श्रेणी' कहा जाता था
- एक ही कार्य करने वाले व्यापरियों का समूह
- इसके प्रमुख को 'श्रेष्ठिन' या 'चेट्टी' कहा जाता था

72.वैदिक काल में सभा –

- वैदिक काल में राजा निरंकुश नहीं था, राजा की शक्तियों पर अंकुश रखने के रूप में एक संस्था 'सभा'मौजूद थी
- यह श्रेष्ठ एवं कुलीन लोगों का समूह था
- इसकी भूमिका की कुछेक अर्थों में आधुनिक राज्यसभा से की जा सकती है ।

73.वैदिक काल में समिति –

- राजा के शक्तियों पर अंकुश रखने के लिए एक प्रमुख संस्था के रूप में 'समिति' मौजूद थी
- इसका प्रमुख कार्य राजा का निर्वाचन एवं राजा को सलाह देने का था
- इसकी तुलना आधुनिक लोकसभा से की जा सकती है

74.विदथ –

- वैदिक कालीन एक प्रमुख राजनीतिक संस्था के रूप में 'विदथ' की मौजूदगी थी
- यह सबसे प्राचीन संस्था थी
- यह सैनिक, असैनिक व धार्मिक कार्यों से सम्बंधित थी

75.जनस्यगोपा –

- ऋग्वैदिक कालीन व्यवस्था में सबसे बड़ी प्रशासनिक इकाई 'जन' हुआ करती थी जिसके प्रधान को 'जनस्यगोपा' कहते थे जो वास्तव में राजा हुआ करता था
- सामान्यतः इसका पद वंशानुगत होता था
- इसका प्रमुख कार्य – कबीले की सुरक्षा एवं युद्ध में कबीले का प्रतिनिधित्व करना हुआ करता था

76.मिलिशिया –

- युद्ध के समय लोगों को संयुक्त कर एक सेना का निर्माण किया जाता था जिसे 'मिलिशिया' कहते थे
- इसका प्रमुख कार्य – कबीले की सुरक्षा होता था
- खतरे की समाप्ति के पश्चात सामान्यतः मिलिशिया ख़त्म हो जाती थी

77.अघन्या

- अघन्या का अर्थ है – जिसे मारा न जा सके
- वैदिक काल में गाय की महत्ता सर्वाधिक थी
- गाय की इस अत्यधिक पवित्रता के कारण ही उसे 'अघन्या' की संज्ञा दी गयी है

78.पणि –

- वैदिक साहित्य में 'पणि' नामक अनार्यों का उल्लेख प्राप्त होता है
- ये आर्यों की गायों को चुरा लेते थे
- कई जगह व्यापारी के रूप में भी इनका उल्लेख प्राप्त होता है

79.वैदिक काल में रत्निन –

- वैदिककाल में उच्च पदाधिकारियों के रूप में 'रत्निन' की मौजूदगी के प्रमाण प्राप्त हैं
- इन्हें रत्निन इसलिए कहा जाता था क्योंकिय कान में रत्न पहनते थे
- कुछ प्रमुख रत्निन – सेनानी, पुरोहित, संग्रहीता एवं भागदुध

80.कृष्णअयश –

- उत्तरवैदिक काल में 'लोहे' के लिए 'कृष्णअयश' शब्द का उल्लेख मिलता है
- लोहे के प्राचीनतम साक्ष्य लहभग 1000 ई.पू. में प्राप्त होते हैं
- ऋग्वैदिक काल से से उत्तरवैदिक काल की ओर यात्रा के प्रमुख विभाजक के रूप में लोहे को स्वीकार किया जाता है

81.पुरुषार्थ –

- सूत्रकाल में चार पुरुषार्थों का उल्लेख प्राप्त होता है
- धर्म ⟶ अर्थ ⟶ काम ⟶ मोक्ष
- प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में इन चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति का महत्व है

82.जयसंहिता –

- महाकाव्यकाल में महाभारत को 'जयसंहिता' के नाम से जाना जाता था
- प्रारंभ में जयसंहिता में श्लोकों की संख्या 8800 थी एवं कालांतर में श्लोकों की संख्या बढ़कर 1 लाख हो गयी और इसे 'महाभारत' कहा जाने लगा
- इसका संकलन 'महर्षि वेदव्यास' ने किया है

83.दसवाँ मण्डल:

- ऋग्वेद के दसवें में पुरुष सुक्त का उल्लेख है जिसमें यदि पुरुष ब्रह्मा के मुख से ब्राम्हण, भुजाओं से क्षत्रिय, जंघाओं से वैश्य और पैरों से शूद्रो की उत्पत्ति बताई गई है।

An Institute for MPPSC Examination

84.विदथ:

- ऋग्वेद को प्राचीनतम् संस्था जो सम्भवत: अनुभवी व्यक्तियों का समूह होता था। उत्तर वैदिक काल में इसका लोप हो गया।

85.नियोग प्रथा:

- सन्तानहीनता विधवा पुत्र प्राप्ति होने तक अपने देवर या अन्य निकट सम्बन्धों के साथ सम्बन्ध बना सकती थी। इसे 'नियोग' कहा गया है।

86.दस बन्ध –

- ऐसी भू–पद्धति जिसमें सिंचाई के लिए तालाब खुदवाने और पूर्णत: निर्मित करने वाले व्यक्ति को, उसके द्वारा निर्मित तालाब, नहर या कुएँ द्वारा ही सिंचित भूमि का एक खण्ड कर मुक्त भूमि अनुदान के रूप में प्रदान किया गया हो।

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

87. ऋग्वैदिक काल में सामाजिक स्थिति का वर्णन कीजिये ?

उत्तर.

- ऋग्वैदिक समाज पितृसत्तात्मक तथा संयुक्त परिवार की प्रथा प्रचलित थी
- इस काल में ऋग्वेद के10वें मंडल में वर्णित पुरुषसूक्त में 4 वर्णों का उल्लेख मिलता है
- इस काल में सती प्रथा, बाल विवाह, एवं पर्दा प्रथा का प्रचलन नही था एवं स्त्रियाँ अपने पतियों के साथ यज्ञ में भाग लेती थीं
- विवाह में दहेज़ जैसी कुप्रथा का प्रचलन नही था एवं स्त्रियों हेतु शिक्षा के द्वार खुले थे
- ऋग्वैदिक काल में मांसाहारी एवं शाकाहारी भोजन के साथ साथ सोम और सुरा का प्रचलन भी था
- आर्य लोगों का विवाह दास तथा दस्युओं के साथ निषिद्ध था ऋग्वेद में ऐसे कन्यायों का उल्लेख मिलता है जो आजीवन अविवाहित रहती थीं इन्हें अमाजू कहा जाता था

88. ऋग्वैदिक काल की राजनैतिक स्थिति पर चर्चा करें ?

उत्तर.

- ऋग्वैदिक काल में आर्य कुटुंब कुल पर आधारित थे जिसका प्रधान कुलप या कुलपति कहलाता था वह परिवार का मुखिया होता था
- अनेक परिवारों को मिलोकर ग्राम बनता था जिसका प्रधान 'ग्रामणी' कहलाता था तथा अनेक ग्रामों को मिलकर विश बनता तहस जिसका प्रधान विशपति होता था अनेक विशों का समूह जन या कबीला कहलाता था जिसका प्रधान राजा/राजन/गोप कहलाता था
- राजा – पुरोहित – विशपति – ग्रामणी – कुलप
- प्रारंभ में राष्ट्र की सम्पूर्ण प्रजा मिलकर राजा का चुनाव करती थी परन्तु बाद में यह पद अनुवांशिक हो गया

- इस काल में अनेक जनतांत्रिक संस्थाओं का विकास हुआ जिसमे सभा समिति तथा विदथ प्रमुख हैं
- 'सभा और समिति'राजा को सलाह देने वाली संस्था थी जिसमे सभा श्रेष्ठ एवं कुलीन लोगों की संस्था थी जबकि समिति सामान्य जनता का प्रतिनिधित्व करती थी समिति राजनैतिक संस्था कहलाती थी जो राजा की नियुक्ति हटाने व उस पर नियंत्रण रखती थी विदाथ मुख्यतः धार्मिक तथा सैनिक महत्वा के कार्य करती थी
- 'बलि'एक प्रकार का कर था जो प्रजा द्वारा स्वेच्छा से राजा को दिया जाता था

89. ऋग्वैदिक काल की धार्मिक स्थिति पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर.

- वैदिक आर्य बहुदेववाद के समर्थक थे वैदिक आर्य यज्ञ करते थे वे लिंग पूजा, मूर्ति पूजा के विरोधी थे
- ऋग्वैदिक काल में अग्नि, इंद्र, वरुण, सूर्य, सवितु, ऋतू, यम, रूद्र आदि प्रमुख देवता हैं और उषा अदिति, रात्रि, संध्या प्रमुख देवियाँ हैं
- देवताओं मे सर्वोच्च स्थान इंद्र को दिया गया है
- ऋग्वेद में जिन देवताओं की स्तुतियाँ अंकित हैं, वे प्राकृतिक तत्वों में निहित शक्तियों के प्रतीक हैं लेकिन इस समय पूजा अर्चनं का उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति न होकर भौतिक सुख की प्राप्ति था

90. उत्तर वैदिक काल में बीजरोपित षडदर्शनों पर चर्चा करें ?

उत्तर.-उत्तर वैदिक काल में ही बहुदेववादसम्प्रदायों एवं षड्दर्शनों का बीजारोपण हुआ जो अग्रलिखित हैं

An Institute for MPPSC Examination

- सांख्य– यह एक आस्तिक दर्शन है जो वेदों की प्रमाणिकता को स्वीकार करता है तथा इसके प्रतिपादक आचार्यकपिल थे
- वैशेषिक– यह एक परमाणुवादी सिद्धांत पर आधारित है जिसके प्रणेता कणाद या उलूक को कहा जाता है
- न्याय– इस दर्शन के प्रवर्तक गौतम ऋषि को कहा जाता है
- योग– यह एक योग शास्त्र पर आधारित आस्तिक दर्शन है जिसके प्रवर्तक महर्षि पतंजलि हैं
- पूर्व मीमांशा – यह एक आस्तिक दर्शन है जिसके प्रणेता आचार्य जैमिनी हैं
- उत्तर मीमांशा – इसे वेदों का अंत समझा जाता है तथा इसे वेदांत नाम से भी जाना जाता है इसके प्रवर्तक बादरायण हैं |

91. उत्तर वैदिक काल की सामाजिक दशा पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर -

- उत्तरवैदिक समाज समतामूलक था, छुआछूत एवं अश्पृश्यता का प्रचलन नहीं था
- वर्ण व्यवस्था प्रचलित थी एवं समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र वर्णों में विभाजित था
- वर्ण व्यवस्था अभी भी कर्म आधारित थी जन्म आधारित नहीं
- ऋग्वैदिक काल की तुलना में शूद्रों की स्थिति में गिरावट आई, उन्हें उपनयन संस्कार एवं शिक्षा प्राप्त करने के

अधिकार से वंचित कर दिया

- पूर्व की भांति समाज पितृसत्तात्मक था एवं संयुक्त परिवार का प्रचलन था
- ऋग्वैदिक काल की तुलना में स्त्रियों की दशा में गिरावट हुई
- बाल विवाह का चलन बढ़ा, स्त्रियों की तुलना पांसा और सुरा जैसी बुराईयों से की जाने लगी
- हालाँकि पुनर्विवाह, बहुपतिविवाह जैसे अधिकार महिलाओं को प्राप्त थे
- समाज में अनुलोम विवाह को मान्यता प्राप्त थी
- महिलाओं को शिक्षा प्राप्त करने का अधिकार था कुछ विदुषी स्त्रियाँ –मैत्रेयी, गार्गी आदि
- दास प्रथा प्रचलन में थी
- सूती एवम ऊनी वस्त्रों का प्रयोग करते थे
- शाकाहार एवं मांसाहार दोनों चलन में था किन्तु गाय का मांस निषिद्ध था
- मनोरंजन हेतु पांसा, चौपड़, मछली पकड़ना आदि का प्रयोग होता था

उत्तरवैदिक काल के सामजिक जीवन में ऋग्वैदिक काल के कुछ तत्व समाहित थे साथ ही कुछ नए परिवर्तनों का भी समावेशन हुआ

92. ऋग्वैदिक काल की तुलना में उत्तर वैदिक काल में हुए राजनीतिक परिवर्तनों पर प्रकाश डालें ?

उत्तर वैदिक काल (1000-600 ई. पू.) में हुए लोहे के अविष्कार एवं भूमि के महत्व जैसे कारकों ने राजनीतिक जीवन में कई परिवर्तनों की ओर कदम बढाया हालांकि कुछ मूलभूत तत्वों में निरंतरता बनी रही किन्तु चरण के तौर पर इतिहास ने नए दौर में प्रवेश किया।

राजनीतिक क्षेत्र में परिवतन के बिंदु –

- राजा की शक्तियों में वृद्धि
- राज्याभिषेक के अलावा कुछ अन्य यज्ञ राजा के पद के साथ जुड गये जैसे – राजसूय यज्ञ, बाजपेय यज्ञ
- अब राजा की पहचान कबीले के साथ ही भूमि क्षेत्र से भी जुड गयी
- राजा के पद का अंशतः दैवीयकरण हो गया
- राजत्व की अवधारणा का प्रारंभिक उल्लेख प्राप्त होता है
- राजा अब कई उपाधियाँ धारण करने लगा जैसे – एकराट, सर्वभूमिपति
- अब युद्ध मात्र गायों के लिए नही बल्कि उपजाऊ क्षेत्र में अधिकार के लिए भी होने लगे उदहारण – दशराज युद्ध
- शुल्क एवं भाग नामक नियमित कर प्राप्त होने लगे
- कुछ नवीन अधिकारियों की जानकारी भी प्राप्त होती है जैसे –'संग्रहीता'(कोषाध्यक्ष), पालागल (वन का अधिकारी)

93.मनुस्मृति में उल्लेखित विवाह के 8 प्रकारों की चर्चा करें ?

उत्तर.-उत्तर वैदिक काल में राजा मनु द्वारा लिखित मनुस्मृति में विवाह के 8 प्रकारों की चर्चा की गयी है जिसमे 4 विवाह प्रशंसनीय तथा शेष 4 विवाह निंदनीय माने जाते हैं

प्रशंसनीय विवाह –

- ब्रह्म विवाह – माता पिता द्वारा कन्या के वयस्क होने पर योग्य वर खोजकर विवाह करना
- दैव विवाह – यज्ञ करने वाले पुरोहितों के साथ कन्या का विवाह
- आर्ष विवाह – माता पिता द्वारा यज्ञ कार्य हेतु गाय के बदले अपनी कन्या का विवाह करना

- प्रजापत्य विवाह – वर द्वारा स्वयं कन्या के पिता से आज्ञा लेकर विवाह करना

निंदनीय विवाह –

- असुर विवाह – माता पिता द्वारा धन के बदले कन्या का विक्रय करना
- पिशाच विवाह – सोई हुई या विक्षिप्त कन्या के साथ सम्भोग कर विवाह करना
- गन्धर्व विवाह – वर तथा प्रेम अथवा कामुकता में वशीभूत होज्क्कर विवाह करना
- राक्षस विवाह – बलपूर्वक वधू को छीनकर उससे विवाह करना

94.व्यापारिक श्रेणियों से आप क्या समझते है ? इनकी कार्यप्रणाली का उल्लेख कीजिए।

उत्तर

- आर्थिक संगठनों की प्राचीनत: ऋग्वेदिक काल तक जाती है। पणि नामक व्यापारियों का उल्लेख ऋग्वेद में मिलता है जो समूह बनाकर व्यापार के लिए जाते थे।
- किन्तु श्रेणियों का पूर्ण विकास उत्तर वैदिक काल में हुआ। इस काल में व्यापार तथा वाणिज्य में बहुत वृद्धि हुई। अत: उत्पादन तथा वितरण की व्यवस्था करने वाले संगठनों की आवश्यकता हुई। अत: समाज में श्रेष्ठि या सेट्टि वर्ग का उदय हुआ।
- श्रेणी एक प्रकार के शिल्प अथवा व्यवसाय का अनुसरण करने वालो का समूह होता था।
- निगम ऐसे व्यापारियों का संगठन होता था जो स्थायी रूप से एक ही नगर में रहकर व्यापार करते थे।
- श्रेणियों में प्रचलित कानूनों तथा रीति रिवाजों को धर्म ग्रन्थों में श्रेणी धर्म कहा गया है। इन्हें राज्य की ओर से वैधानिक मान्यता मिली हुई थी तथा श्रेणी के प्रत्येक सदस्य को इनका पालन करना होता था।
- श्रेणी संगठनों का कार्य केवल आर्थिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं था। बल्कि यह सामाजिक, धार्मिक एवं जनकल्याण के कार्यो को भी करते थे।
- आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार का नियंत्रण श्रेणियों हाथ में था तथा बाजार में मूल्य निर्धारण, मुद्रा प्रचलन और बैंकिंग के कार्य भी श्रेणियों द्वारा ही किये जाते थे।
- इस प्रकार प्राचीन भारत में श्रेणी संगठन समृद्ध, सुसंगठित एवं शक्तिशाली थे।

An Institute for MPPSC Examination

छठी शताब्दी ईसा पूर्व का भारत

3अंकोंकेप्रश्नोत्तर

95.द्वितीय नगरीय क्रांति –

- लगभग छठी शताब्दी ई.पू. में लोहे के अतिशय प्रयोग के द्वारा अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण परिवर्तन हुए
- कृषि अधिशेष एवं वाणिज्य व्यापार में वृद्धि के कारण उत्तरवैदिक कल के जनपद, महाजनपदों में परिवर्तित होने लगे
- विद्वान 'गार्डन चाइल्ड' ने इसे द्वितीय नगरीय क्रांति की संज्ञा दी है

96.अवंति महाजनपद –

- छठी शताब्दी ई.पू. में 16 महाजनपदों में से एक महत्वपूर्ण जनपद
- वर्तमान मध्यप्रदेश के उज्जैन एवं खरगौन जिले में विस्तृत
- अवन्ती के दो भाग थे –उत्तरी अवन्ती – उज्जैयनी दक्षिणी अवंति – महिष्मति

97.चेदि महाजनपद–

- छठी शताब्दी ई.पू. में 16 महाजनपदों में से एक महत्वपूर्ण जनपद

- वर्तमान में मध्यप्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र से सम्बंधित
- इसकी राजधानी –'शुक्तिमती' थी

98.जीवक -

- हर्यंक वंश के संस्थापक बिम्बिसार के राजवैद्य
- तत्कालीन आयुर्वेदाचार्य
- अवन्ति के शासक 'चंड प्रद्योत' को पीलिया नामक रोग हो जाने के पश्चात बिम्बिसार द्वारा उपचार हेतु भेजा गया और यह इलाज सफल रहा

99.हर्यंक वंश –

- छठी शताब्दी ई.पू. में मगध में स्थापित प्रथम वंश
- इस वंश का संस्थापक 'बिम्बिसार' था
- अन्य शासकों में – अजातशत्रु एवं उदयिन प्रमुख हैं

100. प्रथम बौद्ध संगीति –

- काल – 483 ई.पू. स्थान – राजगृह (सप्तपर्णी गुफा)
- शासक – अजातशत्रु अध्यक्ष – महाकस्सप
- इसमें प्रमुख बौद्ध ग्रंथों विनयपिटक व सुत्तपिटक की रचना की गयी

101. काकवर्ण –

- शिशुनाग वंश के शासक 'कालाशोक' का दूसरा नाम काकवर्ण था
- इसके शासन काल में वैशाली में द्वितीय बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया
- कालाशोक ने अपनी राजधानी को पुनः पाटलिपुत्र स्थानांतरित किया जो लंबे समय तक मगध साम्राज्य की राजधानी रही

102. महापद्मनंद –

- पुराणों के अनुसार यह 'नन्द' वंश का संस्थापक था
- इसने 'एकराट' की उपाधि धारण की थी
- महापद्मनन्द ने कलिंग की विजय की तथा वहां एक नाहर का निर्माण करवाया

103. चंड प्रद्योत –

- बुद्ध के समकालीन अवन्ती का शासक चंद प्रद्योत था
- पीलिया नामक रोग हो जाने के पश्चात बिम्बिसार ने अपने राजवैद्य जीवक को चंद प्रद्योत के उपचार हेतु भेजा जो दोनों शासकों में मित्रवत सम्बन्ध का परिचायक था
- कालांतर में चंड प्रद्योत ने 'बौद्ध धर्म' ग्रहण कर लिया

104. हाईडेस्पीज/वितस्ता का युद्ध -

- 326 ई.पू. में झेलम नदी के तट पर 'सिकंदर महान' एवं पंजाब के शासक 'पोरस' के मध्य वितस्ता का युद्ध हुआ
- अद्भुत वीरता दिखाने के पश्चात भी पोरस पराजित हुआ
- बाद में सिकंदर ने पोरस को उसका राज्य वापस कर दिया

105. हेलनिस्टिक कला –

- गांधार मूर्तिकला के अंतर्गत यूनानी एवं भारतीय शैलियों का समिश्रण दिखाई पड़ता है जिसे हेलनिस्टिक कला की संज्ञा दी जाती है
- इसके अंतर्गत निर्मित बुद्ध की मूर्तियाँ अपने स्वरुप में यूनानी देवता 'अपोलो' के समान हैं किन्तु उनकी आत्मा भारतीय है
- इस कला शैली के अंतर्गत बनी बुद्ध की मूर्तियाँ धर्मचक्र मुद्रा एवं वरद मुद्रा जैसे मुद्राओं में हैं

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

106. छठी शताब्दी ई.पू. में गणतंत्रों का उल्लेख करें ?

उत्तर.–छठी शताब्दी ई.पू. के राजनीतिक इतिहास की एक महत्वपूर्ण विशेषता कुछ गणतंत्रों की स्थापना थी, जिसमे सोलह महाजनपदों के अलावा गंगा घाटी में कई गणतंत्रो के प्रमाण मिलते हैं बौध पालि ग्रंथो के अनुसार 10 गणतंत्र निम्नानुसार है

- **कपिलवस्तु के शाक्य** – कपिलवस्तु 'शाक्य' गण की राजधानी थी बुद्ध, शाक्य गण के राजा शुद्धोदन और महामाया के पुत्र थे उन्होंने अपना प्रारंभिक जीवन यहीं व्यतीत किया
- **सुमसुमारा के भग्ग**– इनका क्षेत्र वर्तमान चुनार (मिर्ज़ापुर जिले) से अनुमानित है ऐतरेय ब्राह्मण के अनुसार भग्ग लोग 'भर्ग' वंश से सम्बंधित थे
- **अलकप्प के बुली** – इनकी राजधानी बेतिया (बिहार थी ये लोग बौद्ध धर्म के अनुयायी थे
- **केसपुत्त के कलाम** – वैदिक साहित्य के अध्ययन से ज्ञात होता है कि कलामों का सम्बन्ध पांचाल जनपद की केशियों के साथ हुआ करता था 'आचार्य अलार कलाम' इसी राज्य से सम्बंधित थे महात्मा बुद्ध ने आचार्य अलार कलाम से सांख्य दर्शन की दीक्षा ली थी
- **रामग्राम के कोलिय** – इनकी राजधानी 'रामग्राम' थी यह क्षेत्र वर्तमान गोरखपुर जिले में स्थित रामगढ ताल पर स्थित था
- **कुशीनारा के मल्ल** –वाल्मीकि रामायण के अनुसार मल्लों को लक्ष्मण के पुत्र 'चंद्रकेतुमल्ल' का वंशज बताया गया है
- **पावा के मल्ल**–पावा वर्तमान कुशीनगर जिले में स्थित 'पडरौना' नमक स्थान हुआ करता था मल्ल लोग सैनिक प्रवृति के थे
- **पिप्पलिवन के मोरिय**– मोरों के प्रदेश के निवासी होने की वजह से ही इन्हें 'मोरिय' कहा जाता था मोरिय शब्द से ही 'मौर्य' शब्द उत्पन्न हुआ है चन्द्रगुप्त मौर्य इसी वंश के थे
- **वैशाली के लिच्छवि** – यह बुद्ध के समय का सबसे शक्तिशाली एवं बड़ा राज्य था लिच्छवि वज्जि संघ के सर्वप्रमुख थे
- **मिथिला के विदेह**– यहाँ के 'राजा जनक' अपनी शक्ति तथा दार्शनिक ज्ञान हेतु प्रसिद्ध थे इनकी राजधानी 'मिथिला' थी यह क्षेत्र वर्तमान जनकपुर था

An Institute for MPPSC Examination

107. द्वितीय नगरीय क्रांति के कारणों पर प्रकाश डालें करें ?

उत्तर.–द्वितीय नगरीय क्रांति के कारण अधोलिखित हैं –

- लोहे की भूमिका – आर. एस. शर्मा जैसे इतिहासकारों के अनुसार द्वितीय नगरीकरण में लोहे की भूमिका सर्वप्रमुख रही

राजनीतिक प्रशासनिक कारण –

- कुछ केंद्र जैसे राजगृह, पाटलिपुत्र आदि का महाजनपद के रूप में उदय इसलिए हो सका क्योंकि ये राजधानी क्षेत्र थे
- यहाँ शासक वर्ग निवास करता था और प्राप्त होने वाले राजस्व का एक बड़ा हिस्सा इन नगरों के उदय में खर्च होता था

आर्थिक कारक –

- तक्षशिला, वाराणसी, अवन्ती जैसे नगरों का विकास व्यापारिक केंद्र के रूप में हुआ इनमे से कुछ व्यापारिक मार्गों पर अवस्थित थे इसका भी इन्हें लाभ प्राप्त हुआ

धार्मिक कारक –

- वैशाली, मथुरा जैसे नगर धार्मिक गतिविधियों का केंद्र थे चढ़ावे के रूप में प्राप्त धन का यहाँ संकेन्द्रण होता चला गया परिणामस्वरूप इनका महानगरों के रूप में विकास हुआ

जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी कारक –

- जलवायु परिवर्तन के कारण एक बड़ी जनसँख्या पश्चिम भारत से पूर्व भारत की ओर प्रवसित हुई जिनके समक्ष खाद्यान की समस्या ने जन्म लिया फलस्वरूप गंगाघाटी में अतिरिक्त उत्पादन की आवश्यकत महसूस की गयी

108. मगध के उत्कर्ष के लिए उत्तरदायी कारकों की विवेचना करें ?

उत्तर.–इसके उत्कर्ष के प्रमुख कारण अग्रलिखित हैं

- सुविधाजनक भौगोलिक स्थिति जिससे निम्न गंगा के मैदानों पर नियंत्रण संभव हो सका
- लोहे व तांबे की खानों से निकटता जो बेहतर उपकरण और हथियारों के लिए आवश्यक थे
- जलोढ़ मिटटी का जमाव, जो कृषि के लिए मजबूत आधार प्रदान करता था
- मगध की दोनों राजधानियां राजगृह और पाटलिपुत्र सामरिक दृष्टि से महत्वपूर्ण थी क्योंकि राजगृह पहाड़ियों से घिरी थी जो शत्रुओं से पूर्णतः सुरक्षित थी,पाटलिपुत्र गंगा,सोन और गंडक नदी के संगम पर स्थित थी तथा वह जलदुर्ग द्वारा सुरक्षित थी
- दक्षिण बिहार के घने जंगलों से इमारती लकड़ी और सेना के लिए हाथी तथा अश्व प्राप्त होते थे
- मगध आर्यवर्त से बाहर स्थित था जिसकी वजह से ब्राह्मणवादी मान्यताओं को प्रभाव वहां कम था वर्णाश्रम व्यवस्था में कठोरता न होने के कारण मगध को चारों वर्णों से सेना के लिए सैनिक प्राप्त होते थे इसलिए एक विशाल सेना का निर्माण संभव हुआ
- मगध के शासकों का योगदान – बिम्बिसार (वैवाहिक संबंधों की नीति), अजातशत्रु (साम्राज्यवादी नीति), चन्द्रगुप्त मौर्य (साम्राज्यवादी नीति) एवं अशोक (धार्मिक सहिष्णुता की नीति) जैसे महान और शक्तिशाली शासकों का नेतृत्व प्राप्त हुआ

109. छठी शताब्दी ई. पू. में नवीन धर्मों की उत्पत्ति के कारणों की चर्चा करें ?

उत्तर.-छठी शताब्दी ई. पू. में भारत में नवीन धर्मों के उदय में निम्नलिखित कारणों ने योगदान दिया

- वैदिक धर्मों की जटिलता तथा यज्ञों की परंपरा
- जातिप्रथा की जटिलता जिसके परिणामस्वरुप –
  - ब्राह्मणवादी व्यवस्था के प्रति असंतोष
  - क्षत्रिय वर्ग में असंतोष
- वैदिक ग्रंथों की कठिन भाषा
- नवीन कृषि मूलक अर्थव्यवस्था का विस्तार
- व्यापारी वर्ग के महत्व में वृद्धि
- अनुकूल राजनैतिक दशा का प्रभाव
- बौद्ध और जैन धर्म के आदर्श
- महात्मा बुद्ध एवं महावीर का व्यक्तित्व
- इन नवीन धर्मों को राजकीय संरक्षण
- ब्राह्मण धर्म के कर्मकांडीय एवं भाषायी जटिलता के मुकाबले बौद्ध एवं जैन धर्मों द्वारा लोकभाषा का प्रयोग
  - बौद्ध धर्म – पालि भाषा
  - जैन धर्म – प्राकृत भाषा

प्राचीन भारत में धार्मिक आन्दोलन

3अंकों के प्रश्नोत्तर

110. अंगुत्तर निकाय –

- यह प्रमुख बौद्ध ग्रन्थ है
- इससे हमें सोलह महाजनपदों का उल्लेख मिलता है
- यह 'पालि' भाषा में लिखे गये हैं

111. ऋषभदेव –

- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर
- ऋषभदेव को 'आदिनाथ' की संज्ञा भी प्राप्त है
- पुराणों में नारायण के अवतार के रूप में इनका उल्लेख मिलता है

112. पार्श्वनाथ –

- जैन धर्म के 23वें तीर्थंकर
- इनका प्रतीक चिन्ह 'सर्प' है
- इन्होने जैन धर्म के अंतर्गत चातुर्याम शिक्षा (सत्य, अहिंसा, अस्तेय, अपरिग्रह) का प्रादुर्भाव किया

113. महावीर –

- जैन धर्म के 24वें एवं अंतिम तीर्थंकर
- इनका जन्म 540 ई.पू. में वैशाली के निकट 'कुंडग्राम' में हुआ था
- 12 वर्ष के कठोर तप के पश्चात 'रिजुपालिका नदी' के तट पर 'साल' के वृक्ष के निचे इन्हें कैवल्य की प्राप्ति हुई

114. मक्खालिपुत्र गोशाल –

- आजीवक सम्प्रदाय के प्रवर्तक
- जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर महावीर के समकालीन
- इन्होने अपनी शिक्षाओं में भाग्य/नियति को ही सर्वप्रमुख माना है

115. कैवल्य –

- कैवल्य का अर्थ है पूर्ण अथवा सर्वोच्च ज्ञान
- जैन मतानुसार कैवल्य प्राप्ति के तीन स्त्रोत हैं
- प्रत्यक्ष, अनुमान एवं तीर्थंकरों के वचन

116. अनंत चतुष्टय –

- कर्म बंधन में बधने के पूर्व एवं कैवल्य की प्राप्ति के पश्चात यह जीवन आवागमन चक्र से मुक्त हो जाता है
- इस स्थिति व्यक्ति को अनंत ज्ञान, अनंत दर्शन, अनंत वीर्य एवं अनंत सुख की प्राप्ति होती है
- जैसे – जैसे कर्म का बंधन मजबूत होता जाता है वैसे वैसे अनंत चतुष्टय भंग होता जाता है

117. जैन त्रिरत्न –

An Institute for MPPSC Examination

- जैन धर्म के अनुसार कैवल्य प्राप्ति हेतु त्रिरत्नों का पालन करना आवश्यक है
- जैन त्रिरत्न के अंतर्गत –
  - सम्यक दर्शन
  - सम्यक ज्ञान
  - सम्यक आचरण

118. स्यादवाद –

- संसार भर में दृष्टिकोण की भिन्नता को स्वीकार करने वाला यह प्रमुख ज्ञान सम्बन्धी जैन सिद्धांत है जो सापेक्षता के सिद्धांत पर आधारित है
- जिसके अनुसार त्रुटि से बचने के लिए स्यात् शब्द का प्रयोग किया जाना चाहिए
- स्यात् शब्द का प्रयोग सात तरीकों से किया जा सकता है इसलिए इसे 'सप्तभंगीनय' कहते हैं

119. बहुरतवाद –

- यह सिद्धांत स्वामी महावीर के प्रथम शिष्य एवं दामाद 'जामालि' द्वारा प्रस्तुत किया गया
- महावीर के ज्ञान प्राप्ति के 12वें वर्ष उनका जामालि से मतभेद हो गया, जामालि ने संघ छोड़कर बहुरतवाद के सिद्धांत का प्रतिपादन किया
- बहुरतवाद के अनुसार कार्य के पूर्णतया संपन्न होने पर ही पूरा माना जाता था

120. जैन गणधर –

- महावीर ने अपने जीवन काल में 11 अनुयायियों के एक संघ की स्थापना की जो 'गणधर' कहे गए
- इन्हें अलग अलग समूहों का अध्यक्ष बनाया गया
- अपने समूह से सम्बंधित वैचारिक निर्णय के लिए काफी हद तक स्वतंत्र थे

121. सल्लेखना –

- सल्लेखना का विग्रह 'सत + लेखना' के रूप में होता है जिसका अर्थ है अच्छाई का लेखा-जोखा
- इस दर्शन में अहिंसा व काय क्लेश पर अत्यधिक बल दिया गया है
- उपवास द्वारा प्राण त्याग को श्रेयस्कर माना गया है

122. आगम –

- जैन साहित्यों को आगम की संज्ञा दी जाती है जिसके अंतर्गत 12 अंग, 12 उपांग, एवं 10 प्रकीर्ण आदि को शामिल किया जाता है
- आगम ग्रंथों की रचना संभवतः श्वेताम्बर सम्प्रदाय के आचार्यों द्वारा की गयी है
- सामान्यत इनकी भाषा अर्धमागधी प्राकृत एवं संस्कृत है

123. महामस्तकभिषेक –

- श्रवणबेलगोला में प्रत्येक 12 वर्ष में महामस्तकभिषेक का आयोजन किया जाता है
- यह आयोजन गोमतेश्वर/बाहुबली की मूर्ति के सम्मान में किया जाता है
- ऐसा माना जाता है की बाहुबली ऋषभदेव के पुत्र थे

124. बावनगजा –

- जैन धर्म का प्रमुख तीर्थस्थल
- मध्यप्रदेश के 'बडवानी' जिले में अवस्थित
- जैन धर्म के प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव की 26 मीटर की प्रतिमा स्थित है
- संभवतः 12वें शताब्दी में निर्मित

125. भद्रबाहु –

- ये प्रसिद्द जैन आचार्य थे जो जैन धर्म के अनुसार अंतिम 'श्रुतकेवली' माने जाते हैं
- जब मगध में 12 वर्षों का भीषण अकाल पड़ा तब ये चन्द्रगुप्त मौर्य के साथ 'श्रवणबेलगोला' जा कर सल्लेखना के द्वारा अपना प्राण त्याग दिया
- भद्रबाहु के अनुयायी दिगंबर कहलाये एवं इन्होने प्रथम जैन संगीति में भाग नहीं लिया

126. प्रथम जैन संगीति –

- समय - चतुर्थ शताब्दी ईसा पूर्व
- स्थान – पाटलिपुत्र अध्यक्ष – स्थूलभद्र
- इसमें जैन धर्म का विभाजन श्वेताम्बर एवं दिगंबर के रूप में हुआ

127. द्वितीय जैन संगीति –

- समय – 513/526 ईस्वी
- स्थान – वल्लभी अध्यक्ष – देवर्धिगण / क्षमाश्रमण
- इसमें आगम ग्रंथों का संकलन किया गया

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

128. महाभिनिष्क्रमण –

- चार महत्वपूर्ण दृश्य देखने के पश्चात गौतम बुद्ध के मन में वैराग्य की भावना जागी
- 29 वर्ष की अवस्था में घोड़ा 'कन्थक' एवं सारथी 'चाण' की सहयता से महात्मा बुद्ध ने गृह त्याग किया
- बौद्ध ग्रंथो में इस घटना 'महाभिनिष्क्रमण' कहा गया

129. धर्मचक्रप्रवर्तन –

- बुद्ध द्वारा अपना प्रथम उपदेश सारनाथ (ऋषिपत्तनम) में 5 ब्राम्हणों को दिया गया
- बौद्ध धर्म में इस घटना को धर्मचक्रप्रवर्तन की संज्ञा दी जाति है

130. महापरिनिर्वाण –

- महात्मा बुद्ध द्वारा शरीर त्याग की घटना
- स्थान – कुशीनगर
- महापरिनिर्वाण के पश्चात महात्मा बुद्ध के शरीर धातु के आठ भाग किये गये और उन पर स्तूपों का निर्माण किया गया

131. स्तूप –

- स्तूप का शाब्दिक अर्थ है –'वस्तु का ढेर'
- बौद्ध धर्म में स्तूप का विशेष महत्व है
- सम्राट अशोक ने 'साँची' सहित पूरे भारत में लगभग 84 हज़ार स्तूपों का निर्माण करवाया

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

132. हर्मिका –

- यह स्तूप का महत्वपूर्ण भाग होता है जिसमे किसी श्रेष्ठ बौद्ध विद्वान के शारीरिक अवशेष अथवा उनके द्वारा उपयोग की गयी वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है
- यह अंड के उपर अवस्थित होता है
- साँची केप्रथम महास्तूप में भगवान बुद्ध के अवशेष एवंतृतीय स्तूप में महामोंदगलायन एवंसारिपुत्र की अस्थियाँ रखी हुई है

133. चैत्य –

- चैत्य का शाब्दिक अर्थ होता है - चिता सम्बन्धी
- बौद्ध धर्म के पूजा स्थलों को चैत्य की संज्ञा दी जाती है
- कुछ प्रमुख चित्रों के अंतर्गत – कार्ले का चैत्य

134. विहार –

- बौद्ध चैत्यों के पास भिक्षुओं के रहने के लिए निवास स्थान बनाया जाता है जिसे विहार कहा जाता है

135. बौद्ध त्रिरत्न –

- बौद्ध धर्म में त्रिरत्नों का विशेष महत्व है
- त्रिरत्न निर्वाण प्राप्ति में सहायक है
  - ✓ बुद्ध

- ✓ धम्म
- ✓ संघ

136. आर्य सत्य –

- बौद्ध धर्म के मूल आधार के रूप में चार आर्य सत्य मौजूद हैं
  - ✓ दुःख
  - ✓ दुःख समुदाय
  - ✓ दुःख निरोध
  - ✓ दुःखनिरोध गामिनी प्रतिपदा

137. निर्वाण –

- निर्वाण का अर्थ है – दीपक का बुझ जाना अर्थात जीवन चरण के चक्र से मुक्त हो जाना
- निर्वाण को बौद्ध धर्म के अंतर्गत सर्वोच्च सत्य माना गया है
- निर्वाण प्राप्त व्यक्ति की त्रिष्णाओं का अंत हो जाता है

138. क्षणिकवाद –

- क्षणवाद को प्रमुख दर्शन के रूप में स्वीकार किया जाता है
- जिसके अनुसार संसार की कोई भी वस्तु स्थिर नहीं है अर्थात यह संसार नश्वर है

139. उपसम्पदा –

- बौद्ध धर्म के अनुसार संघ में प्रविष्ट होने को उपसंपदा की संज्ञा दी जाती है
- संघ को बौद्ध त्रिरत्नों के अंतर्गत शामिल किया जाता है
- संघ की सदस्यता लेने वालों को पहले श्रमण का दर्जा मिलता है, 10 वर्ष के पश्चात उसे भिक्षु का दर्जा प्राप्त होता है

140. बोधिसत्व –

- बोधिसत्व ऐसे व्यक्ति हैं जो निर्वाण प्राप्त कर चुके हैं साथ ही अन्य व्यक्तियों को निर्वाण प्राप्त करने में सहायता उपलब्ध करा सकते हैं
- ये मानव या पशु किसी रूप में भी हो सकते हैं
- कुछ प्रमुख बोधिसत्व – वज्रपाणी, पद्मपाणी

141. त्रिपिटक –

- बौद्ध साहित्य के अंतर्गत त्रिपिटकों को शामिल किया जाता है
- विनयपिटक – संघ के नियम
- सुत्तपिटक – बौद्ध धर्म के उद्देश्य
- अभिधम्मपिटक – बौद्ध धर्म के दार्शनिक सिद्धांत

142. जातक कथाएं –

- महात्मा बुद्ध के पूर्व जन्म की कथाएं जातक कथाएं कहलाती हैं
- भारतीय कला साहित्य के प्राचीन ग्रंथों में से एक है
- इनकी संख्या 500 से अधिक है

143. हीनयान –

- बौद्ध धर्म की एक शाखा
- हीनयानी बौद्ध धर्म के प्राचीन आदर्शों को मूल स्वरुप में बनाए रखने के समर्थक हैं
- हीनयान में बुद्ध को एक 'महापुरुष' माना गया है

144. महायान –

- महायान बौद्ध धर्म की एक प्रमुख शाखा है
- महायान का शाब्दिक अर्थ है –'उत्कृष्ट मार्ग'
- महायान में बुद्ध को एक 'देवता' माना गया है

145. वज्रयान –

- बौद्ध धर्म में छठी शताब्दी ईस्वी में वज्रयान के रूप एक नयी शाखा का उदय हुआ
- यह मुख्यतः बंगाल एवं बिहार में प्रचलित था
- इसमें तंत्र-मन्त्र पर बल दिया गया है तथा इसमें गौतम बुद्ध की अनेक पत्नियों की कल्पना की गयी है

146. लिंगायत –

- बामन पुराण में शैव सम्प्रदाय के अंतर्गत लिंगायत अथवा वीर शैव को बताया गया है
- यह सम्प्रदाय दक्षिण भारत में प्रचलित था
- जैसा की नाम से स्पष्ट है ये शिवलिंग की उपासना करते थे भक्ति द्वारा मोक्ष प्राप्ति के मत के समर्थक

147. आण्डाल –

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

- प्रमुख अलवार महिला संत
- इन्हें दक्षिण की मीरा की संज्ञा दी जाती है
- दक्षिण भारत में वैष्णव मत के विस्तार में प्रमुख योगदान

148. अद्वैतवाद -

- आदि शंकराचार्य द्वारा समर्थित दार्शनिक (प्रतिपादक – गौण पादाचार्य) मत
- वेदान्त दर्शन के सबसे प्रभावशाली मतों में से एक
- जिसके अनुसार ब्रह्म-जीव एक हैं जो एकत्ववाद का समर्थन करता है

149. विशिष्टाद्वैतवाद –

- रामानुजाचार्य द्वारा प्रतिपादित दार्शनिक मत
- इसके अनुसार जगत और जीवात्मा दोनों कार्यतः ब्रह्म से भिन्न है फिर भी ब्रह्म से ही उदभूत हैं
- इनके अनुसार जगत मिथ्या नहीं है

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

150. जैन धर्म के पंचव्रतो का उल्लेख करे ?

उत्तर.–जैन धर्म में पांच महाव्रतों/अणुव्रतों का उल्लेख किया गया है जिसमे ऊपर के चार पार्श्वनाथ द्वारा दिए गए थे जबकि अंतिम ब्रह्मचर्य महावीर द्वारा जोड़ा गया था

इसका विवरण अग्रलिखित है

- अहिंसा– जीव की हिंसा या हत्या नहीं करना
- सत्य– सदा सत्य बोलना
- अपरिग्रह– संपत्ति इकठ्ठा न करना
- अस्तेय - चोरी न करना
- ब्रह्मचर्य– इंद्रियो को वश में करना

151. जैन धर्म के प्रमुख साहित्यों का वर्णन करें ?

उत्तर -अब तक ज्ञात जैन साहित्य प्राकृत एवं संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं

जैन साहित्यों को आगम कहा जाता है जिसमे 12 अंग, 12 उपांग, 10 प्रकीर्ण, 6 छेद्सुत्र, 4 मूलसूत्र, 1 नंदी सूत्र व 1 अनुयोगद्वार है ।

- आचरांगसूत्र– इसमें जैन मुनियों क लिए आचार एवं नियम का विवरण उल्लेखित है
- भगवती सूत्र – महावीर के जीवन एवं उनके कृत्यों का वर्णन तथा इसमें सोलह महाजनपदों का भी उल्लेख है ।
- न्यायधम्मकहासुत्त– महावीर की शिक्षाओं का संग्रह ।
- भद्रबाहुचारित– चंद्रगुप्त मौर्या के राज्यकाल की घटनाओं का वर्णन
- कल्पसूत्र– भद्रबाहु द्वारा संस्कृत में रचित, इसमें तीर्थंकरों का जीवन चरित्र वर्णित है ।
- थेराबलि - इसमें जैन सम्प्रदाय के संस्थापकों की सूची दी गयी है ।

अन्य जैन ग्रन्थ

- द्रव्य संग्रह – नेमिचंद
- कुवलयमाला – उधोतन सूरी
- स्याद्वादजरी – मल्लीसेन

152. जैन धर्म के पतन के कारण लिखिए ?

उत्तर.-

- जैन धर्म में स्यादवाद, अनेकान्तवाद, द्वैतवाद, इत्यादि को समझने में जनता असहज महसूस कर रही थी|
- अहिंसा पर अधिक बल दिया गया |
- जैन साहित्यों का लेखन आरम्भ में प्राकृत में किया गया, जनसाधारण की भाषा होने के कारणयह आसन थी किन्तु बाद में साहित्य लेखन संस्कृत में होने लगा जिससे समझना जनता के लिए दुष्कर हो गया |
- जैन मतावलंबियो के बीच आंतरिक मतभेद (श्वेताम्बर एवं दिगंबर) जैन धर्म के पतन का एक प्रमुख कारण सिद्ध हुआ

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

- जैनधर्म में कठोर व्रत आत्म पीड़ा तथा तपस्या आदि पर अधिक बल दिया गया जिसका पालन सामान्य जनता के लिए कठिन सिद्ध हुआ |

153. बौद्ध धर्म में आष्टांगिक मार्ग का उल्लेख करें ?

उत्तर –गौतम बुद्ध ने चार आर्य सत्य में दुःख निरोध का उपाय दुःख निरोध गामिनी प्रतिपदा को को माना है इसे मध्यमा प्रतिपदा या मध्यम मार्ग भी कहते हैं, इस प्रतिपदा में आठ सोपान हैं इसलिए इसे अष्टांगिक मार्ग भी कहते हैं

- सम्यक दृष्टि– वस्तु के वास्तविक स्वरुप की समझ
- सम्यक संकल्प–चित्त से राग-द्वेष नहीं करना, सदाचरण के विपरीत कार्य न करने का संकल्प लेना
- सम्यक वाक्– सत्य एवं मधुर बोलने का अभ्यास
- सम्यक कर्मान्त – सत्कर्मों का अनुसरण, प्राणियों के जीवन की रक्षा
- सम्यक आजीव– मेहनत से आजीविका अर्जन करना
- सम्यक व्यायाम–आष्टांगिक मार्ग का पालन करने का अभ्यास करना
- सम्यक स्मृति – सात्विक भाव
- सम्यक समाधि – एकाग्रता

154. हीनयान एवं महायान की मूलभूत भिन्नताओ को स्पष्ट करें?

उत्तर.–बौद्ध धर्म का विभाजन दो शाखाओ में किया गया था जिसका विवरण निम्लिखित है

हीनयान	महायान
• इसमें गौतम बुद्ध को महापुरुष माना गया |	• गौतम बुद्ध को देवता मानते थे |
• हीनयान में बुद्ध को प्रतीको के रूप में दर्शाया गया |	• इसमें मूर्ती पूजा पर बल दिया गया |
• इनकी साधना पद्धति कठोर थी |	• इनके सिद्धांत सहज थे |
• हीनयान स्वयं के प्रयत्नों पर बल देता है |	• महायान गुणों के स्थनान्तरण की बात करता है |
• साहित्य – पाली भाषा	• साहित्य - संस्कृत भाषा
• यह व्यक्ति वादी अवधारणा पर आधारित था	• इसमें पर सेवा एवं परोपकार पर बल दिया गया है
• इसका आदर्श अर्हत पद की प्राप्ति है	• इसमें बोधिसत्व की परिकल्पना विद्यमान है

155. बौद्ध धर्म की लोकप्रियता का कारण लिखिए ?

उत्तर.-

- धार्मिक वाद विवाद का न होना जिसद कारण जन साधारण आकर्षित हुआ |
- लोकभाषा पालि में उपदेश दिया गया |
- वर्ण व्यवस्था की निंदा करने से निम्न वर्गों का समर्थन |

- बौद्ध धर्म को राजकीय संरक्षण प्राप्त होना |
- बुद्ध का उपदेश एवं व्यक्तित्व प्रभावशाली होना |
- बौद्ध धर्म का लचीलापन (मध्यम मार्ग अपनाना)
- समय समय पर बौद्ध संगीतियों का आयोजन |

156. बौद्ध एवं जैन धर्म का तुलनात्मक अध्ययन कीजिये ?

उत्तर.-

समानतायें	असमानतायें
• दोनों धर्म अनीश्वरवादी थे	• बौद्ध मत मध्यम मार्ग का उपदेश बताता है जबकि जैन धर्म कठोर तपस्या, आत्म हत्या (सल्लेखना) की मान्यता है
• दोनों धर्मो में वैदिक सिद्धांतो का खंडन किया गया	• बौद्ध धर्म में जाति प्रथा की कठोर निंदा की गयी है जबकि जैन धर्म में ऐसा नहीं है
• दोनों में कर्म एवं पुनर्जन्म पर बल दिया गया	• जैन धर्म आत्मा को शाश्वत मानता है किन्तु बौद्ध धर्म ईश्वर एवं आत्मा दोनों को ही नहीं मानता है
• दोनों धर्मो द्वारा जाति प्रथा एवं लिंग भेद की निंदा	• जैन धर्म में बौद्ध धर्म की अपेक्षा अहिंसा व अपरिग्रह पर अधिक बल दिया गया है
• दोनों धर्मो में वेदों की प्रमान्यता के प्रति अनास्था है	• जैन धर्म का विकास भारत के बाहर नहीं हुआ जबकि बौद्ध धर्म वैश्विक है

157. बौद्ध संगीतियों पर टिप्पणी लिखें ?

उत्तर– प्रमुख बौद्ध संगीतियों का विवरण अग्रलिखित है –

संगीति	समय	स्थल	अध्यक्ष	संरक्षक	कार्य
प्रथम	483 ई.पू.	राजगीर	महाकश्यप	अजातशत्रु	सुत्तपिटक एवं विनयपिटक की रचना
द्वितीय	383 ई.पू.	वैशाली	सबकामी/स्थवीरयश	कालाशोक	संघ महासंघिक व स्थवीरयश में बंटगया
तृतीय	250 ई.पू.	पाटलिपुत्र	मोगलिपुत्तिस	अशोक	अभिधम्मपिटक का संकलन
चतुर्थ	98 ई.पू.	कुंडलवन	वसुमित्र	कनिष्क	हीनयान एवं महायान में विभाजन

158. बौद्ध धर्म के पतन के निम्नलिखित कारण थे ?

उत्तर.-

1. बौद्ध धर्म में कर्मकांडों के प्रभाव में वृद्धि |
2. मूर्ति पूजा का प्रारंभ |
3. पालि भाषा त्याग कर संस्कृत को अपनाना |
4. बौद्ध विहारों में कुरीतियों और भोग विलासिता का आरम्भ |
5. राजकीय संरक्षण का अंत एवं उच्च शासकों द्वारा बौद्ध विरोधी दृष्टिकोण |
6. हिन्दू धर्म से बौद्ध धर्म की प्रतिद्वन्दता |

159. भारतीय दर्शन के रूप में षड्दर्शन की विवेचना कीजिए।

उत्तर भारतीय दार्शनिक परम्परा के अन्तर्गत विभिन्न दर्शनों का योगदान है जिनमें षड्दर्शन प्रमुख है। षड्दर्शन के अन्तर्गत सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा और वेदान्त सम्मिलित किए जाते है।

- सांख्य दर्शन — इसके प्रर्वतक महर्षि कपिल को माना जाता है तथा इसका प्राचीन तथा प्रमाणिक ग्रन्थ सांख्यकारिका है। सांख्य दर्शन से आशय साम्यक् ज्ञान दर्शन से है। यह पूर्णत: बौद्धिक एवं सैद्धान्तिम संप्रदाय है।
- योग दर्शन — इसमें सांख्य दर्शन के व्यावहारिक पक्ष का उल्लेख मिलता है। इसके प्रवर्तक महर्षि पतन्जलि को माना जाता है जिनका ग्रन्थ योग सूत्र इस दर्शन का मूल है।
- न्याय दर्शन — इस दर्शन के प्रवर्तक गौतम को माना जाता है। इसमें 16 तत्वों का अस्तित्व स्वीकार किया गया है तथा ईश्वर की सत्ता स्वीकार करने के लिए विभिन्न युक्तियों का प्रयोग किया गया है।
- वैशेषिक दर्शन — इसके प्रवर्तक कणाद मुनि है इसमें विशेष नामक पदार्थ पर बल दिया गया है। परमाणुवाद का उल्लेख मिलता है। इस मत के अनुसार परमाणु निष्क्रिय होते है इन्हें गति प्रदान करने वाली सत्ता ही ईश्वर है।
- मीमांसा दर्शन — इस दर्शन के प्रणेता जैमिनी थे इस दर्शन का प्रमुख लक्ष्य कर्म की महत्ता को प्रतिपादित करना है।
- वेदान्त दर्शन — वादरायण इस दर्शन के प्रवर्तक है। ज्ञानप्रधान होने के कारण इसे उत्तर मीमांसा भी कहा जाता है। इसकी दो शाखाएं अद्वैतवाद एवं द्वैतवाद है।

160. शैव मत से संबंधित पाशुपत सम्प्रदाय एवं कापालिक संप्रदाय क्या थे? वर्णन कीजिये।

उत्तर

- पाशुपत शैव मतों में सबसे प्राचीन सम्प्रदाय है जिसका उत्पत्ति ई.पू. दूसरी शताब्दी में लाकुलिश नामक ब्रह्मचारी द्वारा की गई। इस सम्प्रदाय के अनुयायी लकुलिश को शिव का अवतार मानते है।
- बाणभट्ट ने कादम्बरी में इस सम्प्रदाय का उल्लेख किया है। मध्य प्रदेश के मंदसौर में भी पशुपतिनाथ का प्रसिद्ध मंदिर है जिसमें शिव की अष्टमुखी प्रतिमा स्थापित है।
- कापालिक, पाशुपत के बाद दूसरा शैव सम्प्रदाय है जिसे अपुराणिय माना गया है यह पाशुपत से ही निकला सम्प्रदाय है जिसके उपासक भैरव को शिव का अवतार मानकर उनकी उपासना करते है।

161. आजीवक सम्प्रदाय पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

- आजीवक सम्प्रदाय की स्थापना मक्खलिपुत्त गोसाल ने की थी वह महावीर स्वामी और गौतम बुद्ध का समकालीन था। युवावस्था में ही वह महावीर स्वामी के सम्पर्क में आया

और जैन धर्म स्वीकार कर लिया परन्तु बाद में मतभेद हो जाने के कारण उसने आजीवन सम्प्रदाय की नींव डाली।

- यह सम्प्रदाय पुरूषार्थ की बजाय नियती में विश्वास रखता है। ''जो होना है वह पूर्व निश्चित है इसे कोई बदल नहीं सकता'' यही इस सम्प्रदाय की विचारधारा है।
- आजीवक सम्प्रदाय के अनुसार समस्त प्राणी नियती के अधीन है न उनमें कोई बल है न कोई पराक्रम वे भाग्य और सहयोग के चक्र में फंसकर ही सुख–दुख: भोगते है।

मौर्य सामाज्य (322 ई.पू. – 185 ई.पू.)

3अंकों के प्रश्नोत्तर

162. अर्थशास्त्र -

- कौटिल्य द्वारा रचित मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी का प्रमुख साहित्यिक स्त्रोत
- राजनीतिक व लोक प्रशासन पर लिखी गयी पहली प्रमाणिक पुस्तक
- अर्थशास्त्र में 15 अधिकरण 180 प्रकरण एवं 6000 श्लोक हैं

163. अमित्रचेट्स –

- चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी 'बिन्दुसार' को 'अमित्रघात' भी कहा जाता था
- यूनानी लेखकों ने इसे इसे 'अमित्रचेट्स' की संज्ञा दी है
- यह 'आजीवक' सम्प्रदाय का अनुयायी था

164. सप्तांग सिद्धांत –

- कौटिल्य ने अपनी पुस्तक अर्थशास्त्र में सप्तांग सिद्धांत का प्रतिपादन किया
- जिसके अंतर्गत राज्य रुपी शरीर को 7 अंगों से निर्मित बताया है
- सप्तांग के अंतर्गत स्वामी, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष, दंड एवं मित्र

165. मुद्राराक्षस –

- 'विशाखदत्त' द्वारा संस्कृत भाषा में रचित नाटक
- मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी का प्रमुख स्त्रोत
- इसमें विशाखदत्त ने भावुकता, कल्पना आदि के स्थान पर जीवन संघर्ष की यथार्थता का अंकन किया है

166. इण्डिका –

- ग्रीक लेखक 'मेगस्थनीज' द्वारा रचित पुस्तक
- मौर्य कालीन भारत की ऐतिहासिक जानकारी का प्रमुख स्त्रोत
- जातियों के वर्णन, दास प्रथा एवं अकाल के वर्णन को लेकर इनका विवरण भ्रामक प्रतीत होता है

167. मेगस्थनीज –

- यह 'सेल्यूकस निकेटर' का राजदूत था
- चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में भारत आया
- इसकी पुस्तक का नाम 'इंडिका' है

168. देवनामपियदसी –

- अशोक के अभिलेखों में स्वयं के लिए प्रयुक्त शब्द
- जिसका अर्थ है 'देवों का प्रिय'
- अशोक का पौत्र दशरथ भी इस स्वयं के लिए इस उपाधि का प्रयोग करता था

169. बराबर की पहाड़ियां –

- वर्तमान बिहार राज्य में स्थित मौर्यकालीन इतिहास के साक्ष्य
- अशोक ने आजीवकों के रहने के लिए बराबर की पहाड़ियों में चार गुफाओं का निर्माण करवाया
- चारों गुफाओं के नाम – सुदामा, लोमस ऋषि, कर्ण चोपार, विश्व झोपड़ी

170. रज्जुक -

- अशोक द्वारा धम्म के प्रचार के लिए नियुक्त प्रमुख न्यायिक अधिकारी
- यह जनपद का प्रमुख अधिकारी था
- अशोक के तीसरे शिलालेख में उल्लेख

171. मौर्यकाल में तीर्थ –

- मौर्यकाल में नियुक्त उच्च अधिकारी
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र 18 तीर्थों की जानकारी प्राप्त होती है
- कुछ प्रमुख तीर्थ – समाहर्ता, सन्निधाता एवं युवराज

172. मौर्यकाल में अध्यक्ष –

- अध्यक्ष विभिन्न विभागों के प्रमुख हुआ करते थे और मंत्रियों के निरिक्षण में कार्य करते थे
- अर्थशास्त्र में 26 अध्यक्षों का उल्लेख मिलता है।
- कुछ प्रमुख अध्यक्ष – सीताध्यक्ष, लोहाध्यक्ष, पत्तनाध्यक्ष

प्रयासIAS An Institute for MPPSC Examination

173. सेल्यूकस निकेटर –

- 'सिकंदर' का सेनापति था
- उसकी मृत्यु के पश्चात 'बेबीलोन एवं सीरिया' का शासक बना
- भारत पर आक्रमण के दौरान चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित हुआ एवं संधिस्वरूप अपनी पुत्री 'हेलेना' का विवाह उससे करते हुए उसे एक बड़ा क्षेत्र भी प्रदान किया

174. धर्मस्थीय एवं कंटकशोधन –

- ये मौर्यकाल के क्रमशः दीवानी एवं फ़ौजदारी न्यायालय थे
- हालाँकि सर्वोच्च न्यायालय राजा का न्यायालय हुआ करता था
- धर्मस्थीय के न्यायाधीश को 'धर्मस्थ' एवं कंटकशोधन के न्यायाधीश को 'प्रदेष्टा' कहा जाता था

175. सारनाथ स्तम्भ –

- मौर्यकालीन अशोक निर्मित एक प्रमुख स्तम्भ अभिलेख है जो वर्तमान में उत्तरप्रदेश के 'वाराणसी' जिले में अवस्थित है
- यह लाल बलुआ पत्थर की बनी एकाश्म संरचना है
- शीर्ष में चार स्तम्भ बने हैं एवं नीचे की ओर चार पशु अंकित हैं
-

176. अशोक के अभिलेख की लिपियाँ -

- मुख्यतया 'ब्राह्मी लिपि' एवं 'प्राकृत भाषा' का प्रयोग किया गया है
- इसके अतिरिक्त –
  - ✓ खरोष्ठी
  - ✓ आरमाईक
  - ✓ ग्रीक/यूनानी

177. जेम्स प्रिन्सेप -

- ईस्ट इण्डिया कंपनी के एक अधिकारी रहे
- 1837 ईस्वी में सर्वप्रथम ब्राह्मी एवं खरोष्ठी लिपियों में निर्मित अशोक के अभिलेखों को पढने में सफलता प्राप्त की
- जेम्स प्रिन्सेप, एशिआटिक सोसाइटी ऑफ़ बंगाल के प्रधान संपादकों में से एक रहे

178. धम्म महामात्र –

- मौर्य काल में धम्म के प्रचार एवं जनता के सुख के लिए कार्यरत नियुक्त अधिकारी
- अशोक के 5वें शिलालेख में प्रमुखता से उल्लेखित
- अशोक ने अपने राज्याभिषेक के 14वें वर्ष इन अधिकारियों की नियुक्ति की

179. अशोक का 13वां शिलालेख –

- राज्याभिषेक के 9वें वर्ष अशोक द्वारा कलिंग पर विजय का वर्णन प्राप्त होता है
- कलिंग वर्तमान भारत के ओडिशा प्रान्त में स्थित है
- इसमें मौर्य साम्राज्य के पड़ोसी राज्यों का वर्णन प्राप्त होता है

180. अशोक का मास्की अभिलेख –

- वर्तमान में कर्नाटक राज्य के मास्की में अवास्थित प्रमुख पुरातात्विक स्थल
- इसमें अशोक ने स्वयं को 'बुद्ध शाक्य' कहा है
- इसके अतिरिक्त इसमें सम्राट अशोक का 'अशोक' नाम प्राप्त होता है

181. दिल्ली टोपरा स्तम्भलेख -

- अशोक कालीन प्रमुख बृहद स्तम्भलेख
- प्रारंभ में हरियाणा के टोपरा में स्थित था
- फिरोजशाह तुगलक द्वारा अपने शासन काल में दिल्ली लाया गया

182. मौर्यकालीन इतिहासवर्णक प्रमुख बौद्ध ग्रन्थ –

- दीपवंश
- महावंश
- दिव्यावदान

183. मौर्य शासक दशरथ –

- अशोक का पौत्र एवं प्रमुख शासक था
- अपने कुछ अभिलेखों में स्वयं को देवनामपिय की उपाधि देता है
- नागार्जुनी पहाड़ी (बिहार स्थित) आजीवक सम्प्रदाय के लिए 3 गुफाओं का निर्माण किया

184. मौर्यकालीन विदेशी दरबारी दार्शनिक -

- मेगास्थनीज – चन्द्रगुप्त मौर्य के दरबार में
- डाईमेकस – बिन्दुसार के दरबार में
- डायनोसियस – बिन्दुसार एवं अशोक के काल में

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

185. मौर्यकाल से सम्बंधित जानकारी के विभिन्न स्त्रोत ?

उत्तर.-

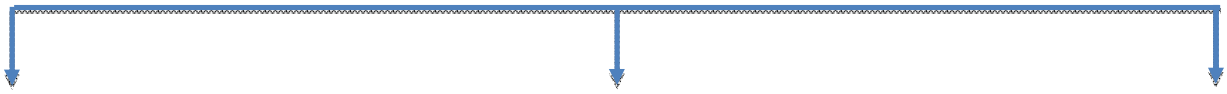

साहित्यिक साक्ष्य — विदेशी विवरण

पुरातात्विक स्त्रोत

बौद्ध साहित्य – दीपवंश, महावंश, — मेगस्थनीज — अशोक के अभिलेख

जातक कथाएं — स्ट्रेबो

रुद्रदमन के अभिलेख

जैन साहित्य – कल्प सूत्र, परिशिष्टपर्वन — कर्टियस

भवन : स्तूप, गुहा

अन्य साहित्य – अर्थशास्त्र, मुद्राराक्षस

मुद्रा : आहत मुद्रा

कथासरित्सागर, इंडिका

186. अर्थशास्त्र में वर्णित सप्तांग सिद्धांत की चर्चा करें ?

उत्तर.- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सात अंगो का वर्णन किया है जिसमे राज्य के सभी अंगो की तुलना शरीर के अंगो से की गयी है इसे सप्तांग सिद्धांत कहा जाता है

राजा – सिर

- कौटिल्य ने राजा को राज्य का केंद्र माना है इसलिए राजा की तुलना सिर से की है जो समस्त शरीर का संचालन करता है

अमात्य – आँख

- अमात्य वह व्यक्ति होता है जो राजा को उसके कार्य में सहयोग कर सके । कौटिल्य के अनुसार मंत्री को चतुर, बुद्धिमान, धैर्यवान, उत्साही, युद्ध कलामे माहिर तथा स्वामी भक्त होना चाहिए

जनपद – जंघा

- कौटिल्य के अनुसार हर राज्य का भूभाग होना चाहिए, भूमि उपजाऊ होनी चाहिए, जो राज्य की जनता का भरण पोषण कर सके

दुर्ग – बाँह

- इस अंग में कौटिल्य ने दुर्ग की तुलना शरीर की भुजाओं से की है, जिस तरह हमारे हाथ शरीर की रक्षा करते हैं उसी प्रकार दुर्ग ऐसा हो जो चारों दिशाओं से राज्य की रक्षा कर सके

कोष – मुख

- कौटिल्य के अनुसार कोष सोने, चाँदी, नकदी आदि से भरा हो जो किसी आपदा या युद्ध में काम आ सके

दंड/बल/सेना – मस्तिष्क

- सेना साहसी, बलशाली, उध कला में निपुण होने के साथ साथ राष्ट्रभक्ति की भावना से ओत प्रोत होनी चाहिए

मित्र – कान

- कौटिल्य के अनुसार राज्य की समृद्धि तथा आपदा के समय सहायता के लिए राज्य को अच्छे मित्रों की आवश्यकता होती है

187. अशोक के धार्मिक दृष्टिकोण पर टिप्पणी लिखिए ?

उत्तर.-

- अशोक आरम्भ में ब्राह्मण धर्म का मतानुयायी था किन्तु बाद में बौद्ध धर्म का अनुयायी बना
- दिव्यावदान के अनुसार अशोक ने बौद्ध धर्म की दीक्षा उपगुप्त से ली
- बौद्ध धर्म ग्रहण करने के बाद अशोक, महात्मा बुद्ध के चरणों से पवित्रपवित्र हुए स्थानों पर गया तथा उनकी पूजा की
- अपनी धार्मिक यात्रा के दौरान अशोक ने लुम्बिनी में बलि नामक धार्मिक कर को समाप्त कर दिया तथा भूमि कर घटा कर 1/8 कर दिया
- अशोक ने धम्म के प्रचार हेतु अपने पुत्र महेंद्र तथा पुत्री संघमित्रा को श्रीलंका भेजा

188. सेल्यूकस से युद्ध ने चन्द्रगुप्त मौर्य की स्थिति को सुदृढ़ किया, टिप्पणी करें ?

उत्तर- सिकंदर की मृत्यु के पश्चात बेबीलोन एवं सीरिया का शासक 'सेल्यूकस निकेटर' बना बैक्ट्रिया विजय के बाद उसने पश्चिमोत्तर भारत पर हमला किया तत्कालीन शासक चन्द्रगुप्त मौर्या से वह पराजित हुआ इसके उपरांत चन्द्रगुप्त मौर्य और सेल्यूकस के मध्य संधि हुई जिसके तहत सेल्यूकस ने अपनी पुत्री 'हेलेना' का विवाह चन्द्रगुप्त के साथ किया दहेज़ के रूप में चार राज्य प्रदान किये -

- एरिया
- अराकोशिया
- जेड्रोशिया
- पेरिपेनिषदायी

उसने अपना एक दूत 'मेगस्थनीज' भी चन्द्रगुप्त के दरबार में भेजा इस वैवाहिक सम्बन्ध व क्षेत्र विस्तार ने चन्द्रगुप्त की स्थिति और सुदृढ़ कर दी चन्द्रगुप्त ने छःलाख की सेना लेकर जम्बूद्वीप पर अधिकार कर लिया उसका साम्राज्य उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में मैसूर तक पूर्व में बंगाल से पश्चिम में हिन्दुकुश पर्वत तक विस्तृत हो गया

स्पष्ट है कि सेल्यूकस से युद्ध 305 ई.पू.- 304 ई.पू. के पश्चात चन्द्रगुप्त मौर्य की स्थिति एक चक्रवर्ती सम्राट के रूप में और मजबूत हो गयी

189. अशोक की धम्म नीति के स्वरुप व विशेषताओं को स्पष्ट करें ?

उत्तर - सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल में कई उपलब्धिया अर्जित की, जिसमे सर्वाधिक महत्वपूर्ण थी अशोक की धम्म नीति

अशोक के धम्म के स्वरुप व विशेषताओं को निम्न बिन्दुओं के अन्तरवात देखा जा सकता है

- अशोक का धम्म विभिन्न धर्मों में विद्यमान अच्छे विचारों का समेकन था
  - बौद्ध धर्म से नैतिक शिक्षाएं
  - ब्राह्मण धर्म से दंड विधान और अनुशासन
  - आजीवकों से ऐन्द्रजातिक पद्धति
- अशोक का धम्म एक आचारसंहिता थी, जैसे माता-पिता का आदर, गुरुजनों का सम्मान, गरीबों के प्रति दया, पर्यावरण एवं पशुओं का संरक्षण, अल्पसंग्रह, अल्पव्यय, सदैव सत्य बोलना, बोलने में संयम बरतना, विचार सदैव शुद्ध रखना, अहंकार, क्रोध और क्रूरता का अभाव
- धम्म का उद्देश्य भौतिक के साथ आध्यात्मिक उत्थान करना भी था
- धम्म अहिन्सात्मकता की अवधारणा पर आधारित था
- धम्म लोक कल्याण की अवधारणा पर आधारित था

स्पष्ट है कि अशोक का धम्म अपने स्वरुप में बहुआयामी तथा बहुउद्देश्य प्राप्ति से प्रेरित था

190. मौर्यकालीन समाज विशेषताओं में द्वन्द समेटे है, चर्चा करें ?

उत्तर - किसी भी समाज में प्रायः एक साथ ही कई प्रगतिशील तत्व तो कई प्रगतिशीलता को बाधित करने वाले तत्व मौजूद रहते हैं। मौर्यकालीन समाज भी स्वयं में इस द्वन्द को समेटे हुए था

An Institute for MPPSC Examination

प्रगतिशीलता बाधक तत्व –

- वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रचलन था जिससे ब्रह्मानो की स्थिति सर्वोच्च एवं शूद्रों की स्थिति निम्नतर थी
- जाति व्यवथा का विस्तार हुआ
- अस्पृश्यता का विस्तार हुआ
- स्त्रियों की दशा में गिरावट हुई सटी प्रथा के साक्ष्य प्राप्त होते हैं पर्दा प्रथा तथा वैश्यावृत्ति का प्रचलन था
- दास व्यवस्था का विस्तार हुआ अर्थशास्त्र में 9 प्रकार के दासों का उल्लेख मिलता है
- वर्ण के आधार पर धर्म, व्याकरण, अर्थ एवं राजनीति की शिक्षा दिए जाने का प्रावधान था

प्रगतिशील तत्व –

- अनुलोम एवं प्रतिलोम दोनों तरह के विवाह प्रचलन में थे, जो सामाजिक समरूपता में सहायक था
- स्त्रियों को पुनर्विवाह एवं नियोग की अनुमति थी
- स्त्रियों को प्रशासन में शामिल किया जाता था
- स्त्रियों को तलाक लेने का अधिकार प्राप्त था
- वेश्यावृत्ति को राजकीय संरक्षण प्राप्त था
- दासों को यह अधिकार प्राप्त था की वो मालिक को धन देकर दासता से मुक्त हो सकते थे

- सती प्रथा के स्पष्ट साक्ष्य नहीं हैं

स्पष्ट है कि मौर्यकालीन समाज अपने स्वरुप में द्वंदात्मक था

191. अशोक की धम्म के सीमित प्रभाव के कारणों को स्पष्ट करें ?

उत्तर - सम्राट अशोक ने अपने शासनकाल में कई उल्लेखनीय कार्य किये हैं जिसमे एक महत्वपूर्ण कार्य अशोक की धम्म नीति थी

अशोक की धम्म नीति तत्कालीन राजनीतिक,सामाजिक एवं आर्थिक आवश्यकताओं से प्रेरित थी साथ ही उसका उद्देश्य प्रजा का भौतिक और आध्यात्मिक उत्थान करना था किन्तु उसके धम्म का प्रभाव सीमित रहा इसके पीछे निम्नलिखित कारण उत्तरदायी रहे

- अशोक एक कुशल प्रशासक तो था लेकिन महात्मा बौद्ध और महावीर के समान धर्मस्तरीय नहीं था
- योग्य सहयोगियों की कमी
- प्रभावी जन जुडाव का अभाव
- नियुक्त किये गए धम्म महापात्र स्वयं धम्म के वास्तविक स्वरुप को नहीं समझ सके
- अन्य धर्म के अनुयायियों द्वारा तीव्र विरोध
- तत्कालीन समाज परम्परावादी व रुढ़िवादी था जबकि अशोक के धम्म में निहित विचार नवीन एवम प्रगतिशील थे
- उपरोक्त कारणों से धम्म को अपेक्षित सफलता तो नही मिली किन्तु सामजिक स्थिरता कायम करने में अशोक सफल रहा

An Institute for VPPSC Examination

192. मौर्यकालीन साक्ष्यों के रूप में अशोक के अभिलेखों का महत्व स्पष्ट करें ?

उत्तर - अशोक प्रथम ऐसा शासक था, जिसने अपने अभिलेखों के माध्यम से जनता को संबोधित किया जनता से संपर्क साधने के माध्यम के रूप में अशोक का यह प्रयास अभूतपूर्व था अभी तक अशोक के लगभग 50 अभिलेख खोजे जा चुके हैं जो मुख्यतः राजकीय अथवा व्यापारिक मार्गों पर अवस्थित हैं मौर्यकालीन इतिहास की जानकारी के स्त्रोत के रूप में इन अभिलेखों का व्यापक महत्व है प्रायः अभिलेखों की लिपि 'ब्राम्ही' तथा भाषा 'प्राकृत' है ब्राम्ही के अतिरिक्त कुछ अभिलेख खरोष्ठी, ग्रीक एवं अरमाइक लिपि में भी प्राप्त होते हैं अशोक के अभिलेखों का विभाजन तीन वर्गों में किया जा सकता है

अशोक के अभिलेखों से मौर्यकालीन आंतरिक नीति, विदेश नीति, धार्मिक नीति, तथा अशोक के व्यक्तिगत जीवन की जानकारी प्राप्त होती है इतिहास की जानकारी के स्त्रोत के रूप में इनका व्यापक महत्व है

193. मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण लिखिए ?

उत्तर.-मौर्य साम्राज्य के पतन के निम्नलिखित कारण थे

- मौर्य साम्राज्य का सबसे मजबूत आधार सुयोग्य एवं दूरदर्शी सम्राट था किन्तु 232 ई.पू. में अशोक की मृत्यु के बाद साम्राज्य पतन की ओर अग्रसर हुआ
- अयोग्य तथा निर्बल उत्तराधिकारी
- अत्यधिक करारोपण एवं प्रांतीय शासकों के अत्याचार
- प्रशासन का अत्यधिक केंद्रीकृत होना
- सम्राट अशोक की अहिंसक एवं शांतिप्रिय नीति

194. मौर्य साम्राज्य की स्थापना एवं इसके सुदृढ़ीकरण में चन्द्रगुप्त मौर्य की भूमिका बताईये?

उत्तर

- चन्द्रगुप्त मौर्य ने यूनानी आक्रमण से उत्पन्न संकट तथा मगध के शासक से त्रस्त जनता को मुक्ति दिलाने के लिए कौटिल्य के सहयोग से मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।
- अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए उसने एक विजयी सेना का गठन किया।
- मगध की जनता के सहयोग से नंद शासक धनानन्द को पराजित कर 321 ई. पू. में मगध का सम्राट बना।
- चन्द्रगुप्त की महान उपलब्धि सेल्यूकस निकेटर से युद्ध एवं विजयी थी। इसके फलस्वरूप निर्मित वैवाहिक सम्बंधो तथा हेरात, कन्धार, बलूचिस्तान और काबुल जैसे प्रान्तों की प्राप्ति ने चन्द्रगुप्त को युनानियों का नैतिक समर्थन एवं मजबूती प्रदान की।
- साम्राज्य की स्थापना के पश्चात उसने प्रशासन को सुगठित करने का कार्य किया, अनेक पदाधिकारियों की नियुक्ति की, इन अधिकारियों को तीर्थ या अमात्य कहा गया जिनकी संख्या 18 थी।
- उसने विशाल व स्थायी सेना का गठन किया सेना के नियंत्रण के लिए 30 सदस्यीय परिषद थी जो ६ समितियों में विभाजित थी।
- राज्य के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए चन्द्रगुप्त ने विस्तृत राजस्व प्रणाली की व्यवस्था भी की। जिसके लिए समाहर्ता तथा सन्निधाता जैसे पदाधिकारी नियुक्त किये।

195. कौटिल्य के अर्थशास्त्र पर टिप्पणी लिखिए?

उत्तर

- कौटिल्य द्वारा लिखी गई अर्थशास्त्र राजनीति एवं लोकप्रशासन की पहली प्रमाणिक पुस्तक है। यह मुख्यत: निर्देशित करने वाला ग्रंथ है जिसमें राजा और राज्य के कर्तव्यों को निर्देशित किया गया है।
- अर्थशास्त्र में कुल 15 अधिकरण, 150 प्रकरण, 600 श्लोक है, जिसे अन्य पुरूष की शैली में लिखा गया है।
- अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने अपने साप्तांग सिद्धांत के द्वारा राज्य की सुदृढ़ अवस्था को स्पष्ट रूप से निर्देशित किया है।
- अर्थशास्त्र में कौटिल्य ने 18 तीर्थ, 26 अध्यक्ष, गुप्तचर विभाग, जहाजरानी और भू–राजस्व तथा दास प्रथा का विस्तृत उल्लेख किया है।
- अनेक इतिहासकारो में इस पुस्तक की तीथिक्रम को लेकर विभिन्न मतभेद भी है फिर भी इसे अर्थशास्त्र की एक प्रमाणिक पुस्तक माना जाता है। तथा इसमें प्रस्तुत राजनैतिक सिद्धांतों एवं विचारधाराओं को मौर्यसाम्राज्य के अतिरिक्त अन्य शासकों की सफलता एवं समृद्धि का आधार माना जा सकता है।

196. मेगस्थनीज की इण्डिका पर संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

- कौटिल्य के अर्थशास्त्र के समान ही मेगस्थनीज की इंण्डिका भी मौर्य साम्राज्य के महत्वपूर्ण लक्षणों पर प्रकाश डालती है।
- यह ग्रंथ अपने मूल रूप में उपलब्ध नहीं है फिर भी इसके उद्धरण विभिन्न यूनानी लेखकों के उद्धरणों में प्राप्त होते है।
- इण्डिका में शासक के व्यक्तिगत जीवन का वर्णन, सैन्य प्रशासन का वर्णन, राजस्व प्रशासन का वर्णन तथा उत्तरापथ का वर्णन मिलता है। हालांकि इसके अतिरिक्त कुछ भ्रामक विवरण भी इण्डिका में प्राप्त होते है जैसे 7 जातियों का वर्णन, दास प्रथा का अभाव, अकाल न पड़ने का वर्णन आदि।
- चूंकि कौटिल्य का अर्थशास्त्र निर्देशित करने वाला ग्रंथ है और इण्डिका को प्रत्यक्षदर्शी तरीके से लिखा गया है इसीलिए मौर्ययुगीन इतिहास के महत्वपूर्ण साक्ष्य के लिए इसे मुख्य आधार बनाया जा सकता है।

197. मौर्यकालीन साक्ष्यों के रूप में अशोक के अभिलेखों का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- अशोक प्रथम ऐसा शासक था जिसने अपने अभिलेखों के माध्यम से जनता को सम्बोधित किया। जनता से सम्पर्क साधने के माध्यम के रूप में अशोक का यह प्रयास अभूतपूर्व था।
- अशोक के अभिलेखों का विभाजन 3 भागों में किया गया है –
  - शिलालेख
  - स्तम्भ लेख
  - गुहा लेख
- इन सभी अभिलेखों की भाषा प्राकृत है जबकि इनकी लिपियां स्थान विशेष के आधार पर ब्राह्मी, खरोष्ठी, अरामाईक और यूनानी है।
- शिलालेखों में मौर्य प्रशासन एवं धम्म से संबंधित अनेक बातों का उल्लेख है।
- लघु शिलालेखों में अशोक के व्यक्तिगत जीवन की जानकारी प्राप्त होती है।
- स्तम्भ लेख कलाकृति के आधार पर मौर्य युगीन कला के सर्वश्रेष्ठ नमूने है इन्हें वृहद् एवं लघु स्तम्भ लेखों में बांटा गया है।
- गुहा लेखों में बराबर की पहाड़ी में स्थित सुदामा गुफा, विश्व झोपड़ी तथा कर्ण चोपार गुफा पर अंकित लेख है जिन्हें आजीविकों को दान में दिया गया था।
- इस प्रकार हम कह सकते है अशोक के अभिलेखों से मौर्य कालीन कला, क्षेत्रों की जानकारी तथा मौर्यकाल की नीतियों व प्रशासन की जानकारी प्राप्त होती है।

प्रयासKSG
An Institute for MPPSC Examination

198. ब्राह्मी तथा खरोष्ठी लिपि का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

उत्तर ब्राह्मी लिपि–

- यह विश्व की प्राचीनतम लिपियों में से एक है जिससे देवनागरी सहित अन्य दक्षिण एशियाई तथा दक्षिण पूर्वी एशियाई लिपियों का विकास हुआ।
- बौद्ध धर्म के प्राचीनग्रंथ ललित विस्तार में जिन 64 लिपियों का उल्लेख है उसमें ब्राह्मी लिपि भी शामिल है।
- ब्राह्मी लिपि का विकास तीसरी–चौथी शताब्दी ई. पू. में हुआ यह लिपि बाएं से दाएं लिखी जाती है तथा ब्राह्मी लिपि के सबसे प्राचीन नमूने अशोक के अभिलेखों में प्राप्त होते है।

खरोष्ठी लिपि–

- ब्राह्मी के विपरीत यह दाएं से बाएं लिखी जाती है तथा इसके प्रचनल का क्षेत्र मुख्यत: उत्तर पश्चिमी भारत और पूर्वी अफगानिस्तान था।
- माना जाता है कि यह लिपी ईरानियों के प्रभाव में भारत आई। सम्राट अशोक के शहवाजगढ़ी और मनसेरा के अभिलेख खरोष्ठी में ही लिखे गए थे।
- हिन्द युनानी शासकों के सिक्के युनानी और खरोष्ठी लिपियों में उत्कीर्ण है तथा कुषाण काल में ही यह लिपी प्रचलन में रही।

मौर्योत्तर काल

3 अंकों के प्रश्नोत्तर

199. शुंग वंश–

- 185 ई.पू. में अंतिम मौर्या सम्राट बृहद्रथ की हत्या कर के मगध पर शुंग वंश का शासन स्थापित हुआ
- संस्थापक – पुष्यमित्र शुंग राजधानी - पाटलिपुत्र
- शुंग मूलतः उज्जैन के निवासी एवं ब्राह्मण जाति के थे

200. मौर्योत्तर कालीन विदेशी वंश -

- बृहद मौर्या साम्राज्य के पतन के पश्चात् भारत में कुछ विदेशी वंशों ने शासन किया जिनका क्रम निम्नानुसार है -
  - ✓ इंडो-ग्रीक
  - ✓ शक/सीथियन
  - ✓ पह्लव / पार्थियन
  - ✓ कुषाण

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

201. कण्व वंश –

- शुंग वंश के अंतिम शासक देवभूति की हत्या कर के 75 ई.पू. में 'कण्व वंश' की नीव रखी गयी
- संस्थापक – वसुदेव
- अन्य शासक – भूमिमित्र, नारायण व सुशर्मण

202. महामेघवाहन वंश –

- अपने संस्थापक महामेघवाहन के नाम पर कलिंग के 'चेदि वंश' को महामेघवाहन वंश की संज्ञा जाती है
- इस वंश का सबसे प्रतापी राजा 'खारवेल' था
- इस वंश की जानकारी का प्रमुख स्त्रोत 'हांथीगुम्फा अभिलेख' है

203. महाभाष्य –

- पुष्यमित्र शुंग के पुरोहित 'पतंजलि' द्वारा पाणिनि के अष्टाध्यायी पर लिखा गया टीका
- इसकी रचना ईसा पूर्व द्वितीय शताब्दी में मानी जाती है
- इससे इस बात का प्रमाण मिलता है की विजय के उपरान्त अपने पुरोहित पतंजलि के मार्गदर्शन में अश्वमेध यज्ञ किया

204. वेसनगर अभिलेख –

- वर्तमान मध्यप्रदेश के विदिशा में स्थित
- हिन्द यवन शासक एंटियालकीड्स के राजदूत 'हेलियोडोरस' द्वारा स्थापित
- 'भागवत धर्म' से सम्बंधित 'गरुड़ स्तम्भ'

205. भरहुत -

- वर्तमान मध्यप्रदेश के सतना जिले में अवस्थित
- इससे शुंग काल के विषय में जानकारी प्राप्त होती है

206. विक्रम संवत -

- 57 ईसा पूर्व में प्रारंभ किया गया एक संवत
- हिन्दू पंचांग के रूप में प्रचलित
- मालवा के शासक 'विक्रमादित्य' द्वारा मथुरा के शकों को मालवा से पराजित कर खदेड़ने के उपलक्ष्य में प्रारंभ किया गया

207. नहपान -

- शकों की नासिक शाखा से सम्बंधित एक प्रमुख शासक
- इसने मालवा, गुजरात एवं महाराष्ट्र के एक बड़े भाग पर अपना शासन स्थापित किया
- इसकी राजधानी 'मिन्ननगर' थी

208. रूद्रदामन -

- मौर्योत्तर कालीन प्रमुख शक शासक (कार्दमक वंश) (130 – 150 ईस्वी)
- इसके शासन काल में संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण जूनागढ़ अभिलेख का उल्लेख मिलता है
- इस अभिलेख में मौर्य एवं मौर्योत्तर काल की सिंचाई व्यवस्था का वर्णन है

209. सिमुक -

- सातवाहन वंश का संस्थापक
- इसने अपनी राजधानी 'प्रतिष्ठान / पैठन' में स्थापित की
- इसने महाराष्ट्र, आन्ध्र प्रदेश एवं कर्नाटक के क्षेत्रों पर आधिपत्य स्थापित किया

210. हाल –

- सातवाहन बंश का प्रमुख शासक
- इसने प्राकृत भाषा में 'गाथासप्तसती' नामक पुस्तक की रचना की
- इसके शासनकाल में गुणाढ्य ने प्राकृत भाषा में बृहत् 'कथाकोष' नामक ग्रन्थ की रचना की

211. मिलिन्द्पन्हो –

- प्रमुख बौद्ध ग्रन्थ जिसका शाब्दिक अर्थ है – 'मिलिंद के प्रश्न'
- जिसमे हिन्द-यवन शासक 'मिनांडर' एवं बौद्ध भिक्षु 'नागसेन' के मध्य वाद विवाद (वार्तालाप) एवं उसके पश्चात उसके बौद्ध धर्म के अनुयायी बन जाने की कथा है
- इसमें मिनांडर के लिए 'मिलिंद' शब्द का प्रयोग किया गया है

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

212. कनिष्क -

- 78से105 ईस्वी के मध्य शासन करने वाला एक प्रमुख कुषाण शासक
- इसके काल में कश्मीर के कुण्डलवन में चौथी बौद्ध संगीति का आयोजन किया गया
- इसके काल में मूर्तिकला की गांधार एवं मथुरा शैलियों का विकास हुआ

213. कनिष्क काल के नवग्रह -

- कनिष्क की राजसभा 9 विद्वानों से शुसोभित थी
- जिसमे प्रमुख बौद्ध विद्वान वसुमित्र, अश्वघोष, नागार्जुन एवं पार्श्व थे
- चिकित्सा शास्त्र के प्रमुख जानकार 'चरक' भी इसका हिस्सा था

214. गांधार शैली -

- मूर्तिकला की एक शैली है
- इसे इन्डो-ग्रीक अथवा ग्रीक बुद्धिष्ट शैली भी कहा जाता है
- इसमें बुद्ध एवं बोधिसत्वों की मूर्तिया, काले, हरे एवं नीले स्लेटी पत्थरों पर बनायीं गयी

215. मथुरा शैली -

- मूर्तिकला की एक शैली है जिसका जन्म कनिष्क के काल में मथुरा में हुआ
- मूर्तियों का निर्माण लाल- बालुका पत्थर में किया जाता था
- मूर्तिकला की यह शैली 'आध्यात्मिकता' प्रधान है

216. शक संवत् -

- कुषाण शासक कनिष्क के राज्यारोहण के वर्ष 78 ईस्वी में प्रारंभ किया गया संवत
- वर्तमान में भारत शासन द्वारा अपने सरकारी प्रयोजनों हेतु प्रयुक्त
- इसे 'शालिवाहन शक' के नाम से भी जाना जाता है

PRAYASKSG An Institute for MPPSC Examination

217. माठस –

- प्रमुख शक शासक
- शकों की तक्षशिला शाखा से सम्बंधित
- इसके काल के प्राप्त अनेक सिक्के ऐतिहासिक जानकारी के प्रमुख स्त्रोत के रूप में हैं

218. अश्वघोष -

- बौद्ध विद्वान् एवं दार्शनिक
- कुषाण शासक कनिष्क के राजदरबारी
- चौथी बौद्ध संगीति के उपाध्यक्ष

219. चरक –

- भारतीय आयुर्वेद चिकित्सा के पुरोधा
- इनकी कृत –'चरकसंहिता' है, जिसमे शल्य चिकत्सा की जान्कारती प्राप्त होती है
- कुषाण वंश के राजवैद्य I

220. नानाघाट अभिलेख –

- सातवाहन कालीन ऐतिहासिक जानकारी का प्रमुख स्त्रोत
- यह अभिलेख सातवाहन शासक शातकर्णी पप्रथम की भार्या 'नागनिका' का है
- इसमें भू-अनुदान परंपरा का प्राचीनतम साक्ष्य प्राप्त होता है

221. गौतमीपुत्र शातकर्णी -

- सातवाहन वंश का महानतम शासक (106 – 130 ईस्वी तक)
- इसकी माता बलश्री गौतमी के नासिक अभिलेख में इसे अद्वितीय ब्राह्मण कहा गया
- इसने शक शासक नहपान को पराजित किया

222. विन्ध्यशक्ति –

- यह 'वाकाटक वंश' का संस्थापक था
- इसने नंदिवर्धन (नागपुर) को अपनी राजधानी के रूप में चुना
- ब्राह्मण मत का अनुयायी

223. शुंगकालीन कला के कुछ प्रमुख उदाहरण

- विदिशा का गरुड़ध्वज
- भारहुत व साँची के स्तूपों पर नवीन संरचनाएँ
- अजंता का नवाँ चैत्य मंदिर, नासिक व कार्ले के चैत्य आदि।

224. वसिष्ठीपुत्र पुलुमावी

- गौतमीपुत्र सातकर्णी का पुत्र जो उसके पश्चात् सातवाहन वंश का शासक हुआ।
- उसका शासन काल 130 से 154 ई. तक रहा।

225. सातवाहन काल में भाषा व साहित्य

- सातवाहन काल में प्राकृत भाषा का विकास हुआ व अनेक ग्रंथ व अभिलेख लिखे गये।
- इस काल के सर्वोत्तम कवि हाल ने ''गाथा सप्तशती'' की रचना की तथा कवि गुणाढय ने ''वृहतकथा की रचना की।

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

226. कुषाण कौन थे?

- पश्चिमी चीन की एक यू—ची जाति जो कलान्तर में पाँच शाखाओं में बँट गयी।
- इन्ही में से एक शाखा कोई —चाउआंग थी जो कुषाण कहलाई।

227. हिन्द यवन शासक

- मौर्य साम्राज्य के पतन के पश्चात् पश्मिोत्तर सीमा से भारत पर आक्रमण करने वाले आक्रमणकारी बल्ख (बैक्ट्रिया) के यवन शासक थे।
- भारत में इन्हें हिन्द यवन अथवा हिंद यूनानी (इंडो—ग्रीक) कहा जाता था।

228. मीनाण्डर

- हिन्द यूनानी शासकों में सबसे प्रतापी शासक जिसका काल 150 ई.पू. के लगभग था।
- बौद्ध ग्रंथ मिलिन्दपन्हों से ज्ञात होता है कि नागसेन से प्रभावित होकर मीनाण्डर ने बौद्ध धर्म स्वीकार कर लिया था।

229. चतुर्थ बौद्ध संगीति

- कुषाण शासक कनिष्क के शासनकाल में चतुर्थ बौद्ध संगीति कश्मीर के कुंडलवन में आयोजित हुई थी।
- इसक अध्यक्ष वासुमित्र तथा उपाध्यक्ष अश्वघोष थे।

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

230. मौर्योत्तर काल में यूनानियों के आक्रमण पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर- मौर्योत्तर काल की सबसे प्रमुख घटना भारत पर युनानियों का आक्रमण था

कारण-

- शकों का बढ़ता प्रभाव
- सेल्यूकस द्वारा कमजोर साम्राज्य की स्थापना
- भारत की सीमा में सर्वप्रथम प्रवेश करने का श्रेय युथिडेमस के पुत्र 'डेमेट्रियस प्रथम' को जाता है जिसने 183 ई.पू. में साकल (स्यालकोट) को अपनी राजधानी बनाया
- डेमेट्रियस के बाद यूक्रेटाईड्स ने तक्षशिला को अपनी राजधानी बनाया
- 'मिनांडर' सबसे प्रतापी हिन्द यूनानी शासक हुआ इसे मिलिंद नाम से भी जाना जाता था
- यह पहला शासक था जिनसे सोने के सिक्के चलवाए जिस पर धर्म चक्र अंकित मिलता है
- बौद्ध भिक्षु नागसेन से प्रभावित होकर इसने बौद्ध धर्म अपनाया
- बौद्ध ग्रन्थ मिलिन्द्पन्हो में नागसेन एवं मिलिंद के मध्य हुए वाद-विवाद (वार्तालाप) का उल्लेख मिलता है

231. भारत में यूनानियों के संपर्क का महत्व बताईये ?

उत्तर-

- राजत्व का दैवीय सिद्धांत
- 12 राशियाँ एवं ज्योतिष विद्या यूनानियों की देन है
- सांचों से सिक्का ढालने की विधि
- द्विभाषा युक्त सिक्के
- सर्वप्रथम सोने के लिखित सिक्के
- एंटियालकीड्स के राजदूत 'हेलियोडोरस' ने भागभद्र के विदिशा स्थित दरबार में गरुड़ स्तम्भ की स्थापना की जिसका सम्बन्ध 'भागवत' धर्म से है
- भारत में एक नवीन शैली हेलेनिस्टिक कला का विकास
- मुद्राओं पर राजा का नाम, चित्र व तिथि अंकित करना
- काल गणना, कैलेंडर का प्रयोग, संवत का प्रयोग एवं सप्ताह के सात दिन आदि का विकास
- भारतीय रंगमंच में प्रयुक्त होने वाला यवनिका (पर्दा) यूनानियों की देन है

232. कनिष्क, कुषाण वंश का महानतम शासक था। उल्लेख करें ?

उत्तर-

- कनिष्क 'कुषाण' वंश का महानतम शासक था
- अपने राज्यारोहण की तिथि 78 ई. में कनिष्क द्वारा शक संवत आरम्भ किया गया
- कनिष्क की प्रथम राजधानी पेशावर तथा दूसरी राजधानी मथुरा थी
- कनिष्क ने बौद्ध धर्म का संरक्षण किया, उसी के समय कश्मीर के कुंडलवन में वसुमित्र की अध्यक्षता में चतुर्थ बौद्ध संगीति का आयोजन हुआ तथा बौद्ध धर्म हीनयान एवं महायान दो शाखाओं में बंट गया

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

- कनिष्क कला एवं संस्कृति का संरक्षक था, उसी के समय मूर्तिकला की 'मथुरा एवं गांधार'शैली का जन्म हुआ
- कनिष्क ने चीन से रोम जाने वाले रेशम मार्ग (सिल्क रूट) की तीनो शाखाओं पर अपना नियंत्रण स्थापित किया था

233. मौर्योत्तर काल में वाणिज्य - व्यापार एवं शिल्प उद्योग में हुए अभूतपूर्व परिवर्तनों को रेखांकित करें ?

उत्तर- मौर्योत्तर काल को आर्थिक दृष्टि से प्राचीन भारत का स्वर्णकाल माना जाता है क्योंकि इस काल में अंतर्देशीय व्यापार, वाणिज्य एवं शिल्पकला में अभूतपूर्व विकास हुआ

अर्थव्यवस्था में उन्नति के प्रमुख कारण –

- व्यापार एवं विनिमय में मुद्राओं का प्रयोग
- नगरीय एवं ग्रामीण क्षेत्रों में नए वर्गों का उदय
- मध्य एशिया तथा पाश्चात्य विश्व के साथ घनिष्ठ व्यापारिक सम्बन्ध
- चीन से रोम जाने वाले रेशम मार्ग की खोज तथा नियंत्रण
- बंदरगाहों का विकास
- शिल्पियों का विभेदीकरण
- लोहा व इस्पात उद्योगों में भरी वृद्धि हुई
- इस काल का प्रमुख उद्योग वस्त्र उद्योग था
- रोमनवासी मुख्यतः मसाले का आयात करते थे तथा उन्हें भारतीय कालीमिर्च अत्यधिक पसंद थी जिसका नाम यवनप्रिय पड़ा ।

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

234. मौर्योत्तर कालीन सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिए ?

उत्तर-

- प्राचीन भारत में विदेशियों का सर्वाधिक आत्मसातीकरण इसी काल में हुआ
- मौर्योत्तर काल में चारों वर्ण मौजूद थे किन्तु वाणिज्य एवं व्यापार में सर्वाधिक फायदा शूद्रों को हुआ
- विभिन्न धर्मो ने लचीला रुख अपनाते हुए विदेशियों को शामिल करने का प्रयास किया यूनानी, शक, पार्थियन एवं कुषाण सभी क्षत्रिय वर्ग में समाहित हो गए
- जनजातियों एवं विदेशियों के मिलने से समाज में वर्णशंकरों की संख्या में वृद्धि हुई
- महिलाओं की स्थिति में सुधार हुआ, यज्ञ आदि में भाग लेने के क साथ साथ कभी कभी शासन के कार्यों में भी भाग लेती थी
- वैष्णव एवं शैव संप्रदाय की मान्यताओं में वृद्धि हुई
- इस काल में बौद्ध धर्म और उसकी महायान शाखा का सर्वाधिक प्रचार प्रसार हुआ एवं बौद्ध धर्म में मूर्ति पूजा आरम्भ हुई

235. कनिष्क काल मूर्तिकला के उत्कर्ष का काल था, स्पष्ट करें ?

उत्तर- कनिष्क के शासन काल में कला के क्षेत्र में मुख्यतः दो स्वतंत्र शैलियों का विकास विकास हुआ

गांधार कला -

- कुषाण सम्राट कनिष्क के काल में गंधार कला शैली का विकास हुआ, यह कला भारतीय एवं यूनानी कला का मिश्रण होने के कारण 'इन्डोग्रीक कला' या 'ग्रीक बुद्धिष्ट शैली' भी कहलाती है
- इस कला की मूर्तियाँ गांधार, अफगानिस्तान, तक्षशिला, चीन, जापान आदि स्थानों में मिलती है
- इस कला की विषय-वस्तु बौद्ध परंपरा से ली गयी है किन्तु निर्माण का ढंग यूनानी था
- इस कला शैली में महात्मा बुद्ध की केशविहीन सिर तथा आभूषणहीन शरीर वाली मूर्तियाँ बनायीं गयी तथा सिर के चारों तरफ प्रभामंडल भी बनाया गया
- गांधार कला के अंतर्गत बुद्ध की धर्मचक्र मुद्रा, ध्यानमुद्रा, अभयमुद्रा, एवं वरमुद्रा आदि का निर्माण किया गया

मथुरा कला -

- कुषाण युग में मथुरा एवं उसके निकटवर्ती क्षेत्रों में इस कला की मूर्तियाँ लाल पत्थर से बनायीं गयीं जिसमे महात्मा बुद्ध को खड़े दिखाया गया है और इनका शरीर वस्त्रों से ढंका हुआ है
- जैन धर्मानुयायियों ने भी मथुरा में मथुरा मूर्तिकला शैली की आश्रय दिया, जहाँ महावीर की एक मूर्ति का निर्माण हुआ
- मथुरा कला की मूर्तियाँ साँची, भरहुत, बोधगया, तथा मथुरा के संग्रहालयों में रखी हुई हैं

An Institute for MPPSC Examination

236. पुष्यमित्र शुंग का काल वैदिक धर्म के उत्थान का काल था, मूल्यांकन करें ?

उत्तर -

- पुष्यमित्र शुंग मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ का सेनापति एवं शुंग वंश का संस्थापक था
- शुंग वंश के पूर्व मौर्य साम्राज्य का संस्थापक चन्द्रगुप्त मौर्य के गुरु आचार्य चाणक्य से सदैव हिन्दू धर्म का विस्तार करने की प्रेरणा दी किन्तु चाणक्य की मौत के बाद चन्द्रगुप्त ने जैन धर्म अपना लिया
- चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी बिन्दुसार ने आजीवक सम्प्रदाय से अपनी दीक्षा ली तथा उन्होंने संस्कृत व वैदिक ज्ञान को नष्ट करते हुए अपने सोच का प्रसार किया
- बौद्ध धर्म की अहिंसात्मक नीतियों के परिणामस्वरूप भारत में विदेशियों का प्रभुत्व बढ़ने लगा एवं वैदिक सभ्यता का हनन होने लगा
- इसके पश्चात बौद्ध धर्मगुरु राज द्रोह कर ग्रीक सैनिकों को भिक्षुओं के वेश में मठों में पनाह देने लगे
- इसी कारण ब्राह्मणवंशी शासक पुष्यमित्र शुंग ने मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या करके शुंग वंश की स्थापना की
- अयोध्या अभिलेख के अनुसार पुष्यमित्र शुंग ने दो अश्वमेध यज्ञ का अनुष्ठान किया एवं पतंजलि पुष्यमित्र शुंग के राजपुरोहित थे

237. गान्धार कला शैली की प्रमुख विशेषताओं को उल्लेखित कीजिये।

उत्तर

- कुषाण काल में गान्धार क्षेत्र में कला की जिस विशिष्ठ शैली का विकास हुआ उसे गान्धार कला शैली कहा जाता है।
- इस कला के मुख्य केन्द्र तक्षशिला, पुष्कलावती, नगरहार, स्वातघाटी तथा बैक्ट्रिया थे।
- इस कला का विकास महायान धर्म के उदय के पश्चात् आवश्यकता अनुसार बुद्ध की मूति पूजा हेतु कनिष्क के शासन काल में हुआ।
- इस काल में पहली बार बुद्ध की मूर्तियों का निर्माण हुआ। मूर्तियों का निर्माण काले, स्लेटी और सफेद पत्थरों से किया गया है।
- मूर्तियों की शरीर की संरचना, मांशपैशियों और शरीर के कपड़ों का अंकन सुक्ष्मता से किया गया है। अर्थात मूर्तियों की भव्यता एवं भौतिकता को प्रस्तुत किया गया है।
- गान्धार कला की विषय वस्तु भारतीय थी और कलाशैली यूनानी–रोमन थी, इसीलिए गान्धार कला को हिन्द यूनानी कला भी कहा जाता है।

238. शुंग कालीन स्थापत्य कला पर प्रकाश डालिये।

उत्तर

- शुंग कालीन स्थापत्य कला की मुख्य केन्द्र भरहुत, सांची और गया थे।
- इस कला की मुख्य देन स्तूप, चैत्यघर, बिहार, स्तम्भ तथा वैदिका सहित तोरण स्थल है।
- शुंग कला का उत्कृष्ट विकास सांची के स्तूप में देखा जा सकता है। इस स्तूप के ऊपर एक वर्गाकार वेदिका का निर्माण किया गया है। अपनी विशालता और गंभीरता के कारण यह वेदिका अत्यंत प्रभावी है। इसके तोरण द्वार पर विभिन्न पशु–पक्षियों, फूल पत्तियों एवं बुद्ध के जीवन से संबंधित घटनाओं का उल्लेख किया गया है।
- इस प्रकार शुंग कालीन स्थापत्य कला समकालीन जीवन एवं विषयों के महत्वपूर्ण साक्ष्य प्रस्तुत करती है।

239. मथुरा कला शैली एवं इसकी विशेषताओं पर प्रकाश डालिये।

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

उत्तर

- मूल रूप से भारतीय शैली और विषयवस्तु के रूप में मथुरा कला का विकास कुषाण काल में हुआ।
- इस शैली में लाल पत्थरों से बुद्ध और बोधीसत्व की मूर्तियों के अतिरिक्त जैन तीर्थकरों, ब्राह्मण धर्म से संबंधित देवी–देवताओं की मूर्तियों का निर्माण किया गया है।
- इस कला में निर्मित मूर्तियाँ भव्य और सजीव तो है साथ ही दार्शनिक एवं गंभीर भाव भंगिमा युक्त भी है परन्तु इनमें गान्धार शैली जैसी मोहकता का अभाव है।
- मथुरा के अतिरिक्त मोहाली, कटरा और अन्य स्थलों से मथुरा शैली के अवशेष प्राप्त हुए है। जिनमें शिव और कार्तिकेय की मूर्तियां भी सम्मिलित है।
- मथुरा में शिल्पकला के साथ–साथ स्थापत्य कला का भी विकास हुआ। विभिन्न बौद्ध बिहार, मथुरा में नाग मंदिर और देवकुल का भी निर्माण हुआ है।
- मथुरा कला निश्चित तौर पर भले ही गान्धार कला के समान भव्यता और विस्तार में पल्लवित नहीं हुई परन्तु भारतीयता का गौरवमान सदैव उसके साथ बना रहा।

240. प्राचीन भारत में श्रेणियों के उद्भव के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर **प्राचीन भारत में श्रेणियों के उद्भव के निम्न कारण थे–**

- व्यापार तथा उद्योग धंधों का स्थानीयकरण।
- व्यावसायों एवं उद्योगों को पूंजी उपलब्ध करना।
- चोर, डाकुओं तथा आपदाओं से सुरक्षा करना।
- अपने परम्परागत नियमों एवं प्रथाओं (श्रेणी धर्म) की सुरक्षा करना।
- सामुहिक लाभ प्राप्त करने की इच्छा।

गुप्तकाल

3 अंकों के प्रश्नोत्तर

241. अमात्य कौन थे?

- कामंदक के नीतीसार में अमात्य को राज्यधिकारियों का पर्याय माना गया है।
- गुप्तकाल में अमात्य आधुनिक काल के नौकर शाह के समान थे।

242. गुप्त काल में सांमतवाद

- गुप्तकाल में सामंतवाद के उदय व विकास का मूल स्त्रोत भूमिदान प्रणाली है।
- भूमिदान प्राप्त व्यक्ति सामंत कहलाता था तथा उसे भूमि से राजस्व प्राप्त करने का अधिकार था तथा आंतरिक सुरक्षा व प्रशासन के दायित्व भी उसे निभने पड़ते थे।

243. श्रेणीधर्म

- गुप्तकाल में व्यावसायिक समितियाँ श्रेणी कहलाती थी।
- स्मृतियों में इन श्रेणियों के रीति–रिवाजों को श्रेणीधर्म कहा गया है।

244. गुप्तकाल के प्रमुख नगरों का उल्लेख कीजिए।

- गुप्तकाल के प्रमुख नगर– पाटलीपुत्र, उज्जयिनी, वैशाली, दशापुर, मृगुकच्छ तथा ताम्रलिपि आदि है।

245. भट्टि

- यह गुप्तकालीन वैयाकरण कवि थे।
- इन्होनें भट्टि काव्य जिसे रावणवध भी कहा जाता है कि रचना की थी।
- इस ग्रंथ का उद्देश्य व्याकरण के जटिल नियमों का उदाहरण प्रस्तुत करना था।

UPARTIKSG An Institute for MPPSC Examination

246. भारवि

- गुप्तकालीन संस्कृत साहित्य के महान कवि।
- भारवि द्वारा प्रमुख ''किरातार्जुनीयत्र'' की रचना की।
- इस ग्रंथ की कथा महाभारत के वनपर्व पेर आधारित है।

247. कालीदास की प्रमुख रचनाएँ

- गुप्तकालीन अमर साहित्यकार कालीदास की प्रमुख रचनाएँ निम्न है।
- कुमार संभव (महाकाव्य, मेघदूतम (गीतिकाव्य)
- ऋतुसमाहारम (खण्डकाव्य) रघुवंशम् (महाकाव्य)
- अभिज्ञान शाकुंतलम (नाटक) विक्रमोशीयम व मालकिवाग्निमित्रम

248. विशाखदत्त

- मुद्राराक्षस व देवीचन्द्रगुप्तम जैसे ऐतिहासिक ग्रंथों के रचयिता।
- कुछ विद्वान विशाखदत्त को चन्द्रगुप्त द्वितीय (विक्रमदित्य) का समकालीन मानते है।

249. शूद्रक

- यह गुप्तकालीन नाटककार था जिसने गृच्छकटिकम नामक ग्रंथ की रचना की थी।

250. आर्यभट्ट

- गुप्तकालीन गणितज्ञा व खगोलशास्त्री जिनका प्रमुख ग्रंथ आर्यभट्टीम है।
- इनके द्वारा पाई का मान निर्धारित किया गया, दशमलव से संबंधित प्रमुख अवधारणाएँ प्रस्तुत की व सूर्य तथा चन्द्रगहण के कारण बताए।

251. बराहमिहिर

- यह गुप्तकाल के प्रमुख खगोलशास्त्री थे जिन्होंने वृहसंहिता व पंचसिद्धांतिका जैसे ग्रंथों की रचना की।
- वृहत्संहिता में ज्योतिष, वास्तु आदि विषय की जानकारी प्राप्त होती है वही पंचसिद्धांतिका के अनुसार ज्योतिष के पाँच सिद्धांत माने गए है।

252. गुप्तकालीन मंदिर—स्थापत्य की प्रमुख विशेषताएँ

- भीतरीगाँव व सिरपुर के मंदिरों को छोड़कर अन्य मंदिर प्रस्तर निर्मित है।
- मंदिरों की छते प्राय: सपाट है।
- इनमें गर्भग्रह, प्रदशिणापथ व अलंकरण मिलता है।

253. दशावतार मंदिर

- देवगढ़ (झांसी) के दशावतार मंदिर को स्थापत्य कला की दृष्टि से गुप्तकाल का सबसे भव्य मंदिर माना जाता है।
- इसमें एक शिखर व चार मण्डप मिलते है तथा मूर्तियों के द्वारा पौराणिक कथाओं का निरुपण किया गया है।

254. माध्यमिक (शून्यवाद):

- इस मत के प्रवर्तक नागार्जुन है।
- इसे सापेक्ष्यवाद भी कहा जाता है, जिसके अनुसार प्रत्येक वस्तु किसी कारण से उत्पन्न हुई है।
- नागार्जुन ने 'प्रांतीय समुत्पाद' को ही शून्यता कहा है। नागार्जुन के अतिरिक्त इस मत के अन्य विद्वान चन्द्रकीर्ति, शान्तिदेव, आर्यदेव, शान्तिरक्षित थे।

प्रयासIKSG An Institute for MPPSC Examination

255. विज्ञाननिवाद (योगाचार):

- इसकी स्थापना मैत्रेय ने की थी।
- असंग तथा वसुबन्धु ने इसका विकास किया।
- यह मत चित्त अथवा विज्ञान की ही एक मात्र सत्ता स्वीकार करता है।

256. नैयान:

- बौद्ध धर्म में बढ़ते तन्त्र—मंत्रों के प्रभाव के फलस्वरुप वज्रायान सम्प्रदाय का उदय हुआ है।
- इसके विद्वान मंजुश्री मूलकल्प तथा गुहा समाज नामक ग्रंथों में मिलते है।

5 अंको के प्रश्नोत्तर

257. गुप्तकाल की धार्मिक-सांस्कृतिक पहलुओ को स्पष्ट कीजिय ?

उत्तर - गुप्तकाल में एक ओर ब्राह्मणवादी पुनरुथान के कारण जहाँ यज्ञ पद्धति पुनर्जीवित हो रही थी वहीँ जनजातीय तत्वों के प्रभाव स्वरुप भक्ति की अवधारणा को प्रोत्साहन मिल रहा था

- गुप्त सम्राट 'वैष्णव' धर्म के अनुयायी थे एवं उन्होंने इसे राजधर्म बनाया था I गुप्त शासको ने 'परमभागवत' की उपाधि धारण की तथा 'गरुड़' को अपना राजकीय चिन्ह बनाया
- मंदिरों व मूर्तियों का निर्माण हुआ
- अवतारवाद की अवधारणा का उदय हुआ
- त्रिदेव (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) की संकल्पना इसी काल में विकसित हुई
- ब्राह्मणवाद के कारण धार्मिक कर्मकांडों में वृद्धि हुई
- हिन्दू धर्म के अतिरिक्त जैन एवं बौद्ध धर्म का भी प्रचार-प्रसार हुआ
- हिन्दू देवी, देवताओं के अतिरिक्त बौद्ध एवं जैन धर्म में भी मूर्ति निर्माण का चलन आरम्भ हुआ Iइस काल में बुद्ध धर्म के महायान शाखा के अंतर्गत बोधिसत्वों की प्रतिमाएं बनाई जाने लगी
- नव हिन्दू धर्म की शुरुआत इसी काल में हुई
- देवताओं के साथ देवियों को इसी काल से जोड़ा जाने लगा

स्पष्ट है की मूर्तिपूजा, मंदिरों का निर्माण, कर्मकांड आदि गुप्तकाल की प्रमुख धार्मिक विशेषताएं रही हैं

प्रयासIAS An Institute for MPPSC Examination

258. गुप्तकालीन इतिहास की जानकारी के प्रमुख स्रोतों का वर्णन कीजिये।

उत्तर **गुप्तकालीन इतिहास की जानकारी के स्रोत —**

- साहित्य — गुप्ताकलीन जानकारी का प्रमुख साधन साहित्य है। साहित्य के क्षेत्र में कालीदास, विशाखदत्त, भारवी आदि के ग्रंथ महत्वपूर्ण है। जिससे उस समय के सांस्कृतिक जीवन का पता चलता है। विष्णुपुराण, वायुपुराण, कौमुदी महोत्सव, मुद्रा राक्षस तथा मृच्छ कटिक आदि ग्रंथों से गुप्तकाल के इतिहास की जानकारी मिलती है।
- अभिलेख — प्रयागप्रशस्ति अभिलेख, महरौली का स्तम्भलेख, जूनागढ़ का गिरनार लेख आदि अनेक अभिलेख है जो गुप्तकालीन इतिहास की जानकारी उपलब्ध कराते है।
- मुद्राएं तथा मोहरे — गुप्तशासकों के अनेक सिक्के तथा मोहरे प्राप्त होती है जो उस समय की जानकारी तथा प्रान्तीय तथा स्थानीय शासन के बारे में महत्वपूर्ण सूचना प्रदान करती है।
- स्मारक — जबलपुर का विष्णुमंदिर, नागौर का शिव मंदिर, अजयगढ़ का पार्वती मंदिर, साँची तथा बौद्धगया के मंदिर तथा कानपुर का भीतरगाँव मंदिर आदि अनेक स्मारक मौजूद है जो गुप्तकालीन धार्मिक व सामाजिक जीवन का ज्ञान प्रदान करते है।
- विदेशी यात्री — गुप्तकाल में चीनी यात्री फाह्यान भारत आया, उसने चन्द्रगुप्त द्वितीय के समय भारत की यात्रा की तथा स्वदेश जाकर भारत यात्रा का विवरण लिखा इससे भी गुप्तकाल की जानकारी प्राप्त होती है।

259. गुप्त साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर गुप्त साम्राज्य के पतन के प्रमुख कारण —

- स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद उत्तराधिकार के लिये संघर्ष हुआ जिसके परिणामस्वरूप साम्राज्य का विभाजन हो गया।
- गुप्त वंश की आंतरिक कलह का लाभ उठाकर सामंतों ने अपनी—अपनी स्वतंत्र सत्ता की स्थापना कर ली।
- हूणों के आक्रमणों ने भी गुप्त साम्राज्य के पतन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद तोरमाण के नेतृत्व में हूणों ने गुप्त साम्राज्य के पश्चिमी भाग पर आक्रमण किया और मालवा को जीत लिया।
- स्कन्दगुप्त के बाद अन्य राजा इतने शक्तिशाली नहीं थे कि इतने बड़े साम्राज्य की रक्षा कर सके उस समय साम्राज्य राजा के अस्तित्व पर निर्भर था। कमजोर राजा का अर्थ था कमजोर राज्य।

260. गुप्तकालीन केन्द्रीय शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- गुप्तकाल में राजनीतिक, सैनिक, प्रशासनिक तथा न्याय संबंधी सभी शक्तियाँ राजा के हाथ में केन्द्रित हुआ करती थी वह मंत्रीमण्डल की सहायता से कार्य करता था किन्तु अं. तिम जिम्मेदारी राजा की ही होती थी।
- इस युग की स्मृतियों में मंत्रियों तथा सचिवों का उल्लेख मिलता है। धर्म, सैना, आय, भूमि, व्यापार तथा विदेशिक नीति से संबंध रखने वाले विभाग मंत्रियों के सुपुर्द होते थे।
- केन्द्र में सैनिक विभाग प्रमुख था। गुप्त साम्राज्य में सम्राट के अधीन अनेक महासेनापति थे जो विभिन्न
  प्रांतों में अपनी सेनाओं के साथ तैनात रहते थे।
- राजस्व हेतु एक राजस्व मंत्री होता था। वन तथा खानों को भी राज्य की संपत्ति माना जाता था उसका प्रबन्धन भी संभवत: इसी मंत्री के हाथ था।
- राजधानी में राज्य का सर्वोच्च न्यायालय होता था और राजा स्वंय न्याय करता था। वृहस्पति तथा नारद स्मृतियों से सिद्ध होता है कि इस युग में न्याय प्रशासन काफी विकसित हो चुका था।
- विदेशिक मामलों के लिये एक अलग मंत्री था जो महासन्धि—विग्रहिक कहलाता था।

261. गुप्तकालीन प्रांतीय शासन व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- गुप्तकाल में साम्राज्य अनेक प्रांतों में बंटा हुआ था जिन्हें देश कहते थे। प्रांतीय शासक सम्राट द्वारा नियुक्त किये जाते थे जिनका काम प्रान्त को बाह्य आक्रमणों से बचाना तथा आन्तरिक शान्ति रखना था।
- देश (प्रान्त) भुक्तियों में विभाजित होते थे उनका आकार आजकल की कमिश्नरी के बराबर होता था। भुक्ति का पदाधिकारी उपरिक कहलाता था जो सम्राट द्वारा नियुक्त किया जाता था।
- भुक्ति विषयों में विभक्त होता था उसका अधिकारी विषयपति उपरिक द्वारा नियुक्त होता था।
- विषय के नीचे ग्राम प्रशासन कार्य करता था जिसका प्रमुख ग्राम अध्यक्ष होता था जिसकी सहायता के लिए एक पंचायत होती थी गुप्त साम्राज्य में इसे पंचमण्डली कहते थे।

प्रयासKSG An Institute for UPPSC Examination

262. गुप्तकाल में साहित्य के विकास पर चर्चा कीजिए।

उत्तर

- गुप्तकाल संस्कृत साहित्य के इतिहास में अद्वितीय स्थान रखता है। गुप्त सम्राट विद्वानों और कवियों के संरक्षक ही नहीं थे बल्कि वे स्वंय भी उच्च कोटि के विद्वान तथा कला प्रेमी थे।
- समुद्रगुप्त ने अपनी प्रतिभा के कारण कविराज की उपाधि प्राप्त की थी उसके दरबार में हरिषेण नामक विद्वान होता था।
- चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार में नवरत्न संरक्षण पाते थे जिनमें कालिदास सर्वाधिक प्रसिद्ध रहे। वे संस्कृत के अद्वितीय नाटककार और कवि थे।
- कालिदास के लिखे सात ग्रंथ उपलब्ध है — कुमारसंभव तथा रघुवंश (दो महाकाव्य), शकुंतला, विक्रमोर्वशीयम तथा मालविकाग्निमित्र (तीन नाटक), मेघदूत तथा ऋतुसंहार (दो गीतीकाव्य)।
- शुद्रक तथा विशाखदत्त उस युग के दो अन्य महान नाटककार थे। शुद्रक के मृच्छकटक तथा विशाखदत्त के मुद्राराक्षस प्रसिद्ध ऐतिहासिक नाटक है।
- हिन्दु धार्मिक साहित्य की प्रगति भी गुप्तकाल में हुई। अनेक पुराण इस युग में रचे गए। इसी काल में याज्ञवल्कय, नारद और वृहस्पति की स्मृतियाँ लिखी गई।
- बौद्धो ने भी इस काल में अनेक दार्शनिक उत्पन्न किये जिनमें असंग, वशुबन्धु और दिंगनाग बहुत प्रसिद्ध थे।

263. गुप्तकाल में विज्ञान के क्षेत्र में हुई प्रगति पर चर्चा कीजिए।

उत्तर

- गुप्तकाल में साहित्य के अतिरिक्त विज्ञान के क्षेत्र में भी भारतीयों ने अपनी प्रखर प्रतिभा का परिचय दिया। अंकगणित, रेखागणित, बीजगणित, चिकित्साशास्त्र, रसायनशास्त्र, ज्योतिष आदि सभी क्षेत्रों में विकास हुआ।
- ईकाइ के आगे शून्य लगाकर दहाई बनाना। गुप्तकाल के भारतीयों का क्रांतिकारी अविष्कार था।
- आर्यभट्ट, वराहमिहिर तथा ब्रह्मगुप्त संसार के सर्वप्रथम नक्षत्र वैज्ञानिक और गणितज्ञ थे। आर्यभट्ट ने सूर्य सिद्धान्त में सूर्य ग्रहण तथा चन्द्र ग्रहण के कारण बताए। वराहमिहिर ने अपनी पुस्तक वृहतसंहिता में नक्षत्रविद्या, वनस्पतिशास्त्र, प्राकृतिक तथा भौतिक भूगोल आदि विषयों की चर्चा की। ब्रह्मगुप्त ने बताया कि प्रकृति के एक नियम के अनुसार सभी वस्तुएं पृथ्वी पर गिरती है।
- धातुविद्या का भी इस काल में विकास हुआ। चौथी शताब्दी की बुद्ध की तांबे की मूर्ति बरर्मिंघम के संग्रहालय मे सुरक्षित है तथा महरोली का लौहस्तम्भ जिसमें अब तक जंग नहीं लगी इस काल की कला विज्ञान के विकास को दर्शाता है।
- चिकित्साशास्त्र में भी गुप्तकाल में पर्याप्त प्रगति हुई। चरकसंहिता और सुश्रुतसंहिता पहले ही लिखी जा चुकी थी। तथा नवनीतकम् तथा हस्त्यायुर्वेद नामक चिकित्सकीय ग्रन्थ इस काल में लिखे गए तथा प्रसिद्ध चिकित्सक धनवंतरी भी संभवत: इसी युग में हुए।

264. गुप्तकाल में स्थापत्य कला के विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

- गुप्तकाल में स्थापत्य कला का पर्याप्त विकास हुआ। हालांकि इस काल की भवन निर्माण कला के अधिकतर नमूने नष्ट हो चुके है फिर भी कुछ उदाहरण विद्यमान है जिनमें जबलपुर जिले का विष्णुमंदिर, नागौण का शिव मंदिर, अजयगढ़ का पार्वती मंदिर, सांची तथा बोधगया के मंदिर अधिक प्रसिद्ध है।

An Institute for MPPSC Examination

- कानपुर जिले में भीतरगाँव का ईटों का मंदिर भी गुप्तकालीन स्थापत्यकला का उदाहरण है।
- गुप्तयुग के मंदिरों की छतें समतल और बिना गुम्बदों की होती थी। छोटे—छोटे स्तम्भ जिन पर भारी वर्गाकार शिखर होते थे इन मंदिरों की दूसरी विशेषता थी।
- दरबाजों पर सामान्यत: गंगा और यमुना की मूतियों रहती थी। दीवारों पर सजावट होती थी। तथा पत्थर की चट्टानों को काटकर बड़ी गुफाएं अथवा हॉल बनाना उस काल के स्थापत्य की अन्य विशेषता थी। दक्षिण भारत में इस काल के अनेक नमूने सुरक्षित है।

265. गुप्तकाल मूर्तिकला तथा चित्रकला के विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

- गुप्तकाल में मूर्तिकला का पर्याप्त विकास हुआ। गुप्तकालीन मूर्तिकारों ने अनेक संख्या में देवी—देवताओं की मूर्तियां बनाई जो अब भी उपलब्ध है। इस काल की मूर्तियों की विशेषता — सजीवता, सौंदर्य तथा समन्वय है।
- धातुओं की मूतियाँ उस काल के भारतीय धातु विज्ञान का भव्य आदर्श है। सारनाथ, मथुरा से प्राप्त बुद्ध की मूर्तियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। उदयगिरि से प्राप्त वराह की मूर्ति भी गुप्तकालीन मूर्तिकला का अनुपम उदाहरण है।
- चित्रकला भी गुप्तकाल में बहुत लोकप्रिय थी। अजन्ता की गुफाओं के भित्तिचित्र विशेष उल्लेखनीय है। अजन्ता की शैली के अन्य चित्र मालवा में बाघ नामक स्थान पर प्राप्त हुए है।
- इस काल में गुफाओं की दीवारों पर चित्रों में मनुष्य जीवन के अनेक पहलुओं, पशु पक्षियों के जीवन तथा प्रकृति के सुंदर रूपों का चित्रण मिलता है।
- स्वाभाविकता, उच्च कोटि की सौंदर्योपासना, सरलता तथा आध्यात्मिकता गुप्तकालीन कला की विशेषता है।

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

266. ‘‘गुप्तकाल प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग था’’ क्या आप सहमत है?

उत्तर

- निश्चित ही गुप्तकाल प्राचीन भारत का स्वर्णयुग था। इस काल में अनेक क्षेत्रों में पर्याप्त प्रगति हुई।
- इस काल में साम्राज्य विदेशी आक्रमणों से सुरक्षित रहा। अन्तिम दिनों में हूणों के आक्रमण अवश्य हुये परन्तु उन्हें असफल कर दिया गया।
- गुप्तकालीन शासकों ने साम्राज्य में राजनैतिक एकता, सुदृढ़ता तथा शान्ति व्यवस्था की स्थापना की।
- आर्थिक क्षेत्र में भी पर्याप्त प्रगति हुई। व्यापार उद्योग धंधो तथा कृषि को बहुत प्रोत्साहन मिला।
- गुप्तकाल धार्मिक सहिष्णुता का काल था। वैष्णव, शैव, बौद्ध तथा जैन धर्म साथ—साथ फले—फूले।
- चित्रकला, मूर्तिकला तथा स्थापत्य कला का जितना विकास गुप्तकाल में हुआ उतना किसी अन्य काल में नहीं।
- कालीदास, शुद्रक, विशाखदत्त तथा भारवि जैसे अनेक साहित्यकार गुप्तकाल में हुए जिससे साहित्य के क्षेत्र में प्रगति हुई।
- वैज्ञानिक दृष्टिकोण से भी गुप्तकाल का पर्याप्त महत्व है। वराहमिहिर, आर्यभट्ट तथा ब्रह्मगुप्त जैसे विद्वानों ने अनेक अविष्कार किये तथा धनवंतरि ने चिकित्सा क्षेत्र में नाम कमाया।
- गुप्तकाल ने अनेक महान सम्राट देश को प्रदान किये। समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य तथा स्कन्दगुप्त इस युग के महान सम्राट थे जिन्होंने साम्राज्य का विस्तार किया।

गुप्तोत्तरकाल

3 अंकों के प्रश्नोत्तर

267. ह्वेनसांग

- ह्वेनसांग एक चीनी बौद्ध तीर्थ यात्री था जिसने 629 ई. में 24 वर्ष की आयु में भारत की यात्रा प्रारंभ की।
- ह्वेनसांग द्वारा के कश्मीर, मथुरा, थानेश्वर, कन्नौज आदि नगरों की यात्रा की गई तथा उसने भारत में संस्कृत भाषा व बौद्ध ग्रंथों का अध्ययन हुआ।

268. कायस्थ जाति

- कायस्थ जाति का विकास गणक व लेखक के रुपप में राजस्व संबंधी दस्तावेजों व हिसाब किताब रखने वाले के रुप में हुआ
- सर्वप्रथम कायस्थ्रों का उल्लेख याज्ञवल्क्य स्मृति में मिलता है।

269. सार्थ तथा सार्थवाह

- प्राचीन भारत में सार्थ एक आर्थिक श्रेणी थी। जब व्यापारी एक स्थान से दूसरे स्थान व्यापार करने जाते थे तब वह समूह बनाकर चलते थे, इस समूह को ही सार्थ कहा जाता था।
- सार्थ का नेता सार्थवाह कहलाता था।

270. गुप्तोत्तर काल में क्षेत्रीय भाषाएँ

- मौर्य व गुप्तकाल तक जहाँ भारत में ब्रह्म लिपी के दर्शन होते है। वही गुप्तोत्तर काल अर्थात ७ वी शताब्दी के पश्चात् विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं व लिपियों का विकास हुआ।
- आद्य हिन्दी, आद्य—बंगाली, आद्य—गुजराती, आद्य—मराठी, आद्य—राजस्थानी आदि क्षेत्रीय भाषायी रुपों का जन्म इसी काल में हुआ।

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

271. पाशुपन संप्रदाय

- यह शैव धर्म की एक शाखा है इसके संस्थापक लवकलीश थे।
- इस दर्शन में जीव मात्र को पशु की संज्ञा दी गई है।

272. अग्निकुल के सिद्धांत के अनुसार उत्पन्न राजपूत

- अग्निकुल सिद्धांत अनुसार आबू पर्वत पर वशिष्ठ मुनि ने यज्ञ करके अग्निकुंड से चार राजपूत वंशों को जन्म दिया।
- यह राजपूत वंश थे— प्रतिहार, चालुक्य, परमार व चौहान

273. मिहिर भोज

- मिहिर भोज (836-882) गुर्जर प्रतिहार वंश का सबसे प्रतापी शासक था।
- अरब यात्री सुलेमान के यात्रा विवरण में मिहिर भोज की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला गया है।

274. जेजाकभुक्ति

- वर्तमान बुंदेलखंड को इतिहास में जेजाकभुक्ति कहा गया है।
- चंदेल वंश के तीसरे शासक जयशक्ति ने अपने द्वारा शासित प्रदेश को जेजाकभुक्ति कहा।

275. चंदेल कौन थे? इस वंश की स्थापना किसने की थी?

- चंदेल पूर्व में प्रतिहारों के सामंत थे।
- प्रतिहारों की सत्ता कमजोर होने पर चंदेलों ने अपनी स्वतंत्र सत्ता स्थापित की तथा वर्तमान बुंदेलखंड पर शासन किया।
- चंदेल वंश का संस्थापक नन्नुक था।

276. परमाल रासो

- परमाल रासो एक वीर गाथात्मक काव्य है जिसे ''आल्हाखण्ड' के नाम से भी जाना जाता है।
- इसकी रचना परमार्दिदेव के दरबारी कवि जगनिक ने की थी।

277. भर्तुहरि की गुफाएँ

- यह गुफाएँ उज्जैन के निकट स्थित है।
- इन गुफाओं का निर्माण राजा भर्तृहारि की स्मृति में परमार शासकों ने 11 वीं शताब्दी में करया था।
- इनका महत्व यह है कि यहाँ उज्जैन के राजा भर्तृहरि ने संन्यास लेकर 12 वर्षो तक तपस्या की थी।

5 अंको के प्रश्नोत्तर

278. भारतीय इतिहास के चित्रण में व्हेनसांग की भूमिका को उल्लेखित करें ?

उत्तर -यात्रियों के राजकुमार के नाम से प्रसिद्ध 'व्हेनसांग' का भारत आगमन 629 ई. में हर्षवर्धन के काल में हुआ।

उद्देश्य – बौद्ध ग्रंथों का संकलन

- यात्रा वृतांत सी-यू-कीकी रचना की– इसमें इन्होने भारत को इन-टू कहा है
- व्हेनसांग ने उत्तर भारत और दक्षिण भारत दोनों की यात्रा की और अपने अनुभवों को सी-यू-की में उल्लेखित किया
- 16 वर्ष की एक लम्बी अवधि (629-645 ई.) तक वो भारत में रहा
- नालंदा में 5 वर्ष का समय व्यतीत किया
- अपने यात्रा वृतांत में मुख्यतः हर्षवर्धन काल की जानकारी प्रदान करता है इसके अनुसार हर्षवर्धन कन्नौज में सभा (धर्मपरिषद) का आयोजन करता था एक सभा की अध्यक्षता व्हेनसांग ने भी की थी।
- प्रयाग में महामोक्षपरिषद्का आयोजन हर 5वें वर्ष हर्षवर्धन द्वारा किया जाता था।
- आयोजन के अवसर पर बुद्ध,सूर्य एवं शिव की पूजा करता था जिससे पता चलता है की हर्षवर्धन के शैव होते हुए भी बौद्ध धर्म की ओर झुकाव का पता चलता है।
- व्हेनसांग के विवरण से तत्कालीन सामाजिक आर्थिक परिदृश्य का भी विवरण मिलता है।

279. हर्षवर्धन की सैन्य उपलब्धियों पर चर्चा करें ?

उत्तर - राज्यवर्धन की मृत्यु के पश्चात विषम परिस्थितियों में हर्षवर्धन ने 606 ई.थानेश्वर की राजगद्दी संभाली। कालांतर में थानेश्वर के साथ उसे कन्नौज की शक्ति भी मिल गयी।

हर्षवर्धन की उपलब्धियों की जानकारी बाणभट्ट की कादंबरी व हर्षचरित, मधुवन व बांसखेडा के अभिलेख, व्हेनसांग के यात्रा विवरण एवं नालंदा व सोनीपत से प्राप्त हर्ष की मुद्राओं से प्राप्त होती है।

सैन्य उपलब्धियां –

- प्रथम चरण में पूर्वी भारत का अभियान जिसका उद्देश्य शशांक से प्रतिशोध लेना एवं स्वतंत्र हो चुके क्षेत्रों को पुनः जीतना I
- शशांक की मृत्यु के पश्चात हर्ष ने बंगाल, बिहार और ओडिशा पर अधिकार प्राप्त किया Iमगध के शासक पूर्ववर्मन और कामरूप के शासक भास्करवर्मन ने हर्ष की अधीनता स्वीकार कर ली
- पश्चिम भारत का अभियान– इसके तहत हर्ष ने पंजाब में व्यास नदी के तक के विभिन्न क्षेत्रों को विजित किया
- हर्ष ने सिंध का अभियान कर वहां से धन वसूला
- वल्लभी पर आक्रमण कर ध्रुवसेन को पराजित किया
- दक्षिण भारत का अभियान– इसमें हर्ष को सफलता नहीं मिलती है
- रविकीर्ति के एहोल अभिलेख के अनुसार बादामी के चालुक्य शासक 'पुलकेशिन द्वितीय' से पराजित हुआ
- कश्मीर अभियान– गौतम बुद्ध के दांत लेकर आया
- नेपाल अभियान– नेपाल की विजय

280. हर्षवर्धन की धार्मिक व सांस्कृतिक उपलब्धियों पर चर्चा करें ?

धार्मिक उपलब्धियां –

- जानकारी के स्त्रोत – हर्षचरित, व्हेनसांग का यात्रा विवरण
- व्हेनसांग के विवरण के अनुसार प्रारंभ में हर्ष शैव था किन्तु व्हेनसांग के प्रभाव से वह महायान बौद्ध धर्म का अनुयायी बन गया
- बौद्ध धर्म का व्यापक प्रचार प्रसार एवं स्तूपों तथा विहारों का निर्माण किया I नालंदा विश्वविद्यालय को कई गाँव दान में दिए
- हर्षवर्धन ने विभिन्न धर्मों को संरक्षण प्रदान किया
- प्रयाग में हर 5वें वर्ष महामोक्षपरिषद् का आयोजन
- कन्नौज में हर वर्ष धर्मपरिषद का आयोजन
- सभी धर्म के अनुयायियों को दान दक्षिणा करता था

सांस्कृतिक उपलब्धियां –

विद्वानों का संरक्षक था

- प्रमुख विद्वान –बाणभट्ट, मयूर, मातंगदिवाकर, व्हेनसांग
- स्वयं भी रचनाकार था –नागानंद, रत्नावली, प्रियदर्शिका
- अनेक मंदिरों एवं मठों का निर्माण जो धार्मिक केन्द्रों के साथ सिक्धा के केंद्र भी थे
- अपनी राजकीय आय का ¼ भाग विद्वानों पर खर्च कर देता था

281. कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष पर टिप्पणी लिखें ?

उत्तर - 8वी सदी के दौरान, कन्नौज पर नियन्त्रण के लिए भारत के तीन प्रमुख साम्राज्यों जिनके नाम पाल, प्रतिहार और राष्ट्रकूट थे, के बीच संघर्ष हुआ था I पालों का भारत के पूर्वी भागों पर शासन था जबकि प्रतिहार के नियंत्रण में पश्चिमी भारत था

राष्ट्रकूटों ने भारत के डक्कन क्षेत्र पर शासन किया I इन तीन राजवंशों के बीच कन्नौज पर नियंत्रण के लिए हुए संघर्ष को भारतीय इतिहास में त्रिपक्षीय संघर्ष के रूप में जाना जाता है

घटनाक्रम -

- प्रथम चरण में पाल शासक धर्मपाल प्रतिहार शासक वत्सराज तथा राष्ट्रकूट शासक ध्रुव सम्मिलित हुए
- कन्नौज के लिए यह त्रिपक्षीय संघर्ष लगभग दो सौ वर्षों तक चला और अंततः इसका परिणाम गुर्जर-प्रतिहार शासक नागभट्ट द्वितीय के पक्ष में रहने के साथ इस युद्ध का समापन हो गया
- नागभट्ट द्वितीय ने कन्नौज को गुर्जर-प्रतिहार साम्राज्य की राजधानी बनाया I इस साम्राज्य ने लगभग तीन सदियों तक शासन किया

282. कश्मीर के राजवंशों का क्रमबद्ध वर्णन करें ?

उत्तर - कश्मीर के हिन्दू राज्य के विषय में हमें कल्हण की राजतरंगिणी से जानकारी मिलती है

कश्मीर के राजवंश

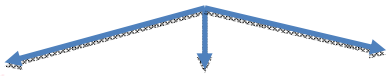

कार्कोट वंश उत्पल वंश लोहार वंश

कार्कोट वंश –

- 7वीं शताब्दी ई. में दुर्लभवर्धन (662-682 ई.) नामक व्यक्ति ने कश्मीर में कर्कोट वंश की स्थापना की I इसी के शासनकाल में ह्वेनसांग कश्मीर की यात्रा पर आया था
- इस वंश का सबसे शक्तिशाली राजा 'ललितादित्य मुक्तापीड'(724-760 ई.) था उसने कश्मीर में मार्तंड मंदिर का निर्माण करवाया था
- मुक्तापीड की सबसे उल्लेखनीय सफलता कन्नौज नरेश 'यशोवर्मन' को पराजित करना था

उत्पल वंश –

- कश्मीर के उत्पल वंश की स्थापना अन्तिमवर्मन (855-883 ई.) ने की थी
- 930 ई. में उत्पल वंश की 'रानी दिद्दा'एक महत्वाकाक्षी शासिका हुई

लोहार वंश –

- इस वंश का संस्थापक संग्रामराज (1003-1028 ई.) था
- लोहार वंश का शासक हर्ष विद्वान, कवि, तथा कई भाषाओँ का ज्ञाता था इसे कश्मीर का नीरो कहा जाता था
- राजतरंगिणी का लेखक कल्हण हर्ष का आश्रित कवि था उसने राजतरंगिणी की रचना लोहार वंश के अंतिम शासक जयसिंह के समय की थी

283. क्रमबद्ध इतिहास लेखन के प्रयास के रूप में कल्हण के योगदान पर चर्चा करें ?

उत्तर -कल्हण कश्मीर के महाराज हर्षदेव के महामात्य चम्पक के पुत्र थे I वास्तव में कल्हण एक विलक्षण महाकवि थे, जो कि भूतार्थ चित्रण के साथ ही रम्य निर्माण में अत्यंत निपुण थे I इतिहास और काव्य के संगम पर उन्होंने अपने प्रबंध को शांत रस का मूर्धभिषेक दिया है

और अपने पाठकों को 'राजतरंगिणी' की अमंद रसधारा का अस्वादन करनें को आमंत्रित किया है ।संस्कृत साहित्य में ऐतिहासिक घटनाओं के क्रमबद्ध इतिहास लेखन का प्रथम प्रयास कल्हण द्वारा रचित 'राजतरंगिणी' के माध्यम से किया गया । राजतरंगिणी से हमें कश्मीर के हिन्दू राज्यों के विषय में जानकारी प्राप्त होती है

- राजतरंगिणी में कुल 8 तरंग व 8000 श्लोक हैं
- पहले तीन तरंगों में कश्मीर के प्राचीन इतिहास की जानकारी मिलती है
- चौथे से लेकर छठे तरंग में कार्कोट और उत्पल वंश का उल्लेख मिलता है
- 7वें और 8वें तरन में लोहार वंश का उल्लेख मिलता है
- कल्हण का दृष्टिकोण बहुत उदार था । माहेश्वर (ब्राह्मण) होते हुए भी उन्होंने बौद्ध दर्शन की उद्दांत परम्पराओं को सराहा है और पाखंडी तांत्रिकों को आड़े हाथों लिया है
- कल्हण ने केवल राजनीतिक रूपरेखा न खीचकर सामजिक एवं सांस्कृतिक परिवेश की झलकियाँ भी प्रस्तुत की हैं साथ ही चरित्र चित्रण में सरस विवेक से काम लिया है
- अपने वर्णन में उन्होंने मानव मनोविज्ञान का मनोरम चित्र प्रस्तुत किया है, साथ ही बाढ़, आग, अकाल, महामारी जैसी विभीषिकाओं तथा सामजिक, धार्मिक उपद्रवों वाली मानवीय कुत्सित प्रवृत्तियों की ओर भी संकेत किया है
- कल्हण ने पक्षपात रहित होकर राजाओं के गुण और दोषों का वर्णन किया है

यही कारण है कि कई इतिहास लेखकों ने कल्हण के लेखन को साक्ष्य का आधार बनाकर परवर्ती लेखन कार्य किया संपादित किया है

An Institute for MPPSC Examination

284. प्राचीन शिक्षा केन्द्रों के रुप में नालन्दा, विक्रमशिला तथा वल्लभी का महत्व समझाइये।

- प्राचीन भारत के शिक्षा केन्द्रों में नालन्दा विश्वविद्यालय का नाम सर्वाधिक उल्लेखनीय है। सर्वप्रथम यहाँ एक बौद्ध बिहार की स्थापना गुप्तकाल में कराई गई। हर्षकाल तक आते—आते नालन्दा महाबिहार एक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के विश्वविद्यालय के रुप में विकसित हो गया । यहाँ धर्मगंज नामक विशाल पुस्तकालय था।
- यद्यपि नालन्दा महायान बौद्धधर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था परन्तु इसके अतिरिक्त वेद हेतु विद्या, शब्द विद्या, योगशास्त्र, चिकित्सा, तन्त्र विद्या तथा सांख्य दर्शन के ग्रंथों की शिक्षा व्याख्यानों के माध्यम से ही दी जाती थी।
- इसी प्रकार गुजरात में वल्लभ हीनयान बौद्ध धर्म की शिक्षा का प्रमुख केन्द्र था। यहाँ देश के प्रमुख भागों से उत्पन्न शिक्षा के लिए विद्यार्थी आते थे। वल्लभी विश्वविद्यालय अपनी सहिष्णुता तथा बौद्धिक स्वतंत्रता के लिए विख्यात था। बौद्ध धर्म के साथ—साथ यहाँ न्याय, विधिवार्ता, साहित्य आदि विषयों की उच्च शिक्षा प्रदान की जाती थी।
- विक्रमशिला महाविहार की स्थापना पाल नरेश धर्मपाल ने करवाई थी तथा उदारतापूर्वक अनुदान प्रदान किया, विश्वविद्यालय में अध्ययन के लिए विशेष विषय व्याकरण, तर्कशास्त्र, मीमांसा तन्त्र और विधिवाद आदि थे। यहाँ के प्रसिद्ध आचार्य दीपांकर श्रीज्ञान का नाम उल्लेखनीय है।
- इस प्रकार गुप्तोतर काल में शिक्षा के महत्वपूर्ण केन्द्र भारत की बौद्धिकता के अनमोल केन्द्र थे। सच्चे अर्थो में इन्होंने भारत को विश्व गुरु का दर्जा प्रदान कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

285. कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष के कारणों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर त्रिपक्षीय संघर्ष के प्रमुख कारण निम्न रहे —

- प्रतिष्ठा के प्रतीक कन्नौज पर अधिकार करने के लिए।
- गंगा घाटी के संसाधनों पर नियन्त्रण करने के लिए।
- गुजरात एवं मालवा पर नियन्त्रण करने के लिए, जिनके बन्दरगाह विदेशी व्यापार की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थे।
- छोटे राज्यों की शक्ति और आत्मसम्मान प्राप्त करने की इच्छा।

286. कन्नौज के त्रिपक्षीय संघर्ष के स्वरूप एवं घटनाओं पर प्रकाश डालिये।

उत्तर

- त्रिपक्षीय संघर्ष के प्रथम चरण का आरम्भ पाल शासक धर्मपाल ने किया। धर्मपाल ने अपने साम्राज्य का विस्तार कर अपनी सीमा प्रयाग तक बढ़ा ली। अत: कन्नौज पर अधिकार करने के उद्देश्य से इन्द्रायुध को पराजित किया और चक्रायुध को गद्दी पर बैठाया। वहीं प्रतिहार शासक वत्सराज ने चक्रायुध और धर्मपाल को पराजित कर कन्नौज पर अपना नियन्त्रण स्थापित किया। लेकिन राष्ट्रकूट शासक ध्रुव ने वत्सराज और धर्मपाल को पराजित कर अपना अधिकार किया।
- राष्ट्रकूट ध्रुव को दक्षिण भारत की आन्तरिक परिस्थितियों के कारण वापिस लौटना पड़ा अत: द्वितीय चरण में पालों एवं प्रतिहारों के मध्य पुन: संघर्ष प्रारम्भ हुआ। धर्मपाल द्वारा समर्थित चक्रायुध को हराकर नागभट्ट द्वितीय ने अपना नियन्त्रण किया और धर्मपाल को परास्त कर इन्द्रायुध को पुन: कन्नौज की गद्दी पर बिठाया।
- तृतीय चरण के अन्तर्गत राष्ट्रकूट शासक गोविन्द तृतीय ने कन्नौज पर आक्रमण करके नागभट्ट द्वितीय को पराजित किया परन्तु दक्षिण के गतिरोध के कारण उसकी वापिसी पर पालों ने उत्तर भारत में पुन: अपनी शक्ति में वृद्धि की।
- चतुर्थ चरण में पाल शासक देवपाल ने प्रतिहार शासक मिहिरभोज को परास्त किया। परन्तु देवपाल की मृत्यु के बाद राष्ट्रकूट कृष्ण द्वितीय ने पालों पर आक्रमण कर उनकी शक्ति क्षीण कर दी तब प्रतिहार मिहिरभोज ने पाल राजा नारायण पाल और कृष्ण द्वितीय दोनों को पराजित किया। इससे प्रतिहारों की प्रतिष्ठा उत्तर भारत में पुन: स्थापित हुई। मिहिरभोज ने कन्नौज को अपनी राजधानी बनाया एवं इसका विकास किया।
- महीपाल के समय अन्तिम चरण में पुन: राष्ट्रकूट शासक इन्द्र तृतीय ने पुन: कन्नौज पर आक्रमण किया और महीपाल को कन्नौज छोड़ना पड़ा, परन्तु अन्तत: महीपाल ने पुन: कन्नौज पर अपना अधिकार स्थापित किया।

287. प्राचीनकाल में भारत में गणित तथा ज्योतिष विज्ञान के विकास को उल्लेखित कीजिए।

उत्तर प्राचीनकाल में गणित का विकास —

- शुल्व सूत्र गणितीय ज्ञान का प्राचीनतम ग्रन्थ।
- बोधायन द्वारा 'पाइथागोरस प्रमेय' का पूर्व प्रतिपादन।
- आर्यभट्ट द्वारा अंकगणित, ज्यामिति, बीजगणित तथा त्रिकोणमिति के सिद्धान्तों का प्रतिपादन।
- ब्रह्म गुप्त द्वारा वृत्तीय चतुर्भुजों, वर्गो, आयतों आदि की परिभाषा।
- महावीर द्वारा वृत्तों का क्षेत्रफल निकालने की विधि का प्रस्तुतिकरण।
- भास्कर द्वारा 'सिद्धान्त शिरोमणि' की रचना। इसके चार भाग लीलावती, बीजगणित, ग्रहगणित और गोला, चक्रवाल विधि और गुरूत्वाकर्षण के सिद्धान्त का प्रतिपादन।

प्राचीनकाल में ज्योतिष का विकास —

- प्रमुख ज्योतिषी आर्यभट्ट एवं वराहमिहिर।

- आर्यभट्ट द्वारा ग्रहण सम्बन्धी विचार, पृथ्वी की आकृति, अक्षीय परिभ्रमण सूर्य की स्थिरता, पृथ्वी की गतिशीलता, ग्रहों की गति का अधिचक्रीय सिद्धान्त, वर्ष की अवधि को ज्ञात किया।
- वराहमिहिर फलित ज्योतिष के प्रणेता, प्रसिद्ध ग्रन्थ 'पंच सिद्धान्तिका'
- 'ब्रह्मगुप्त' के ज्योतिष सिद्धान्तों का प्रतिपादन 'ब्रह्मस्फुट सिद्धान्त' और 'खण्ड खाद्यक' के माध्यम से

288. भारत में सामन्तवाद के उदय के कारण एवं इसके प्रभावों का उल्लेख कीजिए।

उत्तर कारण —

- ब्राह्म आक्रमणों के फलस्वरूप उत्पन्न राजनैतिक अस्थिरता एवं अव्यवस्था
- प्राचीन भारतीय धर्म विजय की अवधारणा
- कृषक आधारित अर्थव्यवस्था का उदय
- भूमि—अनुदान

प्रभाव —

- क्षेत्रीय राज्यों का उदय
- समाज का द्विभागीकरण
- क्षेत्रीय भावना का तीव्रता से विकास

289. 750-1200 ई. के मध्य भारत की सामाजिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- चतुर्वर्ण व्यवस्था —
  - ब्राह्मण
  - क्षत्रिय
  - वैश्य
  - शुद्र
- दास एवं वर्ण संकर जातियों का उल्लेख
- छुआछूत, जाति व्यवस्था की कठोरता
- स्त्रियों की स्वतन्त्रता पर प्रतिबन्ध, बाल विवाह, बहु विवाह, सती और जौहर प्रथा का प्र. चलन

प्रयासKSG
An Institute for MPPSC Examination

290. 750-1200 ई. के मध्य भारत की अर्थव्यवस्था पर प्रकाश डालिए।

उत्तर अर्थव्यवस्था

- कृषि आधारित अर्थव्यवस्था
- सामन्ती प्रथा का विकास
- कृषि पर अधिक दबाव, कृषि योग्य भूमि को बढ़ाने का प्रयास
- भूमिया और गिरसिया नामक कृषक वर्गो का उदय
- राज्य द्वारा सिंचाई का प्रबन्धन
- पशुपालन का विकास
- व्यापार—वाणिज्य, नगरों की समृद्धि एवं सिक्कों के प्रचलन पर प्रभाव
- व्यापारिक एवं शिल्पी श्रेणियों तथा संघों की स्थिति कमजोर
- दक्षिण भारत में भी कृषि आधारित अर्थव्यवस्था

291. दक्षिण भारत में चालुक्य शासकों की राजनैतिक स्थिति का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- दक्षिण भारत में चोल, चेर तथा पांड्य राज्यों के पतन के बाद छठीं शताब्दी में चालुक्यों का उदय हुआ।
- चालुक्यों की मूल शाखा वातापी या बादामी के शासकों ने छठीं से आंठवीं शताब्दी तक शासन किया इसके बाद वेंगी और कल्याणी के चालुक्यों ने शासन किया।
- चालुक्य शासक जयसिंह ने राष्ट्रकूटों और कदम्बों से संघर्ष कर अपने राज्य की स्थापना की। परन्तु पुलकेशिन प्रथम ने इस वंश की वास्तविक शक्ति को स्थापित किया तथा वा. तापी पर अधिकार किया।
- पुलकेशिन द्वितीय ने ही चालुक्यों की शक्ति का विस्तार किया जिसकी उपलब्धियां ऐहोल अभिलेख से प्राप्त होती है। पुलकेशिन द्वितीय ने हर्षवर्द्धन को भी पराजित किया था।
- वेंगी के पूर्वी चालुक्य वंश की स्थापना विष्णुवर्द्धन ने की थी। इस वंश के प्रमुख शासक विजयआदित्य प्रथम, विजयआदित्य द्वितीय एवं विजयआदित्य तृतीय थे।
- दसवीं शताब्दी के अंतिम चरण में तैलक द्वितीय ने कल्याणी के चालुक्य वंश की स्थापना की। तैलक प्रारम्भ में राष्ट्रकूटों के अधीन सामंत थे। सोमेश्वर चतुर्थ के समय यादवों का कल्याणी के राजवंश पर अधिकार हो गया।

292. दक्षिण भारत में चालुक्यों की प्रशासनिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- प्रशासन के दृष्टिकोण से चालुक्य शासकों ने राजतंत्रात्मक शासन व्यवस्था को अपनाया जिसके अंतर्गत संपूर्ण प्रशासन का केन्द्र बिन्दु शासक होता था जो अपनी शक्ति एवं शौर्य प्रदर्शन हेतु विभिन्न उपाधियों को धारण कर वैदिक यज्ञों का अनुष्ठान करता था।
- राजा का पद अनुवांशिक था। सामान्यत: बड़ा पुत्र ही उत्तराधिकारी बनता था।
- चालुक्य कालीन लेखों में किसी मंत्रीपरिषद का उल्लेख नहीं मिलता। संभवत: योग्यताअनुसार ही प्रशासनिक पद प्रदान किये जाते थे।
- कुछ प्रमुख केन्द्रीय अधिकारी महासंधिविग्रहिक, विषयपति, ग्रामकूट, महत्तराधिकारिन् थे।
- बड़े नगरों में 3 बड़ी सभाएं होती थी जिनमें प्रत्येक को महाजन कहा जाता था। इन नगर सभाओं में प्रबन्धन समितियां भी होती थी जो दैनिक प्रशासन का संचालन करती थी। तथा ग्राम शासन की सबसे छोटी ईकाई थी।

293. दक्षिण भारत में चालुक्य कालीन साहित्य के विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

- चालुक्य काल में साहित्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण प्रगति हुई। विभिन्न लेखों में विकसित संस्कृत भाषा का प्रयोग किया गया।
- महाकूट तथा ऐहोल के लेख क्रमश: अलंकृत गद्य एवं पद्य के विकसित होने के प्रमाण है।
- इसी समय गंगराज द्विर्वीनीत ने शब्दावतार नामक व्याकरण ग्रंथ की रचना की तथा किरातार्जुनीय के पंद्रवे सर्ग पर टीका लिखिए और गुणाढ्य की वृहद कथा का संस्कृत में अनुवाद किया।
- इनके अतिरिक्त उदयदेव का जैनेन्द्र व्याकरण, सोमदेव सूरि का यशस्तिलक चम्पू तथा नीति वाक्यामृत की रचना इस काल महत्वपूर्ण देन है।

294. चालुक्य कालीन कला और स्थापत्य के विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- चालुक्य शासन में कला और स्थापत्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति हुई।
- इस समय जैनों तथा बौद्धों के अनुकरण पर हिन्दू देवताओं के लिए पर्वत—गुफाओं को काटकर मंदिर निर्मित किये गए।
- इस युग के स्थापत्य उदाहरण बादामी, ऐहोल तथा पट्टकल से प्राप्त होते हैं।
- वास्तुकला के अतिरिक्त मूर्तिकला का भी विकास हुआ। मूर्तिकला पर गुप्त तथा पल्लव शैली का प्रभाव दिखाई देता है।
- अधिकांश मूतियों का निर्माण मन्दिरों को अलंकृत करने के लिए किया गया है। इनमें नटराज शिव की मूर्तियाँ महिषमर्दिनी, अर्धनारीश्वर, हरिहर, गजलक्ष्मी एवं काल्पनिक पशुओं की मूर्तियाँ प्रमुख हैं।
- अजन्ता, एलोरा एवं बादामी गुहा मण्डषों में चालुक्ययुगीन चित्रांकन भी उल्लेखनीय है।

295. दक्षिण भारत में राष्ट्रकूट शासकों की शासन प्रबन्धन पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर

- राष्ट्रकूट काल में राजा शासन का वास्तविक प्रधान होता था। राज्य की समस्त शक्तियाँ राजा में ही निहित होती थी तथा वह राजवंश के व्यक्तियों, विभागीय मंत्रियों और पदाधिकारियों की सहायता से शासन संचालित करता था।
- साम्राज्य के अंतर्गत दो प्रकार की प्रशासनिक इकाइयाँ थी। केन्द्रीय स्तर पर राजा स्वंय शासन करता था तथा प्रान्तीय स्तर पर अधीनस्त सामंतों को शासन सौंपा जाता था।
- केन्द्रशासित क्षेत्र, राष्ट्र, विषय, भुक्ति और ग्रामों में बंटे हुए थे। इनके प्रधान क्रमशः राष्ट्रपति, विषयपति और भोगपति होते थे। इनका प्रमुख कार्य शान्ति व्यवस्था एवं राजस्व वसूली होता था।
- ग्रामपति, ग्रामसभाओं और उपसमितियों की सहायता से यह कार्य ग्रामों में करता था।

An Institute for UPPSC Examination

296. राष्ट्रकूट शासकों के अंतर्गत सामाजिक व्यवस्था/वर्ण व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- राष्ट्रकूट समाज वर्ण व्यवस्था के आधार पर 4 प्रमुख वर्णो में विभाजित था। राजंश के क्षत्रियों को ब्राह्मणों से उच्च माना जाता था।
- ब्राह्मण वर्ग विशेष सुविधा प्राप्त वर्ग था। यह मुख्यतः शेक्षणिक कार्यो से संबद्ध थे।
- वैश्यों की स्थिति में गिरावट आई, जबकि शुद्रो की स्थिति उन्नत हुई। अब शुद्र वर्ग कुछ धार्मिक कार्यो तथा सैन्य सेवाओं में सहयोग कर सकता था।
- अस्पृश्यता की भावना समाज में प्रचलित थी और बाल विवाह भी प्रचलित था, परन्तु सती प्रथा और विधवा विवाह का प्रचलन नहीं था लेकिन विधवाओं को संपत्ति संबंधी अधिकार प्राप्त थे।

297. राष्ट्रकूट काल की आर्थिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।

उत्तर

- राष्ट्रकूटों की आर्थिक व्यवस्था कृषि, उद्योग एवं व्यापार पर निर्भर थी। वस्त्र उद्योग विकसित अवस्था में था।
- निर्यात की प्रमुख वस्तुएं कीमती लकड़ी, वस्त्र, हीरे—जवाहरात आदि थे।
- शिल्पियों एवं व्यापारियों के संघ आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते थे।
- एशियाई देशों से व्यापारिक संबंध अत्यंत विकसित स्थिति में था। जिसमें अरब व्यापारियो का महत्वपूर्ण योगदान था।

298. राष्ट्रकूट काल में धर्म व साहित्य के विकास पर प्रकाश डालिये।

उत्तर

- राष्ट्रकूट राजाओं ने ब्राह्मण तथा जैन दोनों ही धर्मो को आश्रय प्रदान किया जो उनकी धार्मिक सहिष्णुता को दर्शाता है।
- अमोद्यवर्ष जैन धर्म का अनुयायी था उसके गुरू जैनआचार्य जिनसैन थे।
- इस काल में बौद्ध धर्म का प्रचार अपेक्षाकृत कम रहा।
- इस्लाम धर्म के प्रति भी इस काल में सहिष्णुतापूर्ण दृष्टिकोण रखा गया। राष्ट्रकूटों ने अरब व्यापारियों को मस्जिद बनाने तथा धर्म पालन करने की पूर्ण अनुमति प्रदान की थी।
- साहित्य की दृष्टि से इस काल में कन्नड़ और संस्कृत भाषा का विकास हुआ। अमोद्यवर्ष ने कन्नड़ भाषा में प्रसिद्ध ग्रन्थ कविराजमार्ग की रचना की। उसकी राजसभा में अरिपुराण के लेखक जिनसैन, गणितसार संग्रह के रचियता महावीराचार्य तथा अमोद्यवृत्ति के लेखक साकतायन निवास करते थे।

299. राष्ट्रकूट काल में कला और स्थापत्य के क्षेत्र में हुई प्रगति की समीक्षा कीजिए।

उत्तर

- राष्ट्रकूट कालीन स्थापत्य का विकास मुख्यत: एलोरा, एलिफेंटा, जागेश्वरी जैसे केन्द्रो पर हुआ। एलोरा के मंदिरों में कैलाश मंदिर प्रसिद्ध है। जिसका निर्माण कृष्ण प्रथम ने कराया था।
- एलोरा की कुछ गुफाएं जैन मत से संबंधित है इनमें इन्द्रसभा तथा जगन्नाथ सभा प्रमुख है।
- मूर्तिकला का विकास मुख्यत: गुप्त तथा चालुक्य शैली से प्रेरित था। एलोरा तथा ऐलिफेंटा में राष्ट्रकूट कालीन मूर्तियों के नमूने प्राप्त होते है जिनमें शिव, विष्णु, पार्वती, वराह, लक्ष्मी, दुर्गा आदि की मूर्तियाँ प्रमुख है।
- इस काल में चित्रकला का भी विकास हुआ, अपनी चित्रकारी के कारण कैलाश मंदिर को रंगमहल भी कहा जाता है। एलोरा के चित्र जैन तथा ब्राह्मण धर्मो से संबंधित है।
- कैलाश मंदिर में नटराज शिव का चित्र और इन्द्रसभा में पार्श्वनाथ तथा अन्य तीर्थकरों के चित्र दर्शनीय है। इन चित्रों में चटक गहरे रंगों का तथा रेखाओं का प्रयोग किया गया है।

300. राजपूतों के उद्भव संबंधी विभिन्न मतों की समीक्षा कीजिए।

उत्तर राजपूतों का उद्भव विभिन्न विद्वानों के मध्य वैचारिक गतिरोध का कारण रहा है। कुछ विद्वानों ने इन्हें विदेशी प्रमाणित करने का प्रयास किया तो कुछ इनकी उत्पत्ति अग्निकुण्ड से मानते है। उद्भव संबंधी विभिन्न मत इस प्रकार है —

विदेशी उत्पत्ति का मत

- कर्नल जेम्स टॉड — सीथियन जाति से — मुख्य आधार — रहन सहन, वेश—भूषा
  — मांसाहार
  — युद्धप्रणाली
  — यज्ञों का प्रचलन।
- विलियम क्रुक — ब्राह्मणों द्वारा शुद्धि संस्कार से भारतीय वर्ण व्यवस्था में विदेशी जातियों का प्रवेश।
- स्मिथ — शकों तथा हूणों से।
- भण्डारकर — अग्निकुल के चार राजपूत वंशों का उद्भव गुर्जर नामक विदेशी जाति से
  — गुर्जर प्रतिहार वंश खजर जाति की संतान।

भारतीय उत्पत्ति का मत

- गौरी शंकर, हीराचन्द्र ओझा तथा सी.वी. वैद्य — राजपूत विशुद्ध भारतीय क्षत्रियों की संत. ाने।
- दशरथ शर्मा, वी. एस. पाठक, वी. एन. पाठक — ब्रह्मक्षत्र परम्परा का उल्लेख।
- बी.डी. चट्टोपाध्याय — अनेक नवीन जातियों की संरचना, क्षत्रिय स्तर की प्राप्ति के लिये इच्छुक वंशों का उदय, सामाजिक संबंधों में स्थानीयत

3 अंकों के प्रश्नोत्तर

301. मत्तविलास प्रहसन

- यह संस्कृत भाषा का ग्रन्थ है जिसके रचनाकार पल्लव नरेश महेन्द्रवर्मन प्रथम थे।
- इसमें कापालिकों तथा बौद्धभिक्षुओं के संबंध में चर्चा की गयी है।

302. द्रविड शैली

- दक्षिण भारत में मंदिर स्थापत्य की शैली।
- इस शैली का आरंभ पल्लव काल में हुआ था परन्तु इस शैली का चरमोत्कर्ष चोल काल में देखने को मिलता है।

303. मत्तविलास प्रहसन

- यह संस्कृत भाषा का ग्रन्थ है जिसके रचनाकार पल्लव नरेश महेन्द्रवर्मन प्रथम थे।
- इसमें कापालिकों तथा बौद्धभिक्षुओं के संबंध में चर्चा की गयी है।

304. विमान — द्रविड़ शैली में निर्मित शिखरों को 'विमान' कहा गया है।

305. गोपुरम् — तोरण द्वार (प्रदेश द्वार) पर बनी अलंकृत एवं बहुमन्जिली रचनाओं को गोपुरम कहा गया है

5 अंकों के प्रश्नोत्तर

306. संगम साहित्य पर टिप्पणी करें ?

दक्षिण भारत में पांड्य वंश के राजाओं ने तीन गोष्ठियों का आयोजन किया जिसमे तमिल कवियों एवं विभिन्न विद्वानों के मध्य विभिन्न विषयों पर विचार विमर्श किया जाता था I इन गोष्ठियों को ही 'संगम' तथा इसमें लिखे गए साहित्य को 'संगम साहित्य'कहा जाता है I

काल 100 से 250 ई.

	स्थान	अध्यक्ष	विशिष्टता
प्रथम संगम	मदुरै	अगस्त ऋषि	
द्वितीय संगम	कपाटपुरम (अलव)	अगस्त ऋषि	तोल्कप्पियम
तृतीय संगम	मदुरै	नक्कीरर	

सबसे महत्वपूर्ण ग्रन्थ –

- तोल्कप्पियम (तमिल व्याकरण)
- रचनाकार – तोल्कप्पियर (अगस्त मुनि के शिष्य)

अन्य ग्रन्थ –

- कुराल – तिरुवल्लूर द्वारा रचित
- शीलपादिकारम – इलांगोआदिगल द्वारा

- मणिमेखले- सीतलेसत्तनार द्वारा
- जीवक चिंतामणि – तिरुक्तदेवर द्वारा

307. संगम काल की सामजिक व्यवस्था का वर्णन करें ?

सामजिक स्थिति –

- वर्ण व्यवस्था का स्पष्ट विभाजन नहीं ।
- ब्राह्मणों को सम्मानजनक स्थिति प्राप्त ।
- ब्राह्मणों के अतिरिक्त 4 अन्य वर्गों की जानकारी –
- जाति प्रथा व अश्पृश्यता के साक्ष्य प्राप्त नहीं थे ।
- स्त्रियों की स्थिति – समाज पितृसत्तात्मक था ।
- स्त्रियों को संपत्ति में अधिकार प्राप्त नही था ।
- विधवाओं की दयनीय स्थिति ।
- सती प्रथा व वैश्यावृत्ति का प्रचलन ।
- उच्च कुल की स्त्रियों को शिक्षा ।
- विवाह एक संस्कार के रूप में ।
- दासों की स्थिति – दास प्रथा प्रचलन में नहीं ।
- शिक्षा – सभी वर्गों में शिक्षा का प्रचलन ।
- मंदिर – शिक्षा के केंद्र, गुरु दक्षिणा देने की प्रथा ।
- साहित्य, विज्ञान, ज्योतिष, गणित, व्याकरण की शिक्षा ।

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

308. संगम काल की धार्मिक व्यवस्था का वर्णन करें ?

धार्मिक स्थिति –

- वैदिक एवं ब्राह्मण धर्म का समाज में प्रचार ।
- इसमें अगस्त ऋषि की प्रमुख भूमिका रही ।
- यज्ञों एवं कर्मकांडो का प्रचलन दक्षिण भारत में आरम्भ ।
- बौद्ध एवं जैन धर्म का भी प्रचलन ।
- प्रमुख देवता – विष्णु, शिव, श्रीकृष्ण, बलराम, इन्द्र,
- मुरुगन- दक्षिण भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय देवता ।
- वीर पूजा
- सती पूजा (कन्नगी पूजा)
- पूजापाठ के लिए मंदिरों का निर्माण
- मंदिरों के अतिरिक्त वृक्षों के नीचे धार्मिक आयोजन

309. चोलकालीन अर्थव्यवस्था पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर अर्थव्यवस्था —

- कृषिकर्म और व्यापार वाणिज्य पर आधारित
- भूमि का वर्गीकरण —
  - उर्वरा
  - बंजर
  - परती
  - रेतीली
  - काली
  - पीली
- भूमि के आधार पर करों का निर्धारण
- सिंचाई सुविधा राज्य द्वारा
- शिल्प तथा उद्योगों का विकास, प्रमुख उद्योग वस्त्रोद्योग
- आन्तरिक एवं बाह्य व्यापार श्रेणियों द्वारा
- व्यापारियों के स्थानीय संगठन नगरम्
- चीन, दक्षिण–पूर्व एशिया तथा फारस के साथ व्यापार का विकास
- निर्यात की वस्तुएँ—गरम मसाला, काली मिर्च, चन्दन, कपूर, मोती, जायफल, कस्तूरी, हाथीदाँत, रेशमी वस्त्र
- आयात की वस्तुएँ — घोड़े, तांबा, शीशा, लोहा, सोना, चांदी

310. चोलकालीन सामाजिक व्यवस्था का वर्णन कीजिए।

उत्तर सामाजिक व्यवस्था —

- ब्राह्मणों का सर्वोच्च स्थान —
  - ग्राम दान (अग्रहार ग्राम)
  - कर मुक्त
- क्षत्रिय ब्राह्मणों के समान उच्च स्थान प्राप्त
- जन्म आधारित जाति प्रथा, जाति तथा व्यवसाय के सम्बन्ध परिवर्तनशील
- कृषि मजदूरों की अवस्था शूद्रों के समान
- स्त्रियों की दशा उत्तर भारत की तुलना में श्रेष्ठ
- बाल विवाह का प्रचलन, सती प्रथा एवं पर्दा प्रथा अपेक्षाकृत गौण
- स्त्रियों को धन सम्बन्धी अधिकार प्राप्त
- सामन्ती विकास के फलस्वरूप ग्रामीण आत्मनिर्भरता एवं बंद अर्थव्यवस्था का उदय

प्रयासKSG An Institute for MPPSC Examination

311. पल्लव कालीन राजनैतिक स्थिति पर प्रकाश डालिये।

उत्तर

- दक्षिण भारत में पल्लव सातवाहनों के अधीनस्थ शासक थे।
- पल्लवों का प्रथम मुख्य शासक सहविष्णु था जिसने चोल, पांड्य, मलय, सिंहल के राजाओं को युद्ध में पराजित कर अपनी शक्ति का विस्तार किया।
- महेन्द्र प्रथम प्रथम के समय पल्लव–चालुक्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ। जिसका उद्देश्य दक्षिणापथ पर अधिकार करना था।
- नरसिंहवर्मन प्रथम ने चालुक्यों को पराजित कर वातापीकोण्ड की उपाधि धारण की तथा चोल, पाण्ड्य और चेल शासकों को पराजित किया।
- परमेश्वर वर्मन प्रथम के समय पुनः पल्लव–चालुक्य संघर्ष प्रारम्भ हुआ।

- अंतत: संघर्षो के परिणामस्वरूप चोल नरेश आदित्य प्रथम ने ८९७ ई० में अपराजित वर्मन को पराजित कर पल्लव राज्य पर अधिकार कर लिया। और इस प्रकार पल्लवों की राजनैतिक सत्ता समाप्त हुई।

312. पल्लव कालीन प्रशासनिक संगठन का वर्णन कीजिए।

उत्तर

- पल्लवों ने दक्षिण भारत में एक मजबूत प्रशासनिक व्यवस्था प्रारम्भ की।
- पल्लवों की राजतंत्रात्मक व्यवस्था में राजा सर्वोच्च प्रदाधिकारी होता था। राजा का पद वंशानुगत था तथा उत्तराधिकार के नियम निश्चित थे।
- पल्लवों ने राज्य में शांति स्थापित करने और बाहरी आक्रमणों से प्रदेश की रक्षा करने को महत्व दिया।
- शासक मंत्रीपरिषद की सहायता से शासन करता था। इसके प्रधान सदस्य युवराज, अमात्य, महासेनापति, महादण्डनायक आदि थे।
- साम्राज्य का विभाजन विभिन्न मण्डल, कोट्टम, नाडु एवं ग्रामों में किया गया था।
- मण्डल का प्रधान माण्डलिक तथा कोट्टम का प्रधान अधिकारी देशातिक होता था।
- गाँवों एवं नगरों में स्वायत्ता प्राप्त नगरम् एवं उर नामक संस्थाएँ थी तथा नगर प्रशासन में व्यापारी एवं कारीगर प्रमुख भूमिका निभाते थे।

313. पल्लव कालीन सामाजिक एवं धार्मिक व्यवस्था पर प्रकाश डालिये।

उत्तर

- पल्लव काल में समाज वर्ण एवं जाति व्यवस्था पर आधारित था। प्रत्येक वर्ण एवं जाति के अलग—अलग नियम निर्धारित थे तथा पुरूष प्रधान समाज में संयुक्त परिवार की प्रथा थी।
- अंतरजातीय विवाहों पर प्रतिबंध था। विधवा विवाह एवं पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था।
- ब्राह्मणों एवं विद्वानों को राज्य की ओर से विशेष सुविधाएं प्राप्त थी तथा पल्लव काल में शासक धार्मिक सहिष्णु हुआ करते थे।
- सभी धर्मो को स्वतंत्रता प्राप्त थी, बौद्ध एवं जैन धर्म उन्नत अवस्था में थे।
- पल्लव शासक ब्राह्मण धर्म के अनुयायी थे फिर भी वे धार्मिक सहिष्णु थे। पल्लवों के अधीन शैव सन्त (नयनार) एवं वैष्णव संत (अलवार) एवं शंकराचार्य के प्रभाव से वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई।
- अंतत: ब्राह्मण धर्म के प्रभावस्वरूप मूर्तिकला एवं मंदिर निर्माण कला का विकास हुआ।

314. पल्लव काल में स्थापत्य कला के क्षेत्र में हुये विकास पर प्रकाश डालिए।

उत्तर

- स्थापत्य कला के क्षेत्र में पल्लव शासकों ने प्राचीनकला से भिन्न एक नवीन द्रविड़ शैली को विकसित किया।
- मंदिर स्थापत्य कला शैली का विकास इनके संरक्षक शासकों के नाम पर क्रमश: महेन्द्र वर्मन शैली, मामल्य शैली, राजसिह शैली एवं नंदीवर्मन शैली के अंतर्गत हुआ।
- महेन्द्र वर्मन शैली पल्लव वास्तु कला का आरम्भिक चरण था। इस शैली के मंदिरों में स्तम्भ युक्त कक्ष एवं मंडपों का निर्माण किया गया। जो बौद्ध चैत्यों से प्रभावित थे।
- मामल्य शैली का प्रमुख केन्द्र मामल्य पुरम या महाबलीपुरम था। इस शैली की प्रमुख विशेषता मण्डप एवं रथमंदिरों का निर्माण था।
- राजसिह शैली के मंदिरों का निर्माण प्रस्तर खण्डों को जोड़कर किया गया जो चारदीवारी से घिरे रहते थे। इन मंदिरों में शिखर एवं गौपुरम के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया गया। इस शैली के प्रमुख उदाहरण महाबलीपुरम का तटीय मंदिर तथा कांची के कैलाशनाथ मंदिर है।

- नंदीवर्मन शैली के मंदिर अपेक्षाकृत छोटे और प्रभावहीन है इनके निर्माण में स्तम्भ शीर्षो के विकास के अलावा अन्य कोई नवीन प्रभाव नहीं है। कांची का मुक्तेश्वर मंदिर इसका उदाहरण है।

315. चोलकालीन स्थानीय स्वशासन वर्तमान पंचायती व्यवस्था का सूत्रधार था। इस कथन के संदर्भ में चोलकालीन स्थानीय प्रशासन का वर्णन कीजिए।

उत्तर.

- चोलकालीन स्थानीय स्वशासन की विशेषता यह थी कि गाँव, नगर, जिला, प्रान्त आदि सभी शासन ईकाइयों के प्रबन्ध के लिये सार्वजनिक समितियां हुआ करती थी जो शासन व्यवस्था का संचालन करती थी।
- चोलकालीन मंडलों की समितियों के विस्तृत कार्य थे। वे अकाल आदि पड़ने पर लगान की छूट का निर्णय करती थी।
- नाडुओं की समितियाँ नाट्टर कहलाती थी, व्यापारियों की अलग समितियां होती थी जिन्हें नागरत्तार कहते थे। इसी प्रकार गाँव के लिए समितियां होती थी जिनका नाम उर था। ब्राह्मण गांवों की समितियों को महासभा कहा जाता था जिनका विशेष मान था।
- सभा के कार्यो में राज्य की ओर से कोई हस्तक्षेप नहीं किया जाता था। साधारण झगड़ों का फैसला करने तथा अपराधियों को दंड देने का भी सभा को अधिकार था।
- शिक्षा, न्याय, करवसूली आदि विभिन्न कार्यो के लिये अलग—अलग समितियां होती थी। इन समितियों के चुनाव के स्पष्ट नियम थे। चुनाव प्रतिवर्ष होता था और प्रतिवर्ष नये व्यक्ति चुने जाते थे।

316. चोलकालीन स्थापत्य कला पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर.

- चोलशासकों के काल में दक्षिण भारत में स्थापत्य कला अपने शिखर पर थी। चोलकाल में मंदिर स्थापत्य की एक नई शैली का विकास हुआ जिसे द्रविड़ शैली कहा गया।
- इस शैली के मंदिरों की विशेषता थी कि गर्भग्रह अर्थात प्रतिमाकक्षा के ऊपर एक के बाद एक पाँच से सात मंजिलों तक का निर्माण होता था। हर मंजिल एक विशेष शैली में निर्मित होती थी, जिसे विमान कहते थे।
- प्रतिमा कक्षा के सामने खंबों वाला और सपाट छत का एक विशाल हॉल होता था जिसे मण्डप कहा जाता था। मण्डप तथा प्रतिमा कक्ष एक ऊँची दीवारों वाले बहुत बड़े प्रांगड़ से घिरा रहता था जिसमें प्रवेश के लिए बड़े—बड़े द्वार हाते थे जो गौपुरम कहलाते थे।
- तंजौर का ब्रह्मदीश्वर मंदिर, ऐरावतेश्वर मंदिर, त्रिभुवनेश्वर मंदिर आदि चोलकालीन स्थापत्य कला के उत्कृष्ट नमूने है।

317. चोलकालीन मूर्तिकला पर टिप्पणी लिखिए।

उत्तर.

- चोलकाल में ब्रह्मा, विष्णु, लक्ष्मी, कृष्ण, शिव या नटराज तथा देवी—देवताओं आदि की मूतियाँ बनाई जाती थी। इन मूर्तियों में आर्कषण लालित्य तथा सन्तुलन पाया जाता था।
- इनमें नटराज की कांस्य मूर्तियां सर्वश्रेष्ठ है, कांस्य मूर्ति निर्माण की एक महत्वपूर्ण शैली लंका में विद्यमान थी और उसमें दक्षिण भारत की शैली के समान कृतियों की रचना हुई।
- चोलकालीन कलाकार शिव को नटराज के रूप में चित्रित करने में अधिक प्रसन्नता प्रकट करते थे। इस कारण चोलकाल में नटराज की अनेक मूर्तियों का विभिन्न शैलियों में विकास किया गया।